शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग–3 हिंदी

सत्र–5 : पेपर 10

सत्र–6 : पेपर 15

प्रयोजनमूलक हिंदी

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पुनर्रचित पाठ्यक्रम

(शैक्षिक वर्ष 2024-25 से)

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2025
बी. ए. भाग 3 (हिंदी : बीजपत्र-10 और 15)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ :

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-48427-52-6

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी- शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

प्रो. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धवडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा

- **डॉ. मनीषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, जि. सातारा.

- **प्रो. डॉ. श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. डॉ. अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा

- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३

- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली

- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग–3 के हिंदी विषय के छात्रों के लिए अध्ययन सामग्री का निर्माण करना एक आनंद की अनुभूति है। दूरशिक्षा के छात्रों को महाविद्यालय जाने का अवसर नहीं मिल पाता अतः उनके अध्ययन में कोई बाधा न हो इस उद्देश से शिवाजी विश्वविद्यालय ने इस योजना की शुरुआत की है।

दूरशिक्षा के छात्रों कों पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरूप, अंकवितरण आदि उपलब्ध हो वह भी शिक्षा के इस मुख्य प्रवाह में आए इस हेतु से इस स्वयं अध्ययन सामग्री का लेखन किया गया है।

इकाई लेखकों ने अपनी–अपनी इकाई का समग्र लेखन कर विविध प्रश्न और उन के उत्तरों को भी इसमें जोड दिया गया हैं। मुझे विश्वास है कि यह सामग्री छात्रों के लिए लाभप्रद साबित होंगी।

शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, दूरशिक्षा विभाग के संचालक, हिंदी अध्ययन मंडल के सभी सदस्य तथा इकाई लेखकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

धन्यवाद !

– संपादक

इकाई लेखक

लेखकाचे नाव	घटक क्रमांक	
	सत्र 5	सत्र 6
★ **डॉ. संग्राम शिंदे** आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्‌यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा	**1**	**-**
★ **डॉ. नरसिंग एकिले** शिवराज कॉलेज ऑफ आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स, गडहिंग्लज, ता. गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर	**2**	**-**
★ **डॉ. विकास पाटील** आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा, ता. वाळवा, जि. सांगली	**3**	**-**
★ **डॉ. आर. पी. भोसले** कला, वाणिज्य व शास्त्र महाविद्‌यालय, पुसेगाव, ता. खटाव, जि. सातारा	**4**	**-**
★ **डॉ. गोरखनाथ किर्दत** यशवंतराव चव्हाण महाविद्‌यालय, उरुण इस्लामपुर, ता. वाळवा, जि. सातारा	**-**	**1, 3**
★ **डॉ. मच्छिंद्र कुंभार** मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्‌यालय, कडेगाव, ता. कडेगाव, जि. सांगली	**-**	**2**
★ **डॉ. सिद्राम खोत** प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्‌यालय, मलकापुर ता. शाहूवाडी, जि. कोल्हापुर	**-**	**4**

■ सम्पादक ■

डॉ. संग्राम शिंदे
आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्‌यालय, मेढा,
ता. जावळी, जि. सातारा

डॉ. गोरखनाथ किर्दत
यशवंतराव चव्हाण महाविद्‌यालय, उरुण इस्लामपूर,
ता. वाळवा, जि. सांगली

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	सत्र-5	
1.	पारिभाषिक शब्दावली अ) दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रुप ब) जनसंचार माध्यम संबंधी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रुप	1
2.	अ) प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा ब) प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियाँ	10
3.	हिंदी भाषा और रोजगार के अवसर	28
4.	समाचार लेखन	65
	सत्र-6	
1.	पारिभाषिक वाक्यांश, एवं संक्षेपण।	97
2.	माध्यम लेखन	103
3.	संभाषण कला	119
4.	अनुवाद	134

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपतरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई –1 पारिभाषिक शब्दावली
अ) दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रुप
ब) जनसंचार माध्यम संबंधी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रुप

अनुक्रम –

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

- 1.3.1 पारिभाषिक शब्दावली : सामान्य परिचय
  - 1.3.1.1 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ एवं परिभाषाएँ
  - 1.3.1.2 पारिभाषिक शब्दावली : उपयुक्तता
  - 1.3.1.3 पारिभाषिक शब्दावली सामान्य विशेषताएँ
- 1.3.2 पारिभाषिक शब्दावली
  - 1.3.2.1 दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द
  - 1.3.2.2 जनसंचार माध्यम संबंधी शब्द

1.4 सारांश

1.5 स्वाध्याय

1.6 क्षेत्रीय कार्य

1.7 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप से परिचित होंगे।
- पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व एवं प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
- दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रूपों को जान सकेंगे।
- जनसंचार माध्यम संबंधी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रूपों से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना :

जो शब्द किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है वह पारिभाषिक शब्द होता है। किसी भी विषय की पारिभाषिक शब्दावली का बड़ा ही महत्व होता है। प्रशासन ज्ञान विज्ञान की विभिन्न शाखाओं - उपशाखों की अपनी - अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। जिसे पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं। शास्त्र, विशिष्ट विषय अथवा सिद्धांत के संप्रेषण के लिए सामान्य शब्दों के स्थान पर विशिष्ट शब्दावली की आवश्यकता होती है। यही शब्दावली पारिभाषिक शब्दावली कहलाती है। कुछ विद्वान इसे तकनीकी शब्दावली कहते हैं।

सहज भाषा तथा दैनिक व्यवहार में आनेवाले अंग्रेजी शब्दो कि तुलना में किसी वैज्ञानिक, तकनीकी या आर्थिक विषय के वर्णन में यह विशेषता होती है कि उसमें संज्ञाओं (नाम) की भरमार होती हैं। किसी विशिष्ट विषय को समझने - समझाने का काम पारिभाषिक शब्दावली के बिना असंभव है। पारिभाषिक शब्दावली के दो फायदे होते हैं - पहला यह की किसी विचार या कान्सेप्ट को समझने-समझाने के लिए नए शब्द के प्रयोग से विचारों को पंख लग जाते हैं। दूसरा यह की शब्द की परिभाषा करने से वह अस्पष्टता समाप्त हो जाती है, जो कि उसे शब्द सामान्य अर्थों में प्रयोग में आती है। इस प्रकार विचार - विनिमय में आसानी होती है और विचार- विनिमय दक्षता पूर्वक हो जाता है।

स्वाधीन भारत के संविधान के अनुसार केंद्र सरकार के कामकाज के लिए देवनागरी में लिखित हिंदी को 26 जनवरी 1950 को भारत की राजभाषा घोषित किया गया। भारत के राजभाषा हिंदी घोषित हो जाने पर संविधान के अनुच्छेद 344 (1) एक के अंतर्गत 1995 में गठित राजभाषा आयोग की सिफारिश पर निर्मित संसदीय समिति की रिपोर्ट पर 1960 में राष्ट्रपति के आदेशानुसार हिंदी की वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली निर्माण के लिए 1961 में स्वतंत्र आयोग का गठन होने पर हिंदी पारिवारिक शब्दावली के क्षेत्र में गतिशीलता आई। राजभाषा का उत्तरदायित्व ग्रहण करते ही हिंदी भाषा साहित्य से अन्य क्षेत्रों में, न्याय, विज्ञान, वाणिज्य, प्रशासन, जनसंचार, विज्ञापन, अनुवाद एवं रोजगार की भाषा बन गई। स्वतंत्रता से पूर्व अंग्रेजी शासन काल से शासकीय कार्य अंग्रेजी भाषा में संपन्न किए जाते थे। स्पष्ट है आज भी जनमानस में अंग्रेजी का गहरा प्रभाव छाया हुआ दिखाई देता है। साथ ही ज्ञान-विज्ञान, तंत्रज्ञान एवं प्रशासन के विभिन्न शाखाओं पर अंग्रेजी भाषा का ही प्रभुत्व है। ऐसी स्थिति में कार्यालयीन, कामकाजी और व्यावहारिक भाषा के रूप में हिंदी को ढाला गया और उसके प्रयोजनीय पक्ष को बढ़ावा मिला। न्याय, जनसंचार, पत्रकारिता, मीडिया, विज्ञान और विज्ञापन की आवश्यकता को पूरा करने हेतु पारिभाषिक शब्दावली का विकास हुआ और हो रहा है। दैनंदिन व्यवहार में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली के विकास के कारण हिंदी समृद्ध होती जा रही है। अतः हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली प्रयोजनमूलक हिंदी का महत्वपूर्ण अंग है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया समेट कर नजदीक आ गई है। ज्ञान विज्ञान एवं तंत्रज्ञान के विभिन्न आविष्कारों ने विकास की गति को वृद्धिगत किया और दुनिया का चेहरा मोहरा भी बदल दिया है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए विकसित संचार माध्यमों ने क्रांति ला दी है। आज देश के विकास में

संचार के मुद्रित एवं इलेक्ट्रॉनिक दोनों प्रकार के माध्यमों का अनन्य साधारण महत्व बना हुआ है। अतः इन विभिन्न संचार-माध्यमों संबंधी के ज्ञान एवं व्यवहार हेतु इस क्षेत्र से जुड़ी पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। साथ ही पूरे मानव जाति की उन्नति में शिक्षा का महत्व अक्षुण्ण है। दिन-ब-दिन शिक्षा की अहमियत बढ़ती जा रही है। शिक्षा के विकास के साथ-साथ सभा एवं सम्मेलनों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है और विचार विमर्श को बढ़ोतरी मिल रही है। ज्ञान तथा नैतिक मूल्यों के उन्नयन हेतु, विचारों एवं भावों के आदान - प्रदान हेतु इनका योगदान मिल रहा है। अतः तत्संबंधी पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान होना जरूरी है इस दृष्टि से संचार माध्यम तथा शिक्षा सभा एवं सम्मेलन में संबंधित अंग्रेजी एवं हिंदी पारिभाषिक शब्दावली का विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

1.3 विषय विवेचन :

1.3.1 पारिभाषिक शब्दावली : सामान्य परिचय :

1.3.1.1 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ एवं परिभाषाएँ

अर्थ –

पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी के 'टेकनिकल' शब्द का ही अनुवाद है। ग्रीक भाषा में 'टेक्निक्स' शब्द से अंग्रेजी का 'टेक्निकल' शब्द उत्पन्न हुआ है। फादर कामिल बुल्के ने 'एन इंग्लिश - हिंदी डिक्शनरी' में इसके अर्थ के बारे में लिखा है of a particular art science craft or about art अर्थात विशेष कला विज्ञान शिल्प अथवा कला के बारे में इसका प्रयोग स्केल के अर्थ में किया जाता है। इस तरह कहा जा सकता है की ''पारिभाषिक'' शब्द वह शब्द है जो किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है।

परिभाषाएँ –

डॉ रघुवीर - ''पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हो। जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है वह पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं।''

डॉ भोलानाथ तिवारी - ''पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति, विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते हैं, तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से परिभाषित होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निशित रूप से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं।''

1.3.2.1 दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त शब्द

परिशिष्ट (अ)

पारभाषिक शब्दावली

	दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द	**हिंदी पर्यायवाची रूप**
1	Abstract	सार संक्षेप
2	Agenda	कार्यसूची
3	Cabinet	मंत्रिमंडळ
4	Daily Diary	दैनंदिनी
5	Eco-friendly	पर्यावरण-अनुकूल
6	Face Value	अंकित मूल्य
7	Gender	लिंग
8	Hall-Mark	विशषता, प्रमाण चिह्न
9	Ideal	आदर्श
10	Jobless	बेरोजगार
11	Keeper	रक्षक
12	Land ford	भू-स्वामी, मकान मालिक
13	Maintenance	अनुरक्षण, रखरखाव
14	Nominate	नामित करना
15	Oath	शपथ
16	Pact	समझौता
17	Qualify	अर्हतधारक
18	Radiology	विकिसा विज्ञान
19	Safe and Secure	सुरक्षित और संरक्षित
20	Tubulisation	तालिका बनाना
21	Ultimate	चरम, सर्वोच्य, अंतिम
22	Vague	धुंधला, अस्पष्ट
23	Wage Board	वेतन बोर्ड
24	Xerox Copy	छायाप्रति
25	Yardstick	मानदंड, मापदंड

1.3.2.2 जनसंचार माध्यम संबंधी शब्द परिशिष्ट (ब)

	जनसंचार माध्यम संबंधी शब्द	हिंदी पर्यायवाची रूप
1	Abstract Bulletin	संक्षिप्त समाचार
2	Advertisement	विज्ञापन
3	Announcer	निवेदक
4	Artistic	कलात्मक
5	Audio-Visual	दृक श्राव्य
6	Audience	श्रोता
7	Biographer	जीवनीकार
8	Bulletin	विज्ञप्ति
9	Blank Paper	अमुद्रित पृष्ठ
10	Caption	शीर्षक
11	Cartoon	व्यंग्यचित्र
12	Choreography	नृत्य रचना
13	Commentator	समालोचक
14	Communication	संचार
15	Composing	अक्षरयोजन
16	Creation	सृजन
17	Director	निदेशक
18	Information Technology	सूचना तंत्रज्ञान
19	Interview	साक्षात्कार
20	Journalist	पत्रकार
21	Journal	पत्रिका
22	Source Language	स्रोत भाषा
23	Stenographer	आशुलिपिक
24	Translation	अनुवाद
25	Weekly	साप्ताहिक

1.3.1.2 पारिभाषिक शब्दावली : उपयुक्तता

हिंदी के संदर्भ में विशेष रूप से उसके राजभाषा बनने के बाद पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता एवं अनिवार्यता और अधिक बढ़ गई। औद्योगिक क्षेत्र की अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दावली के स्थान पर राष्ट्रीय स्वाभिमान भारतीय अस्मिता की प्रतिष्ठा तथा मानसिक गुलामी से मुक्ति के लिए एवं ज्ञान विज्ञान के विभिन्न अनुशासन के अध्ययन-अध्यापन के लिए उनकी पारिभाषिक शब्दावली का हिंदी में होना आवश्यक हो गया। अतः ज्ञान-विज्ञान, प्रशासन, वाणिज्य एवं जनसंचार के क्षेत्र में इस दृष्टि से प्रयास किए गए और हिंदी पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हुआ। स्वतंत्र देश की अपनी निजी राजभाषा में पारिभाषिक शब्दों का महत्व और उपयोगिता और अधिक हो जाती है, क्योंकि शासन संबंधी सभी कार्य उसकी अपनी भाषा में होते हैं इस दृष्टि से हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का महत्व बहुत अधिक है। आज हिंदी की प्रयोजनीयता में यह पारिभाषिक शब्दावली अहम् भूमिका निभा रही है। आज हिंदी पारिभाषिक शब्दावली को अत्याधुनिक बनाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं और इस दृष्टि से और अधिक प्रयास आवश्यक भी है तभी हिंदी की समृद्धि में वृद्धि होगी।

1.3.1.2 पारिभाषिक शब्दावली : सामान्य विशेषताएँ

विभिन्न विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दावली की अपेक्षित विशेषताओं पर विचार-विमर्श किया है। यूनेस्को की ओर से प्रोफेसर आगस्टीनो सेवोरिन ने अपने ग्रंथ में पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा डॉ. सत्यव्रत आदि ने भी पारिभाषिक शब्दावली की सामान्य विशेषताओं की चर्चा की है। विभिन्न ग्रंथों के अध्ययन के पश्चात पारिभाषिक शब्दावली की निम्नलिखित अपेक्षित सामान्य विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती हैं –

- 'पारिभाषिक' शब्द का अर्थ सुनिश्चित सुबोध तथा स्पष्ट होना चाहिए। उसे अर्थ संकोच अथवा अर्थ विस्तार के दोष से मुक्त होना चाहिए। पारिभाषिक शब्द को अपनी अर्थपरिधि से अधिक या कम अर्थ को अभिव्यक्त नहीं करना चाहिए।
- 'पारिभाषिक' शब्द उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा सुबोध होने चाहिए।
- किसी एक संकल्पना के लिए एक ही पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- हर शब्द को स्वतंत्र अस्तित्व होना चाहिए ताकि उसे पढ़कर या सुनकर किसी अन्य पारिभाषिक शब्द का भ्रम पाठक या श्रोता को न हो।
- 'पारिभाषिक' शब्द अंताक्षरी या छोटा होना चाहिए। जैसे 'हंगर स्ट्राइक' के लिए 'भूख हड़ताल' के बदले 'अनशन' शब्द ज्यादा अच्छा है।
- सरलता और बोधगम्यता के लिए समान श्रेणी के पारिभाषिक शब्दों में एकरुपता होनी चाहिए। साथ ही साथ असमान संकल्पनाओं अथवा चीजों के लिए मिलते-जुलते शब्द-प्रयोग को टालना चाहिए। इसके विपरीत संबंद्ध संकल्पनाओं और चीजों के लिए एक श्रेणी के संबंद्ध शब्द होने चाहिए।

- पारिभाषिक शब्द यथासंभव एक ही मूल शब्द से निर्मित होने चाहिए।
- पारिभाषिक शब्द के नियत अर्थ में उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य उपयुक्त शब्द जोड़कर जहाँ तक हो सके अन्य शब्द बनाने की गुंजाइश रहनी चाहिए।
- यदि विभिन्न भाषाओं के लिए एक ही पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया जाता हो, तो उस शब्द को उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट होना चाहिए।
- पारिभाषिक शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुसार व्याख्या देकार समझाया जाता है। जैसे-अंतरीक्ष (स्पेस), ताप-मापी (थर्मा-मीटर) आदि।
- पारिभाषिक शब्द असामान्य होते हैं, क्योंकि वे सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होते। जैसे चित्र तुरंग न्याय, प्रतिभूति आदि।
- किसी एक क्षेत्र के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान अन्य कोई दूसरा शब्द नहीं ले सकता। जैसे विधि के क्षेत्र में प्रयुक्त ''अधिसूचना'', प्रशासन के क्षेत्र में प्रयुक्त ''इश्यू'' आदि।
- कुछ पारिभाषिक शब्द दो या अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में विशिष्ट (अलग-अलग) अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे सेक्युरिटी - सुरक्षा (सैन्य विज्ञान में) और प्रतिभूति / जमानत (बैंकिंग में) आदि।
- दो या अधिक संकल्पनाओं के बीच की सूक्ष्मता की सही अभिव्यक्ति प्रदान करना भी इसकी एक प्रमुख विशेषता है। जैसे हीट - ताप, टेंपरेचर - तापमान आदि।
- ज्ञान विज्ञान के नए-नए क्षेत्र का विकास तथा नवीन वस्तुओं का निर्माण होने के कारण उनकी अभिव्यक्ति तथा नवीन संकल्पनाओं को स्पष्ट करने हेतु उनके अनुरूप नए शब्दों का निर्माण आवश्यक हो जाता है। पारिभाषिक शब्दों से सरलतापूर्वक नए शब्दों का निर्माण भी किया जा सकता है। जैसे अंकन से परांकन, पृष्ठांकन, रेखांकन, सीमांकन आदि।

1.3.2 पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्दावली का संबंध प्रयोजनमूलक हिंदी से अनिवार्यता जुड़ा हुआ है। वस्तुतः प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर्गत अनिवार्य तत्व के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुन्न बनी हुई है। हमारे देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उदय एवं विकास के साथ इसकी सटीक तथा सार्थक अभिव्यक्ति हेतु हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप में इसकी तकनीकी शब्दावली की नितांत जरूरत महसूस की गई है। फलत: हिंदी में प्रशासन, विधि, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण एवं प्रचलन हुआ है। इस प्रकार वैज्ञानिक और तकनीकी के निर्माण के कारण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रयोजनमूलक हिंदी को अत्यधिक गति मिल गई है। अतः पारिभाषिक शब्दावली की अनुप्रयुक्तता प्रयोजनमूलक हिंदी में एक अनिवार्य तथा अत्यंत उपादेय तत्व के रूप में सिद्ध हुई है। इस अर्थ में प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रशासन, विधि, दूरसंचार, मानवीकी विज्ञान, अंतरिक्ष, कंप्यूटर तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में प्रयुक्ति के उपकरण के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुन्न है।

1.4 सारांश

1. वैश्वीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया समेटकर नजदीक आ गई है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास के साथ ही संबंधित ज्ञान की विभिन्न धाराओं को विशेष रूप से समझने समझाने की आवश्यकता महसूस होने लगी है। अतः इस दिशा में प्रशासन, विज्ञान, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, विधि, उद्यम, कृषि आदि क्षेत्रों की भाषागत अभिव्यक्ति हेतु, उन्हें जानने हेतु तथा व्यवहार में विशिष्ट अर्थ को लेकर, प्रयोग करने हेतु जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें पारिभाषिक शब्दावली कहा जाता है। किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित, निर्धारित अर्थ में प्रयुक्त होता है, वह शब्द पारिभाषिक शब्दावली के श्रेणी में आ जाता है। ज्ञान विज्ञान से संबंधित इन विभिन्न शाखाओं के विकास के साथ ही पारिभाषिक शब्दावली के गठन की आवश्यकता महसूस हुई और इसकी अनिवार्यता को समझ कर विद्वानों ने इसका निर्माण किया।

हिंदी राजभाषा बनने के बाद पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता एवं अनिवार्यता और अधिक बढ़ गई है। अतः विज्ञान, प्रशासन, वाणिज्य, तकनीकी, विधि एवं जनसंचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में इस दृष्टि से किए गए प्रयास उनके परिणाम स्वरुप 'हिंदी पारिभाषिक शब्दावली' का सृजन हुआ है। नए शब्दों के प्रयोग से हिंदी की व्यवहारिक कामकाजी और प्रशासनिक क्षेत्र में प्रगति हुई है। पारिभाषिक शब्दावली हिंदी के प्रयोजननीय पक्ष के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। साथ ही आज हिंदी की समृद्धि हेतु उसके पारिभाषिक रूप को विकसित करने का काम जारी है।

2. विश्व - गाँव की कल्पना का आधार विकसित जनसंचार तंत्र ही है। मानव जीवन की ज्ञान - वृद्धि तथा विकास के साथ जनसंचार का महत्व भी निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। 'संचार' का सामान्य अर्थ है, किसी सूचना या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाना। किसी भाव, विचार, ज्ञान या जानकारी को दूसरों तक सामूहिक रूप में पहुँचाने की प्रक्रिया को जन - संचार के नाम से जाना जाता है। मानव - समाज में समाचारपत्र, विभिन्न पत्र- पत्रिकाएँ, दूरदर्शन, रेडियो, फिल्म, संगणक आदि विविध जनसंचार माध्यम का स्थान अहम् है। जनकल्याण, शिक्षा, जागरूकता, मनोरंजन आदि उद्देश्यों को लेकर जनसंचार माध्यम अपना किरदार निभा रहे हैं। अत्याधुनिक तकनीक के कारण इन माध्यमों में विकसित नई-नई प्रणालियों से हम नित्य लाभान्वित हो रहे हैं।

मनुष्य - जाति के विकास में जनसंचार - माध्यमों के साथ-साथ शिक्षा का भी अनन्य साधारण महत्व है। शिक्षा की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में शिक्षा क्षेत्र भी विभिन्न ज्ञान धाराओं में विस्तारित हो गया है। विज्ञान एवं तकनीकी क्रांति में शिक्षा की भूमिका अहम् है। मानव के उत्कर्ष हेतु शिक्षा महत्वपूर्ण मायने रखती है। शिक्षा के साथ ही जनमानस को सजग एवं सचेत बनाने में सभा एवं सम्मेलनों का योगदान होता है। जनमत को बनाने में सभा एवं सम्मेलन ठोस कार्य करते हैं। इनके माध्यम से ही विचार एवं मूल्यों का प्रचार प्रसार प्रभावी ढंग से होता है।

आज दैनंदिन व्यवहार में जनसंचार के विभिन्न माध्यम, शिक्षा तथा सभा एवं सम्मेलनों का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। हम इनसे नित्य जुड़े रहते हैं तथा लाभान्वित होते हैं। जाहिर है, इन क्षेत्रों को जानने,

परखने, समझने, समझाने तथा प्रयोग एवं कार्य सिद्धि के लिए इनसे जुड़े शब्दों का अध्ययन करना आवश्यक बन गया है। इस दृष्टि से 'पारिभाषिक शब्दावली' इसमें सहायक सिद्ध हो रही है। इसकी अनिवार्यता को पहचानते हुए अंग्रेजी के साथ हिंदी विद्वानों ने भी इसका सृजन किया है। आज हररोज के व्यवहार में पारिभाषिक शब्दावली के रूढ होने तथा उसके प्रयोग एवं विकास के कारण हिंदी समृद्ध होती जा रही है। संक्षेप में आज हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली प्रयोजनमूलक हिंदी का महत्वपूर्ण अंग बन गई है।

1.5 स्वाध्याय

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

1. पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. पारिभाषिक शब्दावली का महत्व विषद कीजिए।
3. दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त शब्दों से संबंधित 20 अंग्रेजी हिंदी पारिभाषिक शब्द लिखिए।
4. हिंदी के प्रचलित वाक्यांशों के 20 प्रचलित संक्षेपण रूप लिखिए

1.6 क्षेत्रीय कार्य

दैनिक समाचार पत्र तथा इंटरनेट से लगभग दस-दस अंग्रेजी हिंदी शब्दों को खोजिए और उनके हिंदी अंग्रेजी पर्यायवाची शब्दों को ढूँढकर सूची बनाइए।

1.7 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य डॉ रमेश चंद्र त्रिपाठी, डॉ पवन अग्रवाल
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रासंगिकता एवं परिदृश्य-डॉ. सू. नागलक्ष्मी
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : डॉ दंगल झाल्टे
4. प्रयोजनमूलक हिंदी सिद्धांत और प्रयोग : डॉ दंगल झाल्टे
5. प्रयोजनमूलक हिंदी : डॉ विनोद गोदरे
6. प्रयोजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम - डॉ अंबादास देशमुख
7. प्रयोजनमूलक हिंदी तथा अनुवाद : प्रा. आदिनाथ सोनटक्के
8. https://hi.wikipedia.org/w/
9. https://hi.wikibooks.org/w/

❑❑❑

इकाई –2
अ) प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा,
ब) प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियाँ

अनुक्रम –

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा।

2.3.2 प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रयुक्तियाँ।

2.3.2.1 कार्यालयी प्रयुक्ति।

2.3.2.2 वाणिज्यिक प्रयुक्ति।

2.3.2.3 वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति।

2.4 स्वयं–अध्ययन हेतु प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ

2.1 उद्देश :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूपों से परिचित होंगे।
- प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा से परिचित होंगे।
- कार्यालयी प्रयुक्ति से परिचित होंगे।
- वाणिज्यिक प्रयुक्ति से परिचित होंगे
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

विश्व में मानव सभ्यता संस्कृति और ज्ञान–विज्ञान की उन्नत धरोहर को अक्षुण्ण रखने में भारतवर्ष का जो योगदान रहा है उसमें भाषिक दायित्वों के निर्वाह स्वरूप भारतीय भाषाओं की समन्वयक हिंदी भाषा की अहम् भूमिका रही है। हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जिसने भारतीय साहित्य, संस्कृति, कला तथा ज्ञान को न केवल सघन सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है, बल्कि उनकी अनुरक्षा करते हुए उन्हें गत्यात्मक भी बनाए रखा है। आंतरिक संरचना की सौंदर्यशीलता, भाव–भंगिमाओं की गहनता, अभिव्यक्ति की तीव्रता एवं शैलियों की विविधता को समेटे हिंदी साहित्य अनेक उन्नत रूपों में प्रवाहमान है। किंतु आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व प्रस्फुटन एवं फैलाव के कारण हिंदी भाषा की उपादेयता और प्रयोजन्मूलकता अनेक क्षेत्रों में स्वयं सिद्ध होने के फलस्वरुप उसके नए प्रयुक्ति रूप भी उभरकर सामने आये हैं। जिनमें प्रयोजनमूलक हिंदी सर्वोपरि मानी जा सकती है।

भारत एक विशाल महाद्वीप है। यहां २४ भाषाएं और उनकी १२०० बोलियाँ बोली जाती हैं। भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी राजभाषा बनने के बाद हिंदी का उत्तरदायित्व बढ़ चुका है। हिंदी को समृद्ध एवं सुसंपन्न बनाने के लिए अनेक प्रयोग किए गए हैं। इसमें राजभाषा आयोग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालयों ने हिंदी को संपन्न बनाने का भरसक प्रयास किया है। प्रशासनिक, व्यावसायिक एवं कार्यालयीन स्तर पर हिंदी के प्रयोग में अविश्वसनीय बढ़ोत्तरी हुई है। उसके शब्द भंडार में लगातार वृद्धि हो रही है। स्थानीय प्रभाव से मुक्त होकर हिंदी क्षेत्रातीत भाषा बन चुकी है। विश्व की प्रगत भाषाओं के अध्ययन से पता चलता है कि भाषा के प्रमुख तीन रूप हैं, बोलचाल, साहित्यिक तथा प्रयोजनमूलक। बोलचाल संबंधी तथा साहित्यिक रूपों की अपेक्षा प्रयोजनमूलक रूप के कारण भाषा में अधिक गत्यात्मकता आती है, जो उसे चिरंजीवी रखने के लिए अहम् भूमिका निभाती है। आधुनिक हिंदी भाषा उसकी प्रयोजनमूलकता के कारण ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुई है और इसी कारण उसका भाषागत विकास भी चरमोत्कर्ष तक पहुंच चुका है। प्रयोजनमूलक हिंदी ज्ञान–विज्ञान तथा राजकाज के सरकारी कार्यों में खड़ी बोली के माध्यम से अधिकाधिक प्रयुक्त की जा रही है। साथ ही वह संपर्क भाषा के रूप में देश के लगभग २५ राज्यों तथा कई केंद्रशासित प्रदेशों में महत्त्वपूर्ण योगदान निभा रही है। सरकार द्वारा आविर्भूत 'द्विभाषा सूत्र' के कारण उसके प्रचार–प्रसार में निरंतर वृद्धि होने के साथ वह अनेक भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क तथा एकता की कड़ी के रूप में कार्यरत है। अतः आधुनिक युग में हिंदी का एक विशिष्ट प्रयुक्तिपरक रूप उभरकर सामने आया है। वस्तुत: जीवन और जगत की विविध स्थितियों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला यही भाषा रूप 'प्रयोजनमूलक हिंदी' कहलाता है। प्रस्तुत इकाई में प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा, प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियों के अंतर्गत कार्यालयी प्रयुक्ति, वाणिज्यिक प्रयुक्ति और वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति का विस्तृत विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है।

2.3 विषय विवेचन :

2.3.1 प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा :

2.3.1.1 प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु है। किसी भाषा का उद्भव, विकास और अंत मानवी समाज के भाषाई प्रयोजनों की ही परिणति होती है। इसलिए भाषा का अस्तित्व सामाजिक प्रयोजनानुकूलता पर निर्भर होता है। मानव के सामाजिक जीवन के विभिन्न प्रयोजनों को संप्रेषित करने के लिए भाषा का उदय और विकास होता है। भाषा मुख्यतः दो आयामों में यह कार्य करती है- एक, सौंदर्यपरक आयाम और दूसरा, प्रयोजनपरक आयाम। मानव की सौंदर्यपरक अनुभूतियों के आलंबन के रूप में भाषा सर्जनात्मक होती है, जिसका विकास साहित्य की भाषा के रूप में होता है। यह भाषा कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं में उभरकर आती है। साथ ही वह देश-विदेश अथवा क्षेत्र विशेष के सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को अपने भीतर समेटे होती है। भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन की उस व्यवस्था से होता है, जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज सापेक्ष होता है। भाषा के इस प्रकार्यात्मक आयाम का प्रयोग किसी प्रयोजन विशेष अथवा क्षेत्र-कार्य के संदर्भ में होता है। यहाँ भाषा प्रशासन, व्यवसाय, विज्ञान तथा तकनीकी आदि क्षेत्रों की प्रयुक्ति बनकर भाषाई प्रकार्य निभाती है। संक्षेप में सामाजिक-व्यवहार में विशिष्ट प्रयोजन के लिए प्रयुक्त विशिष्ट भाषा रूप 'प्रयोजनमूलक' भाषा कहलाता है।

2.3.1.2 प्रयोजनमूलक हिंदी : नामकरण :

अंग्रेजी शब्द (Functional) के लिए हिंदी में 'प्रयोजन' तथा 'प्रकार्य' शब्दों का प्रयोग किया जाता है और '(Functional Hindi)' के लिए 'प्रयोजनमूलक हिंदी' इसे प्रकार्यात्मक, व्यावहारिक तथा कामकाजी हिंदी आदि संज्ञाएँ भी दी जाती है। मुख्यतः मोटूरी सत्यनारायण के प्रयासों से सन 1972 ई. में प्रयोजनमूलक हिंदी की स्थापना हुई है। श्री रमाप्रसन्न नायक आदि विद्वान् 'व्यावहारिक हिंदी' की संज्ञा उचित नहीं मानते हैं। उनके अनुसार 'प्रयोजनमूलक' संबोधन से लगता है कि इसके अतिरिक्त जो है वह निष्प्रयोजनपरक है। 'प्रयोजनमूलकता' का अर्थ यहाँ अन्य तरह के भाषा व्यवहार से प्रयोजनमूलक भाषा के भेदक लक्षण के रूप में लिया है। किसी वस्तु का अस्तित्व मूलतः उसके प्रयोजन के कारण होता है। लेकिन यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि किसी भी वस्तु का स्वरूप उसके प्रयोजनानुरूप ही होता है। 'प्रयोजनमूलक' वह भाषा रूप है, जो अपने विशिष्ट प्रयोजन के परिप्रेक्ष्य में विशिष्ट स्वरूप धारण किया हुआ है। अतः यहाँ 'प्रयोजनमूलक' विशेषण हिंदी के व्यावहारिक रूपों की ओर ही संकेत करता है। डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा ने प्रयोजनमूलक विशेषण में निहित संकेत को रेखांकित करते हुए लिखा है- ''निष्प्रयोजन कोई चीज नहीं है, लेकिन प्रयोजनमूलक विशेषण उसके व्यावहारिक पक्ष को अधिक उजागर करने के लिए प्रयुक्त किया गया।'' डॉ. नगेन्द्र नामकरण को उचित साबित करते हुए लिखते हैं- ''वस्तुतः प्रयोजनमूलक हिंदी के विपरीत अगर कोई हिंदी है तो वह निष्प्रयोजनमूलक नहीं वरन् आनंद मूलक हिंदी है। आनंद व्यक्तिसापेक्ष है और प्रयोजन

समाज सापेक्ष। आनंद स्वकेन्द्रित होता है और प्रयोजन समाज की ओर इशारा करता है। हम आनंदमूलक हिंदी के विरोधी नहीं हैं इसलिए आनंदमूलक साहित्य के हम भी हिमायती हैं। पर सामाजिक आवश्यकता के संदर्भ में हम संप्रेषण के बुनियादी आधार को भी अपनी नजर से ओझल नहीं करना चाहते।'' उपर्युक्त मत से स्पष्ट है कि डॉ. नगेन्द्र प्रयोजनमूलक हिंदी के नामकरण के हिमायती है।

'व्यावहारिक हिंदी' से तात्पर्य होगा 'दैनिक जीवन के कार्य-साधन के लिए प्रयुक्त की जानेवाली हिंदी।' इस रूप में यह संज्ञा अतिव्याप्ति के दोष का शिकार है। क्योंकि दैनिक कार्यसाधन की व्याप्ति अति विशाल है। भाषा से परिचित बच्चे से लेकर वृद्धों तक के सम्पूर्ण भाषाई क्रिया-कलापों का समावेश इसमें होता है। छोटा बच्चा भूख लगने पर माँ से दूध माँगता है और कहता है 'माँ, दूध!' उसका यहाँ भाषा का प्रयोग कार्य-साधन के रूप में ही है। हमारा संपूर्ण दैनिक भाषा प्रयोग किसी-न-किसी कार्य-साधन के लिए ही होता है। हर तरह के व्यवहार में प्रयुक्त भाषा अर्थात् पिता-पुत्र का व्यवहार, मित्र-मित्र के व्यवहार तथा संपूर्ण सामाजिक व्यवहार में प्रयुक्त हिंदी भाषा से तात्पर्य व्यावहारिक हिंदी होगा। इस संज्ञा से एक भ्रम यह भी होता है कि यह सामान्य स्तर की भाषा है। इस संदर्भ में डॉ. विनोद गोदरे लिखते है- ''व्यावहारिक हिंदी नामकरण के साथ एक भ्रम यह भी जुड़ जाता है कि व्यावहारिक हिंदी का अर्थ ऐसी हिंदी से है, जिसमें व्याकरण एवं सामाजिक आचरण के बजाय व्यावहारिक उपयोग पर अधिक बल दिया जाता है। ऐसी भाषा जिसकी संरचना में व्याकरण की अनिवार्यता के बजाय व्यावहारिक उपयोगिता अधिक हो। इसके विपरीत प्रयोजनमूलक भाषा में प्रशासन, सम्पर्क तथा सम्प्रेषण आवश्यक होता है और उसमें उच्चरित वाक्य-प्रयोग से लेकर लिखित वाक्य तक व्याकरण सम्मत शुद्धता एवं सामाजिक भद्रता का आग्रह होता है। ''इससे स्पष्ट हो जाता है कि व्यावहारिक हिंदी की तुलना में 'प्रयोजनमूलक हिंदी' सम्बोधन अधिक संगत, अर्थ गर्भित, लक्ष्यभेदी, स्पष्ट तथा सरल है। 'प्रकार्यात्मक हिंदी' सम्बोधन तकनीकी का भ्रम देता है और 'कामकाजी' घरेलू होने का। इसीलिए वर्तमान समय में अंन्य संबोधनों की अपेक्षा प्रयोजनमूलक हिंदी को उचित माना गया है और उसी का प्रचलन हो रहा है।

2.3.1.3 प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ :

प्रयोजन शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रयोजन' विशेषण में 'मूलक' उपसर्ग लगाने से हुई है। प्रयोजन का अर्थ है ''किसी काम, चीज या बात का प्रयोग करना अर्थात् उसे व्यवहार में लाने की क्रिया या भाव।'' अर्थात् 'प्रयोजन' का तात्पर्य 'उद्देश्य' अथवा 'प्रयोजनीयता' से है। इसलिए प्रयोजन का संबंध भाषा में प्रयोजनीयता से जुड़ा हुआ है। 'मूलक' का अर्थ है ''जो किसी के मूल में हो।'' अर्थात् 'मूलक' का तात्पर्य 'आधार' या बेस (Base) से जुड़ा हुआ है। प्रयोजनमूलक भाषा का अर्थ हुआ 'विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा।' अतः प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ होगा, 'ऐसी विशिष्ट हिंदी जिसका प्रयोग विशिष्ट प्रयोजन अथवा उद्देश्य के लिए किया जाता है।'

'प्रयोजनमूलक हिंदी' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के 'फंक्शनल हिंदी' के पर्याय के रूप में किया जाता है। अंग्रेजी में फंक्शनल से तात्पर्य है कार्यात्मक, क्रियाशील अथवा वृत्तिमूलक। अतः फंक्शनल शब्द से

प्रयोजनमूलक की संकल्पना स्पष्ट नहीं हो पाती। दूसरी ओर अंग्रेजी का एक दूसरा शब्द है अप्लाइड (applied) जिसका तात्पर्य अनुप्रयुक्त अथवा प्रायोगिक है। अतः प्रयोजनमूलक की संकल्पना अप्लाइड शब्द से अधिक करीब बैठती है।

कुछ विद्वान प्रयोजनमूलक शब्द पर ही आपत्ति उठाते हैं। उनके अनुसार कोई भी भाषा निष्प्रयोजन नहीं होती। इसलिए इस प्रकार की आपत्तियां निराधार होती हैं। वास्तव में प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग उसके प्रयुक्तिपरक अथवा प्रायोगिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा विज्ञान की महत्त्वपूर्ण शाखा अनुपयुक्त भाषा विज्ञान के अंतर्गत विकसित अत्याधुनिक शाखा है। प्रयोजनमूलक विशेषण हिंदी भाषा के प्रयोगिक तथा व्यावहारिक पक्ष को अधिक स्पष्ट करता है।

2.3.1.4 प्रयोजनमूलक हिंदी की परिभाषाएँ :

प्रयोजनमूलक हिंदी के नामकरण एवं अर्थ को जानने के बाद प्रयोजनमूलक हिंदी के संबंध में विभिन्न विद्वानों के मतों को जानना आवश्यक है। जिसका विवेचन निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं –

1. **मोटूरी सत्यनाराण :**

मोटूरी सत्यनारायण ने प्रयोजनमूलक हिंदी को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लायी जानेवाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।''

2. **डॉ. प्रभात :**

डॉ. प्रभात ने प्रयोजनमूलक हिंदी को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''कामकाजी भाषा सम्प्रत्यय (Concept) का आधार बनती है। वह अनुभव के अंश निकाल देती है अतः वहां तथ्य और सिद्धांत ही रह जाते हैं। कामकाजी भाषा सम्प्रत्यय (Concept), तथ्य और सिद्धांत (Principles) के समन्वय के साथ परिणामोन्मुखी काम करती है।''

3. **डॉ. दिलीप सिंह :**

डॉ. दिलीप सिंह ने प्रयोजनमूलक हिंदी को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं दायित्वों की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जानेवाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।''

4. **डॉ. विनोद गोदरे :**

डॉ. दिलीप गोदर ने प्रयोजनमूलक हिंदी को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''जीवन–जगत की विभिन्न आवश्यकताओं अथवा लोक व्यवहार, उच्च शिक्षा, तंत्र, जीविकोपार्जन आदि के लिए विशेष अभ्यास ज्ञान के द्वारा विशेष शब्दावली में विशेष अभिव्यक्त इकाइयों एवं सम्प्रेषण कौशल से समाज–सापेक्ष व्यावहारिक प्रयोजनों की सम्पूर्ति के लिए प्रयुक्त की जानेवाली विशेष भाषा प्रयुक्तियों को प्रयोजनमूलक हिंदी कहा जा सकता है।''

5. **डॉ. दंगल झाल्टे :**

डॉ. दंगल झाल्टे ने प्रयोजनमूलक हिंदी को परिभाषित करते हुए लिखा है- ''प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य है, हिंदी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप जो विषयगत, भूमिकागत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त किया जाता है और जो सरकारी प्रशासन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अनेक विद्य क्षेत्रों को अभिव्यक्ति प्रदान करने में सिद्ध होता है।''

6. **डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा :**

डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा ने प्रयोजनमूलक विशेषण को महत्त्व देते हुए लिखा है- ''निष्प्रयोजन हिंदी कोई चीज नहीं है। लेकिन प्रयोजनमूलक विशेषण उसके व्यावहारिक पक्ष को अधिक उजागर करने के लिए प्रयुक्त किया गया है।''

प्रयोजनमूलक हिंदी से संबंधित उपर्युक्त सभी परिभाषाओं का अध्ययन करने के उपरांत यह स्पष्ट होता है कि, प्रयोजनमूलक हिंदी सभी शासकीय, अशासकीय कार्यालयों में प्रयोग की जानेवाली भाषा सार्वजनिक स्थानों पर लिखित एवं मौखिक जानकारी देने हेतु उपयोग में लायी जानेवाली मानक हिंदी का विस्तारित रूप है। प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग से ज्ञान-विज्ञान, प्रोद्योगिकी, शहर से लेकर गांव-गलियों तक का विकास एवं सरकारी कार्य संगणक, इंटरनेट आदि सभी क्षेत्रों में प्रयोजनमूलक रूप ने हिंदी भाषा की धरोहर को अक्षुण्ण रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः प्रयोजनमूलक हिंदी ने भाषिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए हिंदी भाषा को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

2.3.1.5 प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूपगत विशेषताएँ :

'प्रयोजनमूलक हिंदी' सामाजिक-जीवन के विविध क्षेत्रों में सुचारू व्यवहार के लिए प्रयुक्त भाषा रूप है। वह दैनिक सामान्य भाषा व्यवहार से तथा कलात्मक भाषा व्यवहार से अलग है। उसमें प्रयुक्तिपरक विभित्र रूप होते हैं। उसमें परम्परागत भाषा रूप भी है और नये भाषा रूप भी। प्रयुक्ति के अनुरूप हिंदी की सभी शैली अर्थात् परिनिष्ठित, हिंदुस्तानी, उर्दू आदि का समन्वित प्रयोग उसमें होता है। अपने विशेष प्रयोजन की अनुरूपता उसका स्वरूप है और प्रयोजन की सिद्धी उसका उद्देश्य। इस अर्थ में वह एक भाषाई माध्यम है, साधन है। प्रयोजनमूलक हिंदी की स्वरूपगत विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया है -

1. **विशिष्ट भाषा :**

विशिष्ट भाषा प्रयोजनमूलक हिंदी का अनिवार्य अंग है। प्रयोग के आधार पर भाषा के मुख्यतः दो प्रकार होते हैं- पहला, जिसका प्रयोग सामान्य जन-जीवन के दैनिक कार्यों के संदर्भ में किया जाता है और जिसका अभ्यास या ज्ञान कोई व्यक्ति सामान्य जीवन के परिवेश से ही प्राप्त करता है, और दूसरा रूप- जिसका प्रयोग सामान्य जीवन के संदर्भ से भिन्न किन्हीं विशेष द्वारा प्राप्त किया जाता है। इसी दूसरे रूप को प्रयोजनमूलक भाषा कहा जाता है। यह भाषा का तथ्यपरक अर्जित परिवेश रूप होता है। विशिष्ट प्रयोजनों में विशिष्ट वर्ग द्वारा और विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपयोग की जानेवाली भाषा विशिष्ट होती है। इसमें

विषय का प्रतिपादन और निर्धारण होता है। इस विशिष्ट भाषा में अपने-अपने विषय की शब्दावली और संरचना होती है, जो इसे विशेष रूप प्रदान करती है। सामान्य और प्रयोजनमूलक भाषा में निहित अंतर को स्पष्ट करते हुए डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी लिखते हैं ''वास्तव में सामान्य भाषा और विशिष्ट भाषा एक होती है, किंतु शब्दावली और संरचना की दृष्टि से दोनों अलग-अलग हो जाती है। सामान्य भाषा की अभिव्यक्ति-शैली लाक्षणिक, व्यंजनापरक, अनेकार्थी या अलंकारपूर्ण भी हो सकती है, जबकि विशिष्ट भाषा अभिधा-प्रधान, गंभीर, अलंकार-रहित, सीधी, स्पष्ट और एकार्थी होती है। सामान्य भाषा के रूप में खड़ीबोली का प्रचलित रूप देखा जा सकता है। उसके स्थानीय रूपों को देखा जा सकता है। विभिन्न कार्यालयों, विज्ञान, विधि आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी एक विशिष्ट भाषा है।

2. कृत्रिमता या औपचारिकता :

सामान्य भाषा तथा प्रयोजनमूलक भाषा में यह भेद होता है कि सामान्य भाषा सहज रूप में विकसित होती है और प्रयोजनमूलक भाषा सप्रयास विकसित की जाती है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक भाषा कृत्रिम तथा औपचारिक होती है। प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों को इस रूप में देखा जा सकता है। सामान्य भाषा की अभिव्यक्तियाँ अनौपचारिक तथा अंतरंग भी होती है, किन्तु प्रयोजनमूलक भाषा की अभिव्यक्तियाँ औपचारिक ही होती है। जैसे- सामान्य भाषा में- 'यह पत्र सभी को देखने के लिए भेजो।' प्रयोजनमूलक हिंदी- 'पत्र अवलोकनार्थ प्रेषित करें', 'पैसे दे दो' 'भुगतान करें' आदि।

3. अर्जित भाषा :

सामान्य भाषा भाषा का पहला चरण है और प्रयोजनमूलक भाषा उसका अगला चरण होता है। सामान्य भाषा सहज होती है, वह अनायास रूप में हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है, लेकिन प्रयोजनमूलक भाषा अर्जित होती है। इसलिए हिंदी भाषी प्रदेश के लोग हिंदी के सामान्य भाषा रूप को सहज अपनाते हैं, लेकिन प्रयोजनमूलक हिंदी उन्हें भी परिश्रम से सीखनी पड़ती है।

4. प्रयोजनपरकता :

प्रयोजनमूलक भाषा का स्वरूप प्रयोजनपरक होता है। यह भाषाई रूप सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष रूप में प्रयुक्त होता है। यह प्रयोजनमूलक भाषा की विशेषता भी है और सीमा भी। सामान्य भाषा की तुलना में इसका प्रयोग-क्षेत्र सीमित होता है। साहित्यिक भाषा की तुलना में अभिव्यक्ति की बहुआयामी क्षमता सीमित होती है। इस सम्बन्ध में डॉ. विनोद गोदरे लिखते हैं- ''साहित्यिक भाषा में कलाग्रह के कारण भाषा साधन से साध्य बन जाती है किंतु प्रयोजनमूलक भाषा कभी साधन से साध्य नहीं बनती। इसी प्रकार साहित्यिक भाषा भावोच्छ्वास एवं संवेदन की भाषा है, किन्तु प्रयोजनमूलक भाषा सिर्फ सपाट अभिव्यक्ति माध्यम से अधिक नहीं होती। इसी प्रकार साहित्यिक भाषा का लक्ष्य प्रायः सौंदर्यानुभूति अथवा कभी-कभार चमत्कार होता है जबकि प्रयोजनमूलक हिंदी का पहला और अन्तिम लक्ष्य सेवा माध्यम (Service Tools) होता है, जीविकोपार्जन का साधन बनना है।'' स्पष्ट है कि साहित्यिक भाषा संवेदन की भाषा है और प्रयोजनमूलक भाषा प्रशासकीय कामकाज की भाषा है।

5. पारिभाषिकता एवं अभिधापरकता :

संदिग्धता, अस्पष्टता एवं अनेकार्थता को प्रयोजनमूलक भाषा में कोई स्थान नहीं होता है। इस के संदर्भ में डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी लिखते हैं– ''प्रकार्य की दृष्टि से प्रयोजनमूलक भाषा तथा साहित्यिक भाषा एक ही है, किन्तु इनके स्वरूप में मूल अंतर यह है कि साहित्यिक भाषा में अर्थ बहुधा व्यंजनाश्रित और लाक्षणिक होता है, जबकि प्रयोजनमूलक भाषा अभिधापरक और एकार्थी होती है। साहित्यिक भाषा प्रायः अलंकारपूर्ण और अनेकार्थी होती है, जबकि प्रयोजनमूलक भाषा प्रायः अलंकाररहित, सीधी, स्पष्ट और स्वतः पूर्ण होती है।'' विविध प्रयोजनों की यह भाषा कार्यालयी, बैंकिंग, विज्ञान, विधि, इंजीनियरींग, मेडिकल आदि विषयों तया कार्यक्षेत्रों में अपनी–अपनी पारिभाषिक शब्दावली के साथ प्रयुक्त होती है।

6. प्रयुक्तिपरकता :

भिन्न कार्यक्षेत्रों के लिए जिन भाषा–रूपों का प्रयोग किया जाता है उन्हें प्रयुक्ति (Register) कहा जाता है। वस्तुतः भाषा अपने आप में समरूपी होती है, परंतु प्रयोग में आने पर वह विषम रूपी बन जाती है। इन्हीं प्रयोगत भेदों के कारण कई भाषा भेद दिखाई देते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी जब कार्यालयों, विज्ञान, विधि, बैंक, व्यापार, जनसंचार, प्रोद्योगिकी आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है, तब उसमें कई भाषा–भेद बन जाते हैं। कार्यालयी हिंदी की शब्द–सम्पदा और उसकी संरचना जनसंचार की शब्द–सम्पदा और उसकी संरचना में पर्याप्त भेद पाया जाता है। इस तरह से प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयोजनपरक विभिन्न भाषा–रूपों की समन्वयी संज्ञा है।

संक्षेप में हिंदी का एक विशिष्ट प्रयुक्तिपरक रूप उभरकर सामने आया है। वस्तुत: जीवन और जगत की विविध स्थितियों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला यही भाषा रूप 'प्रयोजनमूलक हिंदी' कहलाता है।

2.3.2 प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियाँ :

हिंदी एक अत्यंत विकसित एवं समृद्ध भाषा है। भाषा और साहित्य के स्तर पर इसका इतिहास अत्यंत प्राचीन है। आज जीवन के सामाजिक स्तर में जो बदलाव हो रहे हैं तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का जो विकास हो रहा है इन सबों को अर्थवत्ता प्रदान करने में हिंदी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रयोजनमूलक हिंदी भी जीवन एवं समाज से जुड़ी विभिन्न समस्याओं को वाणी प्रदान करती है। मूलतः प्रयुक्ति भाषा विज्ञान के अंतर्गत प्रयोग किया जाने वाला विशिष्ट अर्थ का द्योतक है। किसी भी भाषा में विभिन्न विषयों एवं संदर्भों के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग होता है। प्रसिद्ध भाषाविद् हैलिडे के अनुसार ''भाषा समुदाय में विभिन्न वर्ग विभिन्न बोलियाँ बोलते हैं। एक अन्य दिशा में भी भाषा के विविध रूपों की चर्चा की जा सकती है। भाषा में प्रयोजन के अनुसार भेद होते हैं। विभिन्न स्थितियों में उसमें स्वत: भेद आ जा सकते हैं। प्रयोजन के आधार पर भाषा के स्वरूप भेद को जो नाम दिया जाता है, उसे रजिस्टर कहते हैं।'' स्पष्ट है कि भाषा के प्रयोग पर आधारित प्रयोगों को प्रयुक्ति कहा जाता है।

आधुनिक युग में प्रयोजनमूलक हिंदी का तेजी से विकास हुआ है। इसका मुख्य कारण बदलती हुई जीवन स्थितियों में भाषा को नए दायित्वों से होकर गुजरना पड़ा है और उसने नई अर्थच्छवियाँ और नए-नए रूप विकसित किए हैं। आधुनिक काल से पहले हमारी सामाजिक व्यवस्था कृषि एवं शिल्प पर आधारित थी। आधुनिक औद्योगीकरण और वैज्ञानिक विकास के साथ हिंदी भाषा नई-नई प्रयुक्तियों में ढल रही है। समाज का विकास जिन-जिन क्षेत्रों में होता जाएगा जिन-जिन क्षेत्रों में हम हिंदी भाषा का प्रयोग करते रहेंगे उन सभी क्षेत्रों से संबंधित प्रयुक्तियाँ इस भाषा में विकसित होती रहेगी।

प्रयुक्ति से तात्पर्य :

'प्रयुक्ति' शब्द 'प्रयुक्त' में 'इ' प्रत्यय लगाकर बना है। 'प्रयुक्त' का अर्थ है प्रयोग में लाया हुआ। भाषा का जो रूप किसी विषय अथवा कार्य क्षेत्र में बार-बार या लगातार प्रयुक्त होता है। वह उस कार्य क्षेत्र की भाषिक विशिष्टता बन जाती है। इस भाषिक विशिष्टता को उस विषय अथवा कार्य क्षेत्र विशेष की 'प्रयुक्ति' कहा जाता है। 'प्रयुक्ति' वस्तुतः अंग्रेजी शब्द 'Register' का हिंदी पर्याय हैं। सामाजिक जीवन व्यवहार में हर क्षेत्र की भाषा की अपनी विशिष्टताओं को देखते हुए भाषा विद्वानों ने 'रजिस्टार' यानी प्रयुक्ति की संकल्पना निर्धारित की है। सामाजिक स्तर भेद के कारण भाषा में जो अंतर आता है वहीं प्रयुक्ति का रूप-निर्धारण करता है। उदाहरण के लिए व्यापारियों की भाषा और कचहरी की भाषा के अपने-अपने मुहावरे और शब्दावली होती है। इस तरह विविध स्थितियों और विषय क्षेत्रों में भाषा व्यवहार की एक निश्चित पद्धति बन जाती है, जो उस क्षेत्र विशेष से जुड़े समाज द्वारा सामान्य रूप में स्वीकृत होती है। प्रयोजनमूलक भाषा के विविध रूप इन प्रयुक्तियों द्वारा निर्धारित होते हैं।

प्रयुक्ति का आधार :

प्रयोग की विशेषताओं के आधार पर किसी भाषा के अंतर्गत प्रयुक्तियाँ अथवा 'रजिस्टार' बन जाते हैं। एक प्रयुक्ति दूसरी से सर्वथा भिन्न होती है तथा इन प्रयुक्तियों को किस आधार पर निश्चित अथवा निर्धारित किया जाता है। प्रयुक्ति चूंकि भाषा के भीतर ही विशिष्ट भाषा रूप होता है। अतः उस भाषा की व्यापक विशेषताएँ उसमें निहित होती हैं। अर्थात् विभिन्न प्रयुक्तियों की शब्दावली मिलकर उस भाषा की शब्दावली बनती है तथा भाषा की संरचना और उसका सामान्य मुहावरा प्रयुक्तियों में मौजूद रहता है। इसलिए एक प्रयुक्ति का दूसरी प्रयुक्ति में अंत: प्रवेश बराबर होता रहता है। जैसे साहित्यिक लेखन में विज्ञान, दर्शन अथवा गणित की शब्दावली का समावेश आमतौर पर देखने को मिलता है। लेकिन इसके बावजूद शब्दावली प्रयुक्ति का महत्त्वपूर्ण आधार होती है। प्रयुक्ति के निर्धारण में वह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उसका निर्वाह दो प्रकार से होता है।

1) क्षेत्र विशेष की विशिष्ट शब्दावली होती है। जैसे - आक्सीजन, हाइड्रोजन आदि विज्ञान के शब्द हैं।

2) शब्दों के अर्थ विभिन्न क्षेत्र में भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे -'पद' शब्द कविता में छंद विशेष के लिए प्रयुक्त होता है। आम बोलचाल में इसका अर्थ पैर से है। व्याकरण में इसका अर्थ अभिव्यक्ति से संबंधित है और प्रशासनिक क्षेत्र में इसका अर्थ ओहदे से है।

शब्दावली के अतिरिक्त और भी कई महत्त्वपूर्ण आधार हैं, जैसे – विषय क्षेत्र, संप्रेषण का तरीका, वक्ता और श्रोता अथवा लेखक और पाठक की स्थिति एवं भाषा प्रयोग की औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थिति आदि है। जिनसे प्रयुक्ति को पहचाना या निर्धारित किया जा सकता है। निम्नलिखित रूप में कार्यालयी प्रयुक्ति, वाणिज्यिक प्रयुक्ति और वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है।

2.3.2.1 कार्यालयी प्रयुक्ति :

प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त भाषा को कार्यालयी हिंदी कहा जाता हैं। सरकार को आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सुरक्षात्मक आदि अनेक दृष्टियों से प्रशासन का भार संभालना पड़ता है। यह सब इकाईयां प्रशासन की है। हिंदी की कार्यालयी प्रयुक्ति का रूप बोलचाल एवं साहित्यिक भाषा से भिन्न होता है। साहित्यिक भाषा की तरह यह आलंकारिक, लाक्षणिक या व्यंजना प्रधान न होकर स्पष्ट और अभिधा प्रधान होती है। यह द्विअर्थी या अनेकार्थी नहीं होनी चाहिए। इसमें शब्द का अर्थ स्पष्ट लक्षित होना चाहिए। इसमें जो कुछ भी कहा जाये वह नियत शब्दावली के भीतर कहा जाता है। यह नीरस एवं सीधी होती है। मुख्यतः कार्यालयी प्रयुक्ति किसी भी भाषा के लिए गौरव की बात होती है। स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला और उसके कुछ वर्षोंपरान्त ही हिंदी ने यह साबित कर दिया कि उसमें वह शक्ति है कि कार्यालयी कामकाज में वह बेहतर अभिव्यक्ति प्रदान कर सकती है। हिंदी की प्रस्तुत प्रयुक्ति प्रशासकीय पत्रलेखन, मसौदा एवं टिप्पणी लेखन, प्रतिवेदन, आलेखन, संक्षेपण तथा अनुवाद आदि जैसे समस्त महत्त्वपूर्ण व्यापारों में हिंदी ने अन्य भाषा की अपेक्षा अधिक सशक्त रूप में अपने आपको स्थापित किया है। कार्यालयी कामकाज को हिंदी माध्यम में करके उसे और भी सहज एवं स्वीकार्य बनाया है। आज कार्यालयी क्रिया कलापों में हिंदी का महत्त्व असंदिग्ध है। साथ ही समय और श्रम बचत के लिए भी इसकी आवश्यकता अनुभूत होती है। कार्यालयी प्रयुक्ति की भाषा में निर्वैयक्तिकता, संपूर्णता एवं स्पष्टता, पूर्वग्रह रहितता, असंदिग्धता एवं वर्णनात्मकता के गुण होने चाहिए। जिसका विवेचन निम्नवत है–

1. निर्वैयक्तिकता :

सरकारी तंत्र में अधिकारों का वितरण सोपान क्रम के आधार पर होता है। अतः प्रत्येक अधिकारी या तो अपने उच्चाधिकारी के आदेश का पालन करता है या निम्न अधिकारी को आदेश देता है या सरकारी निर्णयों की सूचना देता है। इसलिए सरकारी अधिकारों का सरकारी आदेशों से कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं होता है। अधिकारी व्यक्तिगत रूप में कुछ न कहकर निर्वैयक्तिक रूप में कहता है। जैसे पत्र भेजा जा रहा है, सूचित किया जा रहा है, आदि। कार्यालय में व्यक्ति प्रशासन का अंग होता है, इसीलिए कार्यालय के सभी पत्रादि प्रशासन की ओर से लिखे जाते हैं। यही कारण है कि कार्यालयी हिंदी में कर्मवाच्य की प्रधानता रहती है।

2. तथ्यों में स्वपूर्णता और स्पष्टता :

कार्यालयी प्रयुक्ति में तथ्यों पर अधिक बल दिया जाता है। साथ में यह अपेक्षा की जाती है कि वे तथ्य अपने आप में पूर्ण तथा स्पष्ट हो। प्रशासन के क्षेत्र में संदेह और भ्रांति को अलंकार नहीं, भाषा का

दोष माना जाता है। इसके अभाव में कभी–कभी पत्रों की उपेक्षा हो जाती है या कार्रवाई में विलंब हो जाता है।

3. यथासंभव असंदिग्धता :

कार्यालयी हिंदी में प्रयुक्त शब्दों तथा वाक्यों के सरल, स्पष्ट और सुबोध होने की अपेक्षा होती है। यदि भाषा में क्लिष्टता, अस्पष्टता और अप्रचलित प्रयोग होता है, तो संदिग्धतार्थकता की गुंजाईश रहती है। संदिग्धार्थकता प्रशासन के लिए घातक होती है। जो मूल बात कही गयी है उसका एक ही अर्थ होना चाहिए। द्वि–अर्थी या अनेकार्थी होने से कार्रवाई में या तो बाधा पड़ती है या उसमें कोई गलती होने की संभावना होती है। अभिधा शक्ति ही कार्यालयी हिंदी की शक्ति होती है।

4. वर्णनात्मकता :

कार्यालयी हिंदी में आवश्यक तथ्यों का विवरण दिया जाता है। इस विवरण में विचाराधीन विषय से सम्बधित सारी सामग्री को क्रमवार रूप में स्पष्ट किया जाता है। इसमें प्रत्येक मामले का संक्षिप्त विवरण देते हुए मुख्य कथ्य का परिचय दिया जाता है। उसके बाद निष्कर्ष देना उचित समझा जाता है। इसमें मूल्यांकन की गुंजाइश कम रहती है, तथ्यों के वर्णन की अधिक। अतः कार्यालयी हिंदी में तथ्यों का सही–सही निरूपण होना अत्यंत आवश्यक है।

5. तकनीकी–अर्धतकनीकी भाषा प्रयोग :

कार्यालयी भाषा मुख्यतः तकनीकी–अर्धतकनीकी होती है। इसी कारण सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में प्रयुक्त होनेवाले शब्द या वाक्य किसी विशेष क्षेत्र के लिए रूढ़ हो जाते हैं और इन शब्दों या वाक्यों का प्रयोग इससे बाहर किया जाए तो वे अटपटे लगते हैं। ये सामान्य बोलचाल की हिंदी में प्रायः सार्थक और उपयुक्त नहीं होते। किंतु यह बात ध्यान देने योग्य है कि कार्यालयी हिंदी की शब्दावली और वाक्य–विन्यास हिंदी प्रकृति के अनुकूल है। कार्यालयी प्रयुक्ति अंग्रेजी वाक्य–विन्यास से अधिक प्रभावित है, क्योंकि हिंदी में वाक्य अंग्रेजी वाक्यों के अनुवाद के माध्यम से आये हैं। इसीलिए कार्यालयी हिंदी ने कहीं–कही अपने प्रकृत स्वभाव को छोड़ कृत्रिम रूप ग्रहण किया है। राजभाषा हिंदी के रूप में कार्यरत प्रयोजनमूलक हिंदी का यह भाषा–रूप स्वातंत्र्योत्तर काल में विशेष रूप से निखरा हुआ है।

2.3.2.2 वाणिज्यिक प्रयुक्ति :

वाणिज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जो विशेष किस्म की भाषा का प्रयोग किया जाता है उसे भाषा की वाणिज्यिक प्रयुक्ति कहते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी की वाणिज्यिक और व्यावसायिक प्रयुक्ति का क्षेत्र अति विशाल है। औद्योगिक क्रांति के बाद इसकी व्याप्ति मात्र राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय तथा बहुआयामी हो गयी है। आधुनिक युग में वाणिज्यिक प्रयुक्ति का निरंतर विकास हुआ है। भारत में वाणिज्य के निरंतर नए–नए क्षेत्रों का विकास हो रहा है। इस प्रयुक्ति के अंतर्गत वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय, मंडियों, शेयर बाजार, झवेरी बाजार, बीमा निगम, बैंक, ऋण, विपणन, यातायात, आयात–निर्यात, थोक एवं खुदरा व्यापार आदि

क्षेत्रों का समावेश होता है। वाणिज्यिक हिंदी के अंतर्गत उन सभी रूपों की गणना करनी होगी जिनका संबंध उत्पादन की प्रस्तुति, विवरण, क्रय-विक्रय, विज्ञापन और आर्थिक संचरण से है। माल या वस्तु के उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक पहुँचने तक की सम्पूर्ण गतिविधियां वाणिज्य में आती है। इस दृष्टि से इसकी कई उप-प्रयुक्तियां है। छोटे-छोटे ग्रामीण बाजार हाटों से सट्टा बाजों तक, मंडियों से लेकर आयात-निर्यात तक, फूटपाथ के हॉकर्स से लेकर विभित्र सारणियों से प्रसारित विज्ञापनों तक, हस्त-व्यवसाय के केंद्र से अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियों तक की सम्पूर्ण गतिविधियों से जुड़ा भाषाई-संदर्भ 'वाणिज्य-प्रयुक्ति' के अंतर्गत आ जाता है। साथ ही यातायात, व्यापार तथा औद्योगिक क्षेत्र से सम्बन्धित सरकारी-अर्थसरकारी या गैर-सरकारी प्रतिष्ठानों के कार्यालय, बीमा बैंक आदि भी इसके अंतर्गत आते हैं। 'व्यावसायिक-संप्रेषण' के अंतर्गत पत्र-व्यवहार तथा विज्ञापन इसकी उप-प्रयुक्तियां हैं। कुल मिलाकर 'वाणिज्यिक हिंदी' का व्यवहार-क्षेत्र व्यापक एवं विशाल है। वाणिज्यिक प्रयुक्ति की अपनी विशिष्ट भाषिक संरचना है। जिसकी विशेषताएं निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है -

1. विभिन्न स्त्रोतों की शब्दावली :

वाणिज्यिक हिंदी में पारिभाषिक, अर्धपारिभाषिक तथा सामान्य शब्दों का प्रयोग होता है। यह शब्द विभिन्न स्रोतों से आते हैं। जैसे - परम्परागत, तत्सम, देशज, आगत, प्रयुक्ति के लिए निर्मित तथा अन्य प्रयुक्ति से आगत। मूल्य, व्यय, धन, वित्त, वृद्धि, चक्रवृद्धि, शिखावृध्दि आदि मूल संस्कृत शब्द है, जो अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रचलित है। अदायगी, जमानत, रेहन, गिरवी, कर्ज, उधार आदि अरबी-फारसी के शब्द, नव-निर्मित शब्दों की संख्या अनगिनत हैं। टकसाली सोना, सराफा बाजार, हाथ बदल, वायदा सूची, रोकड़ा सूची आदि देशज शब्द है। बहुत सारे शब्द जैसे दलाली, वस्तु-विनिमय, माँग-पत्र, निवेश, पूँजीगत लाभ आदि जैसे शब्द मानविकी से आये हैं। वाणिज्यिक प्रयुक्ति का संबंध बैंक, विमा, यातायात तथा सरकारी कार्यालयों से है। इसलिए इन क्षेत्रों से सम्बन्धित शब्दावली भी यहाँ प्रयुक्त होती है। 'विक्रय-क्षेत्र' के अंतर्गत जहाँ एक और सामान्य शब्दावली का प्रयोग होता है, तो विज्ञापन के रूप में इसका सम्बन्ध जन-संचार माध्यमों से आ जाता है। अतः उस क्षेत्र से संबंधित शब्दावली का प्रयोग होता है।

2. उप-प्रयुक्तियों के अनुरूप भाषिक संरचना :

वाणिज्यिक प्रयुक्ति में वस्तु उत्पादन, यातायात, विक्रय एवं विज्ञापन से सम्बन्धित भाषा रूपों का प्रयोग किया जाता है। इसमें भी कार्यालयी प्रबंधन, पत्राचार तथा विज्ञापन की भाषिक संरचना एक दूसरे से अलग होती है। प्रबंधन में कार्यालयी शैली का प्रयोग होता है साथ ही बही-खाता-लेखन आदि की अपनी संरचना होती है। पत्राचार की भी यहाँ कई शैलियों होती है, कहीं औपचारिक तो कहीं अनौपचारिक। विक्रय की भाषा सामान्य तथा अर्ध-औपचारिक होती है। विज्ञापन की भाषा आकर्षक तथा विज्ञापन वस्तु, जनसंचार माध्यम और उसके क्षेत्र-विशेष के अनुरूप होती है। इसके अतिरिक्त शब्दावली तथा भाषिक संरचना की दृष्टि से वाणिज्यिक हिंदी में रूढीकरण-अरूढीकरण, स्पष्टता, संक्षिप्तता, प्रभावोत्पादकता, अप्रत्यक्षता, तटस्थता एवं विनम्रता के लक्षण प्राप्त होते हैं।

2.3.2.3 वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति :

प्रयोजनमूलक हिंदी का यह रूप अपेक्षाकृत अधिक नया एवं आधुनिक है। इस प्रयुक्ति का संबंध विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली से है। जिसका प्रयोग विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में होता है, जो वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी कहलाती है। हिंदी की प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति का यह नया रूप है। 1961 ई. स. में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई थी। इस आयोग ने इन विषयों से संबंधित शब्दावलियों एवं कोशों का निर्माण किया। जिसके कारण इस प्रयुक्ति का अधिक ठोस रूप में विकास हुआ है। विज्ञान की भाषा स्पष्ट, गठित एवं तर्कसंगत होनी चाहिए। विज्ञान और तकनीकी की भाषा का रूप सामान्य बोलचाल की भाषा से भिन्न होता है। इसमें विशिष्ट सूत्रों एवं पदार्थों को पारिभाषिक अर्थों में अभिव्यक्त किया जाता है। इसमें अनेकार्थी नहीं होने चाहिए। हिंदी भाषा ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के शब्दों के साथ-साथ इसके लिए तत्सम तथा विदेशी शब्दों का स्वीकार कर अपने शब्द-भंडार को समृद्ध किया है। इसीलिए हिंदी में आज विज्ञान, गणित, विधि, अंतरिक्ष, दूरसंचार, टेक्नोलॉजी, मेडिकल से संबंधित पुस्तकों का लेखन-निर्माण अधिक मात्रा में हो रहा है। अतः आज हम स्वीकार कर सकते हैं कि हिंदी भाषा की यह प्रयुक्ति न केवल सफल है बल्कि निरंतर नये बदले हुए अर्थ को भी ध्वनित करने में सक्षम है।

1. सुस्पष्टता और परिशुन्यता :

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री की भाषा सुस्पष्ट, सुनिश्चित, संक्षिप्त, सुबोध और सरल होनी चाहिए। सुस्पष्टता एवं निश्चयात्मकता परस्परपूरक है। प्रयोजनमूलक हिंदी की इस क्षेत्र की शब्दावली मूलतः अंग्रेजी शब्दावली का अनुवाद है। शब्दों के निर्धारण-निर्माण तथा लिप्यंतरण प्रक्रिया में यह ध्यान दिया है कि सुस्पष्टता और परिशुद्धता की रक्षा हो। भाषिक संरचना की दृष्टि से भी इसके प्रति ध्यान दिया है। तकनीकी शब्दावली में परम्परागत तथा नवनिर्मित शब्दों में कहीं-कहीं समस्या उत्पन्न होती दिखाई देती है।

2. संक्षिप्तता एवं सुबोधता :

संक्षिप्तता एवं सुबोधता वैज्ञानिक तकनीकी भाषा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। यहाँ संक्षिप्तता से तात्पर्य कम शब्दों में अभिष्ट विकारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता से है। तरह-तरह की क्रियाएँ तथा अवधारणा से संबंधित पारिभाषिक शब्दों का निर्माण, निर्धारण एवं अनुवाद प्रयोजनमूलक हिंदी के इस क्षेत्र में हो रहा है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने इस क्षेत्र की भाषा की विशेषताओं को ध्यान में रखकर इस संबंध में सिद्धांत बनाये हैं। सुबोधता का तात्पर्य वाग्जाल और निष्प्रयोजन विपर्यय एवं अत्यधिक अनुप्रासात्मक विन्यास के परिहार से है।

3. वस्तुनिष्ठता :

विज्ञान की भाषा अनुसंधानाधीन समस्याओं और परिणामों के प्रति वैज्ञानिक की वस्तुपरक चिन्तन शैली का प्रतिपादक है। वैज्ञानिक भाषा औपचारिक एवं निर्वैयक्तिक होती है। इस क्षेत्र के लेखन में

सामान्यतः कर्मवाच्य का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है, क्योंकि यह निर्वैयक्तिक लेखन में सहायक होती है।

4. आलंकारिकता का अभाव :

जे. एच. बुजर की यह मान्यता रही है कि विज्ञान की भाषा रूपालंकार से जितनी दूर होगी वैज्ञानिक तथ्यों के निरुपण में उतनी ही अधिक सहायता प्राप्त होगी। इस तथ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि भाषा के आलंकारिक प्रयोग अर्थ परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

5. वैज्ञानिक शैली :

वैज्ञानिक शैली से तात्पर्य वस्तुनिष्ठ शैली से हैं। यहाँ विषय का प्रतिपादन महत्त्वपूर्ण है, उसका भाषाई सौंदर्य नहीं। अपितु 'अनाकर्षकता एवं नीरसता' इस शैली में अनिवार्यता आ जाती है।

उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त तथ्यपरकता एवं मूर्तता, अर्थ का स्थिरीकरण, तार्किकता, तकनीकि प्रधानता, पारदर्शिता आदि विशेषताएँ भी महत्त्वपूर्ण है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी का शब्द-स्रोत प्रमुखतः संस्कृत और अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली रहा है। वैज्ञानिक तकनीकी का हिंदी भाषा रूप उक्त विशेषताओं को सँजोया हुआ है।

निष्कर्षत: प्रयोजनमूलक हिंदी विकासमान स्थिति में है। जीवन के सामाजिक, मानविकी, तंत्र-ज्ञान, कम्प्यूटर एवं अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधित अभी भी ऐसे अनेक अत्याधुनिक ज्ञान-क्षेत्र मौजूद हैं जिनके प्रयोग के लिए 'प्रयुक्ति' (Register) निर्मित होने बाकी हैं। अतः विषयगत स्थिति, संदर्भ एवं जरूरत के अनुसार ऐसी प्रयुक्ति तैयार करके उन्हें व्यवहार योग्य बनाया जाना आवश्यक है।

2.4 स्वयं – अध्ययन हेतु प्रश्न :

i) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. प्रयुक्ति को अंग्रेजी में.........कहां जाता है।

   अ) रोस्टर ब) रजिस्टार क) अप्लाइड ड) मस्टर

2. प्रयोजनमूलक हिंदी की भाषा.........होती है।

   अ) अर्जित ब) स्वीकृत क) अस्वीकृत ड) अर्पित

3. राजभाषा हिंदी की लिपि..........है।

   अ) ब्राह्मी ब) गुरुमुखी क) देवनागरी ड) मोड़ी

4. प्रयोजनमूलक हिंदी को अंग्रेजी में.........हिंदी कहां जाता है।

   अ) फंक्शनल ब) प्रोविजनल क) प्रायवेट ड) गवर्नमेंट

5. 'भाषा समुदाय में विभिन्न वर्ग विभिन्न बोलियाँ बोलते हैं' कथन........का है।

अ) मोटूरि सत्यनारायण ब) हैलिडे

क) दिलीप सिंह ड) विनोद गोदरे

6. प्रयुक्ति भाषा विज्ञान के अंतर्गत प्रयोग किया जानेवाला.........अर्थ का द्योतक है।

अ) विशिष्ट ब) सर्वसाधारण क) सामान्य ड) प्रसिद्ध

7. कार्यालयी हिंदी का प्रमुख गुण.........है।

अ) यथासंभव असंदिग्धता ब) निर्वैयक्तिकता

क) तथ्यों में स्पष्टता ड) उपर्युक्त सभी

8. कार्यालयी हिंदी में.........का प्रयोग पूर्णतः वर्जित है।

अ) लक्षणा ब) व्यंजना क) अलंकार ड) उपर्युक्त सभी

9. कार्यालयी हिंदी में.........को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

अ) कृतवाच्य ब) कर्मवाच्य क) भाववाच्य ड) इनमें से कोई नहीं

10. वाणिज्यिक प्रयुक्ति के अंतर्गत.........क्षेत्रों का समावेश होता है।

अ) बैंक ब) विपणन क) बीमा निगम ड) उपर्युक्त सभी

11. वाणिज्यिक प्रयुक्ति की अपनी विशिष्ट.........संरचना होती है।

अ) भाषिक ब) काल्पनिक क) वैज्ञानिक ड) तकनीकी

12. चक्रवृध्दि शब्द.........क्षेत्र से संबंधित है।

अ) कार्यालयी ब) वैज्ञानिक क) वाणिज्यिक ड) विधी

13. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना.........ई. में हुई।

अ) 1960 ब) 1961 क) 1962 ड) 1963

14. वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति के अंतर्गत........क्षेत्रों का समावेश होता है।

अ) अंतरिक्ष ब) दूरसंचार क) टेक्नोलॉजी ड) उपर्युक्त सभी

15. वैज्ञानिक भाषा औपचारिक एवं.........होती है।

अ) निर्वैयक्तिक ब) व्यवहारिक क) अलंकारिक ड) काल्पनिक

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दावली :

- प्रस्फुटन : व्यक्त होना, प्रकट होना।
- प्रयुक्ति : प्रयुक्त होने की स्थिति, प्रयोग
- राजभाषा : सरकारी या प्रशासनिक काम-काज में प्रयुक्त भाषा।
- संप्रेषित : प्रेषण, संप्रेषण किया हुआ।
- प्रयोजन : आशय, उद्देश्य, उपयोग
- सम्पूर्ति : अच्छी तरह से पूरी करने की क्रिया या भाव।
- परिनिष्ठित : पूर्णतः शुद्ध, किसी काम में पूर्णतः निपुण, कुशल।
- कार्यालयी हिंदी : जिसका प्रयोग सरकारी कार्यालयों के दैनिक कार्यों में होता है।
- प्रतिवेदन : विवरण, रिपोर्ट
- संक्षेपण : संक्षिप्त या छोटा रूप
- आलेखन : मसौदा, प्रालेखन
- अनुवाद : किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत् प्रस्तुत करना।
- निर्वैयक्तिकता : निरपेक्षता, वस्तुनिष्ठता
- असंदिग्धता : निश्चित, अस्पष्टता से मुक्त, स्पष्ट
- शिखा वृद्धि : वह ब्याज जो प्रति दिन बढ़ता जाय।
- चक्रवृद्धि : एक प्रकार का सूद या ब्याज जिसमें उत्तरोत्तर ब्याज पर भी ब्याज लगाया जाता है।
- वस्तुनिष्ठता : वस्तुपरकता, वास्तविकता

2.6 स्वयं – अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1. (ब) रजिस्टार 2. (अ) अर्जित 3. (क) देवनागरी 4. (अ) फंक्शनल
5. (ब) हैलिडे 6. (अ) विशिष्ट 7. (ड) उपर्युक्त सभी 8. (ड) उपर्युक्त सभी
9. (ब) कर्मवाच्य 10. (ड) उपर्युक्त सभी 11. (अ) भाषिक 12. (क) वाणिज्यिक
13. (ब) 1961 14. (ड) उपर्युक्त सभी 15. (अ) निर्वैयक्तिक

2.7 सारांश :

आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व प्रस्फुटन एवं फैलाव के कारण हिंदी भाषा की उपादेयता और प्रयोजन्मूलकता अनेक क्षेत्रों में स्वयं सिद्ध होने के फलस्वरुप उसके नए प्रयुक्ति रूप भी उभरकर सामने आये हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी ज्ञान-विज्ञान तथा राजकाज के सरकारी कार्यों में खड़ी बोली के माध्यम से अधिकाधिक प्रयुक्त की जा रही है।

सामाजिक-व्यवहार में विशिष्ट प्रयोजन के लिए प्रयुक्त विशिष्ट भाषा रूप 'प्रयोजनमूलक' हिंदी कहलाता है।

व्यावहारिक हिंदी की तुलना में प्रयोजनमूलक हिंदी सम्बोधन अधिक संगत, अर्थ गर्भित, लक्ष्यभेदी, स्पष्ट तथा सरल है। प्रकार्यात्मक हिंदी सम्बोधन तकनीकी का भ्रम देता है और कामकाजी घरेलू होने का। इसीलिए वर्तमान समय में अन्य संबोधनों की अपेक्षा प्रयोजनमूलक हिंदी को उचित माना है।

प्रयुक्ति भाषा विज्ञान के अंतर्गत प्रयोग किया जाने वाला विशिष्ट अर्थ का द्योतक है। प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त भाषा को कार्यालयी हिंदी कहा जाता हैं। कार्यालयी प्रयुक्ति का रूप बोलचाल एवं साहित्यिक भाषा से भिन्न होता है। साहित्यिक भाषा की तरह यह आलंकारिक, लाक्षणिक या व्यंजना प्रधान न होकर स्पष्ट और अभिधा प्रधान होती है।

वाणिज्यिक प्रयुक्ति के अंतर्गत वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय, मंडियों, शेयर बाजार, झवेरी बाजार, बीमा निगम, बैंक, ऋण, विपणन, यातायात, आयात-निर्यात, थोक एवं खुदरा व्यापार आदि क्षेत्रों का समावेश होता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति का प्रयोग विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में होता है

2.8 स्वाध्याय :

अ) निम्नलिखित लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
3. कार्यालयी प्रयुक्ति को स्पष्ट कीजिए।
4. वाणिज्यिक प्रयुक्ति को स्पष्ट कीजिए।
5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति को स्पष्ट कीजिए।

ब) टिप्पणियाँ लिखिए।

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप।
3. कार्यालयी प्रयुक्ति।

4. वाणिज्यिक प्रयुक्ति।

5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति।

क) निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियों का विवेचन कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता एवं उसकी विशेषताओं का अध्ययन कीजिए।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोगात्मक क्षेत्र का अध्ययन कीजिए।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की सीमाएं एवं संभावनाओं का अध्ययन कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी – रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1975
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग – दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
4. प्रयोजनमूलक हिंदी – कमलकुमार बोस, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2000
5. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका – डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. प्रयोजनमूलक हिंदी : सृजन और समीक्षा – डॉ. राम लखन मीना, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली।
8. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप – राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विजयपाल सिंह
10. प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – डॉ. रमेशचन्द्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल

❑❑❑

इकाई –3
हिंदी भाषा और रोजगार के अवसर

अनुक्रम –

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय – विवरण

3.3.1 दूरदर्शन में रोजगार के अवसर

3.3.2 विज्ञापन में रोजगार

3.3.2.1 विज्ञापनों में सबसे प्रचलित भाषा

3.3.2.2 विज्ञापन लेखक

3.3.3 अनुवाद में रोजगार

3.3.3.1 जूनियर हिंदी अनुवादक

3.3.3.2 सीनियर हिंदी अनुवादक

3.3.4 पत्रकारिता में रोजगार

3.3.4.1 पत्रकारिता और रोजगार

3.3.4.2 विदेशों में पत्रकारिता के अवसर

3.3.5 फिल्म में रोजगार

3.3.3.1 गीतकार

3.3.3.2 पटकथाकार

3.3.3.2 संवाद लेखन

3.3 स्वयं – अध्ययन के लिए प्रश्न

3.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.5 स्वयं – अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.6 सारांश

3.7 स्वाध्याय

3.8 क्षेत्रीय कार्य

3.9 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

1. रेडियो, विज्ञापन, अनुवाद, पत्रकारिता और फिल्म क्षेत्र मिलने वाले रोजगारों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
2. हिंदी भाषा की भाषिक और वाचिक क्षमता से परिचित होंगे।
3. लेखन क्षमता को अर्जित करेंगे।
4. हिंदी भाषा के अध्येताओं को मिलने वाले रोजगारों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
5. जनसंचार एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का रोजगारोन्मुख उपयोग करेंगे।
6. हिंदी के बूते पर स्पर्धा परीक्षाओं के द्वारा मिलने वाले रोजगारों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.2 प्रस्तावना :

मनुष्य विचारों के आदान-प्रधान के लिए भाषा का उपयोग करता है। प्रत्येक भाषा की अपनी प्राकृतिक सीमा होती है। जो भाषा अपनी भौगोलिक सीमा को लाँघकर अपना अस्तित्व बनाती है तथा मनुष्य को रोजी-रोटी देने के लिए सक्षम होती है वह भाषा चिरकाल तक जीवित रहती है। भूमंडलीकरण, बाजारवाद और उदारीकरण की चपेट में कई भाषाएँ लुप्त होती हुई दिखाई दे रही है। हिंदी लोगों के दिलों पर राज करते हुए तेज गति के साथ फैलती हुई वैश्विक संपर्क भाषा के रूप में उभरकर आयी है। उसके बढ़ते कदम देश-विदेशों में रोजगार के कई अवसर निर्माण करते हैं। सरकारी, गैरसरकारी, अर्धसरकारी, निजी आदि क्षेत्रों में भाषा के अध्येताओं को अपनी रूचि के अनुसार रोजगार पाने के अवसर मिलते हैं।

3.3 विषय विवरण :

3.3.1 दूरदर्शन में रोजगार के अवसर

दृक-श्राव्य माध्यमों में दूरदर्शन अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। दूरदर्शन भारत का सरकारी प्रणाल (चैनल) है। यह भारत सरकार द्वारा नामित प्रसार भारती के अंतर्गत चलाया जाता है। भारत में सितम्बर, 1959 से दूरदर्शन प्रसारण की शुरूआत हुई। दूरदर्शन का व्यापक प्रसारण विश्व का दूसरा विशाल प्रसारण है। इसके राष्ट्रीय नेटवर्क में 64 दूरदर्शन केंद्र, 24 क्षेत्रीय समाचार एकक, 126 दूरदर्शन रखरखाव केंद्र, 202 उच्च शक्ति ट्रान्समीटर, 828 लो पावर ट्रान्समीटर, 351 अल्पशक्ति ट्रान्समीटर, 18 ट्रांसपोंडर, 30 चैनल तथा डीटीएच सेवा शामिल है।

दूरदर्शन के चैनल में एक अंतर्राष्ट्रीय, 5 राष्ट्रीय, 11 क्षेत्रीय भाषाओं के और 1 क्षेत्रीय राज्य नेटवर्क चैनल है। दूरदर्शन की सेवाओं में दिन-ब-दिन उन्नति होती हुई दिखाई दे रही है। वर्तमान में दूरदर्शन के पास 59 चैनेल्स है। दूरदर्शन आमजनों को सूचना, ज्ञान और मनोरंजन के साथ कई रोजगार प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। उसमें हिंदी समाचार संपादक, न्यूज रीडर कम अनुवादक, वरिष्ठ संवाददाता, हिंदी रिपोर्टर, कॉपी एडिटर और स्ट्रिंगर आदि प्रमुख रोजगार हैं।

1. हिंदी समाचार संपादक (Hindi News Editor) :-

देश के प्रसारण केंद्र से राजभाषा में समाचारों के साथ देश की वर्तमान स्थिति को प्रसारित करना अनिवार्य होता है। इसलिए हिंदी भाषा में स्नातक या स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त व्यक्ति को दूरदर्शन, नई दिल्ली के समाचार सेवा प्रभाग में हिंदी समाचार संपादक के पद पर काम करने का अवसर मिलता है। समाचारों का संकलन करना, वर्गीकृत करना, उचित क्रम से लगाना और उनमें से महत्त्वपूर्ण समाचारों की सुर्खियाँ बनाना आदि विशेष कार्य समाचार संपादक को निभाने पड़ते हैं।

राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता-संस्कृति, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार, व्यापार, शिक्षा, खेल, मनोरंजन आदि क्षेत्रों पर दिन-प्रतिदिन पैनी नज़र रख कर समाचारों को सटीक, संक्षिप्तता के साथ तैयार करके उसमें रोचकता निर्माण करना समाचार संपादक का कार्य होता है।

हिंदी समाचार संपादक पद के लिए शैक्षिक योग्यता :-

1. मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि।
2. पत्रकारिता में डिप्लोमा।
3. भाषा पर प्रभुत्व।
4. संगणक का आधारभूत ज्ञान।

अनुभव :- रिपोर्टिंग और संपादन का 5 साल का अनुभव।

हिंदी समाचार संपादक पद के लिए चयन प्रक्रिया :-

हिंदी समाचार संपादक पद के चयन प्रक्रिया में दो चरण होते हैं-

1. लिखित परीक्षा
2. साक्षात्कार

हिंदी समाचार संपादक पद के लिए पाठ्यक्रम और परीक्षा :-

हिंदी समाचार संपादक पद के लिए पहले लिखित परीक्षा का आयोजन किया जाता है। यह परीक्षा 100 अंकों की होती है। पदों की संख्या के अनुसार लिखित परीक्षा का स्वरूप बदला जाता है। हिंदी समाचार संपादक पद के लिए संपादक कौशल, पत्रकारिता का सामान्य ज्ञान और भाषा के ज्ञान को परखा जाता है। लिखित परीक्षा का स्वरुप निम्नांकित होता है-

पेपर I वस्तुनिष्ठ :-

इस परीक्षा में 50 अंकों के लिए 50 प्रश्न पूछे जाते हैं उसके लिए 60 मिनट की अवधि दी जाती है। परीक्षा का स्वरूप निम्नलिखित होता है -

अ.क्र.	परीक्षा	प्रश्न	अंक	समय
1	सामान्य ज्ञान और समसामयिक घटना क्रम	25	25	60 मि.
2	व्यावसायिक ज्ञान	25	25	
	कुल	50	50	

पेपर II निबंध लेखन, सार लेखन और व्याकरण :–

इस पेपर का उद्देश्य अभ्यर्थियों का भाषिक कौशल और पत्रकारिता का ज्ञान परखना होता है। निबंध लेखन, सार लेखन और व्याकरण पर प्रश्न पूछे जाते हैं। यह परीक्षा दो भागों में विभाजित होती है। इसका स्वरूप निम्नलिखित होता है–

भाग	प्रश्न क्र.	विषय	अंक	समय
भाग इ		हिंदी निबंध लेखन, सार लेखन, व्याकरण		2 घंटे
	1.	निबंध लेखन (6 में से 1)	20	
	2.	निम्नलिखित परिच्छेद का 1/3 सार योग्य शीर्षक के साथ लिखिए।	15	
	3.	व्याकरण	15	
		कुल अंक	50	

प्रसार भारती भर्ती प्रक्रिया के निर्णय के अनुसार परीक्षा में बदवाल हो सकता है। इस परीक्षा में अभ्यर्थियों को न्यूनतम 50 अंक प्राप्त करना अनिवार्य होता है। जो अभ्यर्थी 50 अंक प्राप्त करते हैं, उन्हें आवाज परीक्षण के लिए बुलाया जाता है।

2. **साक्षात्कार :–**

उम्मीदवारों को दूसरे चरण में साक्षात्कार की चुनौती परीक्षा देनी पड़ती है। इस परीक्षा में व्यावसायिक पत्रकारिता, भाषा ज्ञान और संपादन कौशल पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। साक्षात्कार के लिए 100 अंक होते हैं।

लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के अंकों के आधार पर अभ्यर्थियों का चयन किया जाता है।

2. **हिंदी समाचार वाचक सह–अनुवादक** (Hindi News Reader-cum-Translator) :–

विशाल भारत की नींव 28 राज्य और 8 संघ राज्य है। नतीजन भारत बहुभाषी राज्य है। उन भाषाओं में से भारतीय संविधान ने 22 प्रादेशिक भाषाओं को राजभाषा (राज्य की) के रूप में स्वीकृत किया गया है। यही कारण है कि दूरदर्शन स्टेशनों को देश की राजभाषा हिंदी के साथ प्रादेशिक राजभाषाओं में समाचार प्रसारित करना अनिवार्य होता है। अंग्रेजी से हिंदी और प्रादेशिक भाषा से हिंदी में समाचारों का अनुवाद करने की जिम्मेदारी तथा समाचारों को रोचक और आकर्षक ढ़ंग से श्रोताओं के सामने प्रस्तुत करना हिंदी

समाचार वाचक सह–अनुवादक का कार्य होता है। भारतीय प्रसार सेवा की ओर से इस पद के लिए विज्ञापन प्रसारित होता है।

हिंदी समाचार वाचक सह–अनुवादक पद के लिए शैक्षिक योग्यता :–

1. मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातक उपाधि।
2. अनुवाद डिप्लोमा।
3. दोनों भाषा (हिंदी और अंग्रेजी) पर प्रभुत्व।
4. संगणक का आधारभूत ज्ञान।
5. हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने की क्षमता।

हिंदी समाचार वाचक सह–अनुवादक पद के लिए चयन प्रक्रिया :–

हिंदी समाचार वाचक सह–अनुवादक पद के चयन प्रक्रिया में दो चरण होते हैं–

1. लिखित परीक्षा
2. आवाज परीक्षण और साक्षात्कार

हिंदी समाचार वाचक सह–अनुवादक पद के लिए पाठ्यक्रम और परीक्षा :–

हिंदी समाचार वाचक सह–अनुवादक पद के लिए पहले लिखित परीक्षा का आयोजन किया जाता है। यह परीक्षा 100 अंकों की होती है। इस परीक्षा में दो पेपर होते हैं। पहला पेपर वस्तुनिष्ठ, जिसमें सामान्य ज्ञान और समसामयिक घटना क्रम पर होता है। इस पेपर का पाठयक्रम निम्नलिखित होता है–

1. पेपर I (वस्तुनिष्ठ) :–

1. सामान्य ज्ञान :–

परीक्षा में मौखिक और गैर–मौखिक प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। इसमें समानता, अंतर, अंतरिक्ष दृश्यता, समस्या निवारण, विश्लेषण, निर्णय, दृश्य स्मृति, भेदभाव, अवलोकन, रिश्ते, अवधारणाओं, अंकगणितीय तर्क, मौखिक और आकृति वर्गीकरण, अंकगणितीय संख्या, श्रृंखला, कोडिंग और डिकोडिंग आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं। उम्मीदवार के वर्तमान ज्ञान का परीक्षण करना इसका मुख्य लक्ष्य होता है। उसके आस–पास के माहौल, वैज्ञानिक अनुसंधान, खेल, भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास, भारतीय भूगोल, अर्थशास्त्र, भारतीय राजनीति, भारतीय संविधान, आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

2. समसामयिक घटना क्रम :–

इस परीक्षा में उम्मीदवार के वर्तमान ज्ञान का परीक्षण करना इसका मुख्य लक्ष्य होता है। उसके आस–पास के माहौल, वैज्ञानिक अनुसंधान, खेल, भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास, भारतीय भूगोल, अर्थशास्त्र, भारतीय राजनीति, भारतीय संविधान, आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

पेपर I (वस्तुनिष्ठ) का स्वरुप निम्नांकित होता है –

अ.क्र.	परीक्षा	प्रश्न	अंक	समय
1	सामान्य ज्ञान	25	25	1 घंटा
2	समसामयिक घटना क्रम	25	25	
	कुल	50	50	

2. पेपर II (वर्णनात्मक प्रकार) :–

पेपर II वर्णनात्मक होता है। इसमें हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करना होता है। अभ्यर्थी के अनुवाद कौशल को इस परीक्षा के माध्यम से परखा जाता है। यह परीक्षा 50 अंकों की होती है।

प्रश्न पत्र	विषय	अंक	समय
II	अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद	25	2 घंटे
	हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद	25	
	कुल अंक	50	

अभ्यर्थी को इस परीक्षा में न्यूनतम 50 अंक अर्जित करना अनिवार्य होता है। सफल अभ्यर्थियों को आवाज परीक्षा और साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है।

2. आवाज परीक्षण और साक्षात्कार :–

उम्मीदवारों को दूसरे चरण में आवाज परीक्षण की परीक्षा देनी पड़ती है। इस परीक्षा का स्वरुप निम्नलिखित होता है –

परीक्षा	विषय	अंक
आवाज परीक्षण	हिंदी	100

आवाज परीक्षण में उम्मीदवारों को हिंदी विषय में दिए विषय में से एक विषय पर क्रमशः हिंदी में तीन मिनट क्रम के साथ बिना रुके बोलना अनिवार्य होता है। उम्मीदवारों का भाषा प्रवाह, भाषा सामग्री, शैली, उच्चारण और आवाज का परीक्षण करना इसका उद्देश्य होता है।

आवाज परीक्षण में सफल अभ्यर्थियों का साक्षात्कार लिया जाता है। इसमें व्यावसायिक ज्ञान, अनुवाद कौशल, भाषा आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं। समग्र अंकों के आधार पर अभ्यर्थियों का चयन किया जाता है।

3. वरिष्ठ संवाददाता (हिंदी) :–

वह व्यक्ति जो अक्सर दूर स्थान से किसी समाचार पत्र, रेडियो या टेलीविज़न नेटवर्क के लिए समाचार या टिप्पणी का योगदान देता है। 'वरिष्ठ संवाददाता' का तात्पर्य विशेष एवं प्रधान संवाददाता से भिन्न किसी

व्यक्ति से है जो प्रसारण केन्द्र के अलावा किसी अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र या स्थान पर जाकर समाचारों की रिपोर्टिंग करता है। जो विशेष कार्यं में निपुण होता और उसके पास कम से कम पांच वर्ष की सेवा करने का तजुर्बा होता है वही वरिष्ठ संवाददाता बनता है। संवाददाता के कार्य का आधार सत्यनिष्ठा और निर्भीकता है। जटिल घटनाओं, विविध समस्याओं को समझने की शक्ति, समाचार की गहराई में जाने के लिए, नए-नए तथ्यों तथा सत्य को उद्घाटित करने के लिए जिज्ञासु-वृत्ति का होना आवश्यक है। संवाददाता में यथार्थता, वस्तुनिष्ठता तथा समयसूचकता के साथ गतिशीलता का भी होना अनिवार्य होता हैं।

वरिष्ठ संवाददाता (हिंदी) पद के लिए शैक्षिक योग्यता :-

1. मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातक उपाधि।
2. पत्रकारिता / जनसंचार / में डिग्री या पीजी अनुवाद डिप्लोमा।
3. हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं पर प्रभुत्व तथा क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान।
4. संगणक का आधारभूत ज्ञान।
5. इस कार्य का 5 साल का अनुभव।

वरिष्ठ संवाददाता (हिंदी) के प्रमुख कार्य :-

1. नई घटनाओं का रिपोर्टिंग करना।
2. स्टोरी फाईल तैयार करना।
3. न्यूजरूम द्वारा दी गई जिम्मेदारियों को पूरा करना।
4. क्षेत्रीय राज्यों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक घटनाक्रमों पर कड़ी नजर रखना ताकि चैनलों को नवीनतम मुद्दों से अवगत कराया जा सके।

4. हिंदी रिपोर्टर :-

समाचार एकत्र करने और उनका क्रमबद्ध रिपोर्ट तैयार करने के लिए समाचार पत्र, पत्रिका रेडियो या टेलीविजन द्वारा नियुक्त व्यक्ति को रिपोर्टर कहते है। जो समाचारों को प्रसारित करने का कार्य करता है। रिपोर्टर एक प्रकार का पत्रकार ही होता है, जो समाज में प्राप्त स्रोतों का उपयोग करके सत्यता की परख करता है। वह जानकारी आमजनों के सामने सहजता के साथ प्रस्तुत करने के लिए उस पर रिपोर्ट बनाता है। इसमें साक्षात्कार आयोजित करना, सूचना-संग्रह या लेख लिखना शामिल होता है। पत्रकार या रिपोर्टर उस व्यक्ति को कहते है, जो समसामयिक घटनाओं, लोगों, एवं मुद्दों आदि पर सूचना एकत्र करता है एवं जनता में उसे विभिन्न माध्यमों की मदद से फैलाता है। इस व्यवसाय या कार्य को पत्रकारिता कहते हैं।

पत्रकारिता और रिपोर्टिंग समाचार प्रसार के व्यापक क्षेत्र में परस्पर जुड़े हुए है, लेकिन उनका अलग-अलग क्षेत्र हैं। पत्रकार व्यापक विश्लेषण, गहन रिपोर्टिंग और खोजी पत्रकारिता में तल्लीन रहते हैं, जबकि रिपोर्टर समय पर समाचारों और तथ्यात्मक रिपोर्टिंग पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

हिंदी रिपोर्टर का कार्य :-

1. कहानियों की खोज करना।
2. आमजनों से संपर्क बढ़ाना।
3. सोशल मीडिया का उपयोग करना और लोगों से उनके जीवन और चिंताओं के बारे में बात करना।
4. बुलेटिनों पर शोध करना और लिखना तथा उन्हें चित्रित करने के लिए योजना बनाना।
5. बुलेटिनों और किसी भी ब्रेकिंग न्यूज के बारे में कार्यक्रम टीमों के साथ संपर्क बनाए रखना।

3.3.2 विज्ञापन में रोजगार :

बाजारवाद की नींव विज्ञापन है। आधुनिक और उपभोक्तावादी समाज में विज्ञापन मार्गदर्शक, दिशादर्शक, सलाहकार बना हुआ दिखाई देता है। बाजार में जाकर वस्तु को देखना, परखना, जाँचना, टटोलना, उसकी उपयोगिता देखना यह सारी बातें कालबाह्य हो गई है। गतिशील समाज और आधुनिकता की होड़ में दौड़ रहे मनुष्य को विज्ञापन एक मात्र सहारा बना हुआ है, जिस पर मनुष्य आँखे मूंदकर विश्वास रखता है और आवश्यक वस्तुओं को खरीद लेता है।

विज्ञापन व्यक्ति की निजी जिंदगी से लेकर वैश्विक स्तर तक फैला हुआ विशाल मोह जाल/ माया जाल है। जिसमें लोगों को आकर्षित किया जाता है और वस्तुओं को खरीदने के लिए विवश किया जाता है। उत्पादक अपनी वस्तु को विज्ञापन के द्वारा देश-विदेश में पहुँचाता है। इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों के कारण यह सुविधा आसान और सरल बन चुकी है।

आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति जिस तरह से नए-नए उत्पादों की ओर खींच रही है, उसका प्रयोग कर रही है, इसके पीछे की महत्त्वपूर्ण भूमिका विज्ञापन की है। विज्ञापन ही वह कला है जो किसी खराब और निम्न श्रेणी के उत्पाद को भी रातों-रात प्रतिष्ठित कर देता है। यद्यपि भाषा मानव समुदाय के परस्पर सम्प्रेषण का प्रमुख साधन है। विज्ञापन केवल सम्प्रेषण का कार्य नहीं करता, वरन् उपभोक्ता को आकर्षित करने और रिझाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डॉ. अंबादास देशमुख कहते हैं कि वर्तमान युग उपभोक्ता का युग है। उत्पादक और उपभोक्ता के बीच विज्ञापन संवाद का माध्यम बन गया है। उत्पादक वर्ग अपना उत्पादन वस्तु को विज्ञापन के द्वारा बेचना चाहता है। उत्पादक और उपभोक्ता के बीच की कडी विज्ञापन है। आधुनिक उपभोक्तावादी, बाजारवादी संस्कृति में यह कडी निरंतर मजबूत हो रही है। वर्तमान में इसका एक मात्र उद्देश्य व्यावसायिकता है। विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा वस्तु एवं सेवा का प्रचार किया जाता है। विज्ञापन निर्माता ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जो उपभोक्ता सहज रूप से आकर्षित होकर वस्तु और

सेवा को खरीदने के लिए तैयार हो। विज्ञापन एक भाषिक कौशल है। जिसका प्रयोग विज्ञापन निर्माता सुयोग्य रूप से और ढंग से करता है। विनोद गोदरे कहते हैं कि, भाषा का प्रयोग हमारे जीवन में केवल सामान्य भाव जागृति के संदर्भ में नहीं होता बल्कि विज्ञापन आदि के द्वारा एक विशेष संकल्प अथवा उददेश्य को प्रसारित करने के लिए भी होता है।

3.3.2.1 विज्ञापनों में सबसे प्रचलित भाषा :

हिंदी भारत के साथ-साथ विदेशों में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली तथा समझने वाली भाषा है। हिंदी की भाषिक संरचना के कारण विज्ञापन की प्रमुख भाषा बन गई है। विज्ञापन के विषय अथवा उत्पादित वस्तुओं के गुण तथा उसकी प्रस्तुति के आधार पर उसकी आन्तरिक एवं बाह्य आवश्यकताओं के अनुरूप भाषा की जरूरत होती है। वर्तमान युग के अनुरूप भाषा की जरूरत होती है। वर्तमान युग में हिंदी विज्ञापन की आवश्यकता के अनुरूप नया रूप ग्रहण कर रही है। विज्ञापन के अनुसार हिंदी भाषा में नित-नये प्रयोग हो रहे हैं। हिंदी भाषा मात्र पुस्तकों की भाषा न होकर नए समय और समाज की जीवंत भाषा बनी है। हिंदी की अपनी भाषा संस्कृति है, इसमें शब्दावली, वाक्य रचना, मुहावरे और कहावते आदि विशेष होते हैं। हिंदी का अपना एक भाषा संस्कार है। वर्तमान युग में पारंपारिकता के साथ वह आधुनिकता का भी सहजता से स्वीकार कर रही है।

हिंदी के क्रियापदों के प्रयोग से विज्ञापनों में अधिक कह देने की क्षमता पैदा होती है। जैसे - बिकाऊ है, जरूरत है, चाहते हो, आते हैं, जाते हैं आदि शब्दों के प्रयोग से विज्ञापनों की अर्थवत्ता बढ़ती है। पत्र-पत्रिकाओं जैसे मुद्रित विज्ञापनों में प्रयोग की जानेवाली हिंदी-शब्दावली माध्यम के परिवर्तन के साथ बदल जाती है। रेडिओं में जहाँ ध्वन्यात्मक शब्दों का महत्त्व होता है वहीँ टेलीविजन तथा सिनेमा में दृश्यात्मक क्रियापदों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे :- मुद्रित विज्ञापन रूप -ठंडी के दिनों में त्वचा को मुलायम रखने के लिए बारोलिन लगाइए श्राव्य माध्यम रेडिओ - ठंडी की खुश्की दूर करे बोरोलीन

दृश्य-श्राव्य माध्यम - देखा आपने? जाना आपने? आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

विज्ञापन बार-बार वस्तु के नाम का उल्लेख करता है, जिससे कि उस वस्तु का नाम उपभोक्ता को याद रहे। जैसे -

उपभोक्ता :- साबुन दीजिए ...

दुकानदार :- कौन सा चाहिए?

बस यही वक्त है, जब आपके अवचेनत में पडे विज्ञापन अपना खेल खेलते हैं। एक-एक करके साबुन के विज्ञापन दिमाग में दौड ने लगते हैं।

1. मेरे सौंदर्य का राज......................लक्स
2. कुदरती स्नान के लिए .... हमाम
3. मैं सिंथॉल इस्तेमाल करता हूँ, और आप .... आदि।

3.3.2.2 विज्ञापन और रोजगार के अवसर :

हम विज्ञापन के घेरे में जीवनयापन करते है। हमारे इर्द-गिर्द प्रिंट मीडिया, श्राव्य, दृश्य, दृश्य-श्राव्य, इंटरनेट, वेबसाइट और आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक तथा सोशल माध्यमों से विज्ञापनों की भरमार होती है। आधुनिक युग में इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया की नई-नई तकनीके आने से विज्ञापन के माध्यमों में अपूर्व वृध्दि हुई है। अखबार से लेकर हवाई जहाज तक विज्ञापन का व्यापक क्षेत्र है। पुस्तकें, मैंगजीन, फिल्में, गीत-संगीत के रिकॉर्ड, दूरदर्शन (हजारों प्रायवेट चैनल), वीडियो (फिल्म ट्रेलर से यूट्यूब तक) टेप, रेडियो (आकाशवाणी और एफ. एम चैनल तक), ऑनलाईन (विविध वेब के द्वारा), बिलबोर्ड, हौर्डिंग, टेलीविजन स्क्रीन, हवाई गुब्बारे, ऑडिओ विजुअल कैसेट, जहाज, बस, ट्रेन, कार, आदि के अलावा पैंट,टी-शर्ट पहनकर या बिल्कुल अर्धनग्न होकर अपने शरीर पर चित्रकारी करके, किसी कंपनी का सिम्बॉल या टयाटून गोंद कर विज्ञापन का प्रसार-प्रचार किया जाता है। इस व्यावसायिक होड में विज्ञापन ने मनुष्य शरीर को भी सुरक्षित नहीं छोडा है। इन्हीं जगहों पर कार्य करने का सुअवसर मिलता है।

सरकारी, गैर-सरकारी, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, बहुराष्ट्रीय, निजी संस्थाओं में विज्ञापन लेखक, विज्ञापन निर्माता, विज्ञापन सलाहकार, विज्ञापन विशेषज्ञ, विज्ञापन कॉपीराइटर, बाजार अनुसंधान अधिकारी आदि जगहों पर भाषा के अध्यताओं को रोजगार के अवसर मिलते हैं। विज्ञापन क्षेत्र में रूचि रखने वाला स्वयं की विज्ञापन एजेंसी खोलकर लाखों रुपयों की आमदनी कर सकता है।

3.3.2.3 विज्ञापन लेखक :

भूमंडलीकरण के युग में विज्ञापन लेखक को काम और धन की कमी नहीं हैं। उत्पादक बाजार के अन्य उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा करते हुए अपनी वस्तु को अन्य स्पर्धक वस्तु से सरल, बेहतर और उपयोगी साबित करने के लिए विज्ञापनों का सहारा लेता है।विज्ञापन को आकर्षक और गेय बनाने के लिए लाखों रुपए खर्च करता है।

विज्ञापन वही अच्छा माना जाता है जो उपभोक्ता का ध्यान अधिकतम आकर्षित करता है, वस्तु एवं संगठन के प्रति विश्वास उत्पन्न करता है, अभिनव एवं मौलिक साज-सज्जा से युक्त, साक्षर-निरक्षर सभी के लिए सुबोध, गतिशील और वस्तु को खरीदने की चाह निर्माण करता है। विज्ञापन में चित्र, लिखित तथ्य, ट्रेडमार्क और शीर्षक आदि में समन्वय होना अनिवार्य होता है।

विज्ञापन लिखते समय भौगोलिक आधार (अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, आँचलिक और स्थानिक विज्ञापन), संचार माध्यम (समाचार पत्र-पत्रिका, रेडियो, दूरदर्शन, एफ.एम. चैनेलस और अन्य संचार माध्यम), उद्देश्य (वस्तु विक्री, जनसेवा, तुलनात्मक, ज्ञानवर्धक, संस्थात्मक और जनहित विज्ञापन आदि) और विज्ञापनदाता के आधार (सरकारी, गैरसरकारी, व्यावसायिक और व्यक्ति विज्ञापन) आदि को ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण होता है।

विज्ञापन लेखक विज्ञान, कला एवं शिल्प का अच्छा जानकार होता है। उसे अपनी बात को कम-से-कम शब्दों में प्रभावपूर्ण तथा कलात्मक ढंग से उपभोक्ता तक पहुँचाना होता है। विज्ञापन सरल, रोचक और जनभाषा में होता है। विज्ञापन में निम्नांकित चार गुण होना अनिवार्य होता है-

1. उपभोक्ता को आकर्षित करना
2. वस्तु के प्रति रूचि बढ़ाना
3. वस्तु खरीदने के लिए इच्छावर्ध्दन करना
4. कार्य के लिए प्रेरित करना

सफल विज्ञापन लेखक इन चार गुणों पर लक्ष्य केंद्रीत करता है, वह अपनी भाषा कौशल से विज्ञापन लेखन का कार्य सुचारू रूप से करता है।

विज्ञापन लेखक के गुण :

विज्ञापन लेखक के पास निम्नलिखित गुण होना अनिवार्य होता है-

1. भाषा पर अधिकार
2. प्रभावशाली संवाद क्षमता
3. समूह में कार्य करने तथा नेतृत्व करने की क्षमता
4. प्रबंधन क्षमता
5. प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता
6. उत्साही, आत्मविश्वासी और जनसंवाद की क्षमता
7. सभ्यता और संस्कृति के प्रति सजग आदि।

विदेशों में अवसर :

भारत में मेधावी लोगों की कमी नहीं है। अपनी प्रतिभा के कारण देश में ही नहीं विदेशों में भी जाने जाते हैं। विश्व के मानचित्र पर भारत का अब एक प्रमुख स्थान है। भारत के विज्ञापन संकल्पनाओं को सिर्फ स्वीकारा नहीं है, उसकी सराहना भी की गई है, और हो रही है। हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ रहा है, इसी कारण विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों में सेवा करने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

उपभोक्तावादी संस्कृति में युवाओं के लिए विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने का सुअवसर मिलता है। जिसमे वह अपनी बुद्धि, भाषा के बूते पर अपना अलग अस्तित्व बना सकता है। जनसंवाद, सभ्यता और संस्कृति के प्रति सजग रहने वाला युवक यह जिम्मेदारी बखूबी से निभा सकता है। सरकारी, गैरसरकारी और निजी क्षेत्र तथा अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाली संस्थाएँ विज्ञापन लेखक को अच्छा-खासा वेतन, रुतबा और अन्य सुविधाएँ देती हुई नजर आती है।

3.3.3 अनुवाद में रोजगार :

विश्व में लगभग पाँच हजार से ज्यादा भाषाएँ बोली जाती है। प्रत्येक भाषा की अपनी विशेषता होती है। जिस क्षेत्र में वह बोली जाती है वहाँ की सभ्यता-संस्कृति, परिवेश, जन-जीवन आदि का भाषा पर प्रभाव रहता हैं। प्रत्येक भाषा में लिखा गया साहित्य समृद्ध एवं वैभवशाली है। सच्चाई यह कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए विभिन्न भाषाओं का ज्ञान अर्जित करना संभव नहीं होता है। उसकी अभिलाषा होती है कि अन्य भाषाओं में लिखित ज्ञान-विज्ञान, ग्रंथ, संदर्भ, कोश आदि में संचित ज्ञान मातृभाषा में मिले।

वर्तमान जन-जीवन भूमंडलीकरण, बाजारवाद, विज्ञान तकनीकी तथा जन-संचार माध्यमों से प्रभावित हैं। आधुनिक युग में व्यस्तता भरी जिंदगी से अपने लोगों के लिए समय देना मुश्किल हो रहा है। इसलिए वह सोशल मीडिया का प्रयोग करके अपने विचार वह प्रभावित करता है। सोशल मीडिया के कारण मनुष्य की आदान-प्रदान की स्वाभाविक प्रकृति को गति मिली है। वैश्वीकरण के कारण सभी देश अपनी सीमाओं को लाँघकर विस्तृत रूप में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र में नविनता की खोज कर रही है। लेकिन इस आदान-प्रदान में सब से बडी बाधा है - भाषा। प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा है, संस्कृति है, परंपरा है। दो भाषाओं, दो संस्कृतियों और दो सभ्यताओं को आपस में जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य अनुवाद करता है।

अनुवाद एक बहुत बडा क्षेत्र है, इसकी सीमाओं को हम तय नहीं कर सकते। भूमंडलीकरण के इस युग में अनुवादकों की माँग दिनों-दिन बढ़ रही है। संसार के असीम ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुवाद अहम् भूमिका निभाता है और साथ ही लाखों रोजगारों का सृजन करता हैं। निम्नलिखित जगहों पर अनुवादक रूचि के अनुसार रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

1) साहित्य क्षेत्र :

साहित्य मनुष्य की चितवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है। साहित्य भाषा क्षेत्र में पढा और लिखा जाता था। लेकिन आज साहित्यिक कृतियों ने अपना भाषा क्षेत्र लाँघकर विश्वपटल पर अनुवाद की सहायता से पहुँचता हैं। विश्व की सभी भाषाओं में प्रतिभासंपन्न साहित्य का सृजन हुआ है। अनुवाद कार्य की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। हमारे प्राचीन महाकाव्य रामायण और महाभारत के अनुवाद से ही हमारे इतिहास और संस्कृति की पहचान पूरी दुनिया को हो चुकी है। महाकवि तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस महाकाव्य विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवादित हुआ है। रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित गीताजंली का अनुवाद अंग्रेजी हुआ और वे महाकवि के रूप ख्याति प्राप्त हुए। अनुवाद के कारण दो देशों की सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, अध्ययन और अनुसंधान, विचारों की अभिव्यक्ति, व्यापार में वृध्दि, अंतर्राष्ट्रीय सद्‌भावना को बढावा देकर सामाजिक, वैचारिक, सांस्कृतिक तत्वों की पहचान करना सहज रूप से संभव हो गया है।

2) जनसंचार क्षेत्र :

आधुनिक युग में जनसंचार माध्यम व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आकाशवाणी, दूरदर्शन, शार्ट फिल्म, डॉक्यूमेंटरी, सिनेमा आदि जनसंचार के प्रमुख माध्यम हैं। इस माध्यमों का वैश्विक स्तर हो या देशांर्तगत अनुवाद की सहायता से संसार की विविध भाषाओं में प्रसारित होता है।

जैसे :- भारतीय संविधान ने २२ भाषाओं को विभिन्न राज्यों की राजभाषाओं के रूप में स्वीकृत किया हैं। मराठी भाषा में प्रसारित समाचार, कार्यक्रमों का अनुवाद अन्य भाषाओं में अनुवाद के कारण प्रसारित हो सकते हैं। इस प्रकार देश-विदेशों में अनुवादक को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

3) प्रिंट मीडिया :

शिक्षित जन तक पहुँचने के लिए लिखित एवं मुद्रित साहित्य का उपयोग किया जाता है। दैनिक समाचार पत्रों के साथ-साथ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। यह पत्रिकाएँ कृषि, ज्ञान-विज्ञान, व्यापार या वाणिज्य, बाल, शैक्षिक, रोजगार आदि प्रकार की होती हैं। यह पत्रिकाएँ संसार की विभिन्न जगह से उपलब्ध ज्ञान और स्त्रोतों से प्राप्त होती है। यही सामग्री अनुवाद की सहायता से विभिन्न भाषाओं की पत्रिकाओं में आती है। सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं के दप्तरों में अनुवादकों की जरूरत होती हैं।

4) पर्यटन क्षेत्र :

अनुवाद पेशे का सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्र है पर्यटन क्षेत्र। विश्व के कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन क्षेत्र पर निर्भर है। मनुष्य की घुमक्कड मूल प्रवृत्ति है। मनुष्य पर्यटन के अनेक उद्देश्य हो सकते हैं। जिसमें विभिन्न देशों की सभ्यता, संस्कृति को देखना। प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना तथा वहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक स्थिति और उसकी विशेषता आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना आदि हो सकते हैं। विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को आपस में संपर्क स्थापित करने के लिए अनुवादक एवं दुभाषिक का सहारा लेना पडता है। ऐसे में हिंदी भाषा के साथ अन्य भाषा का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति जिसे देश-विदेश की भौगोलिक प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक स्थितियों का अच्छा खासा ज्ञान हो वह इस क्षेत्र में अपना पाँव जमाकर रोजगार प्राप्त कर सकता है।

5) फिल्म क्षेत्र :

फिल्म जगत को ख्याब्बों की जिंदगी कहा जाता है। दर्शकों को प्रभावित करने की अद्‌भुत क्षमता तथा जन-जन तक पहुँचने वाला गतिशील माध्यम है। विश्व की अधिकतम फीचर फिल्में अनुवाद पर निर्भर है। भूमंडलीकरण के इस युग में फिल्मों का डबिंग लोकप्रिय होता जा रहा है। अंग्रेजी फिल्मों का अनुवाद हिंदी में होता है। जैसे - ज्युरासिक पार्क, टर्मिनेटर, हरी पॉटर, टायटेनिक आदि। भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में तो अन्य भारतीय भाषाओं की फिल्मों का हिंदी भाषा में अनुवाद होता है और कही हद तक वह सुपरहिट भी हो जाती है।

जैसे – राउडी राठौर, गजनी, वान्टेड आदि।

दूरदर्शन तथा निजी चैनेलों में प्रसारित कार्यक्रमों का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में होता है। वह हिंदी भाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं में एक साथ प्रसारित होते हैं।

जैसे- रामायण, महाभारत, विक्रम वेताल आदि।

आज के लोकप्रिय चैनलों में डिस्कवरी चैनल, नेशनल जिऑग्राफी चैनल आदि पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रम वाईल्ड वर्सेस मैन, फूड फॅक्टरी, इंजिनियरिंग वर्ल्ड आदि हिंदी भाषा में अनुवादित होते हैं।

6) समाचार क्षेत्र :

वैश्वीकरण के युग में संसार के किसी भी कोने की खबर कुछ पल में हमें न्यूज चैनलों में दिखाई देती है। वह खबर एक भाषा में मिलती है उसका अनुवाद विश्वभर की विभिन्न भाषाओं में होता है और एक ही समय में वह संसार के सभी चैनलों में अपनी-अपनी भाषाओं में प्रसारित की जाती हैं। संगीत, खेलकूद, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक गतिविधियों को समाचार के द्वारा जन-जन तक प्रसारित किया जाता है। इसमें बाजार समाचार, शेयर बाजार, नए उत्पादन, व्यवसाय जगत की खबरों को एक भाषा में बनाकर अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाता है।

भारत बहुभाषी देश है। भारत के विभिन्न राज्यों में 22 भाषाओं को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। ऐसी स्थिति में अनुवादक अहम् भूमिका निभाता है।

7) शिक्षा क्षेत्र :

शिक्षा क्षेत्र आज ग्लोबल हो गया है। आज विश्व संसार में इंटरनेशनल पाठयक्रम का स्कूल और कॉलेजों में प्रचलन हो रहा है। पर शिक्षा वैज्ञानिकों का कहना है कि छात्रों को मातृभाषा में शिक्षा देने से उनकी ज्ञानग्रहन की क्षमता तेज गति से होती हैं। छात्रों राष्ट्रीय तथा वैश्विक ज्ञान से जोडने का प्रभावी साधन है अनुवाद। वैश्विक शिक्षा प्रणाली, ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान प्रविधियाँ, पद्धतियाँ आदि को मातृभाषा में रूपातंरित करके आधुनिक ज्ञान देने का प्रयास किया जाता है। भूमंडलीकरण के युग में ग्लोबल क्लास रूम संकल्पना नया रूप ले रही है। इस माध्यम से देश-विदेश के विषयतज्ञ छात्रों को संबोधित करते हैं तथा पढ़ाते हैं। इस स्थिति में दो भाषा का ज्ञान अर्जित व्यक्ति यानी दुभाषिया (अनुवादक) अपने कौशल से इसे सहजाभिव्यक्ति कराता है। छात्रों को पाठयक्रम मातृभाषा में सहज अनुभूति मिलने में सहायक तथा प्रेरक भाषा बनती है। यह ज्ञानार्जन की सर्वोच्च स्थिति अनुवादक के कारण उपलब्ध होती है।

8) कृषि क्षेत्र :

भारत देश कृषि प्रधान देश है। भारतीय किसान देश-विदेश की खेती, फसल, उत्पाद बढ़ाने के तौर-तरिके, आधुनिक औजारे, नयी-नयी पद्धतियाँ और तंत्रज्ञान को आत्मसाथ करके अपनी परंपरागत खेती पद्धति का त्याग किया है। जहाँ भारतीय किसान एक एकड में ४० टन गन्ना उत्पाद करता था, आज वह 80 से 100 टन तक उत्पाद बढ़ा चुका है। आज वह एक साल में अपने खेत में विभिन्न प्रकार की फसल लेकर, उत्पाद क्षमता बढाकर अपने व्यक्तिगत उन्नति के साथ देश के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इसका पूरा श्रेय अनुवादक को जाता है। विदेशो में हो रही खेती, किसानों की स्थिति, आत्मविश्वास, तंत्रज्ञान, पर्यावरण बदल, फसल पर किया जाने वाला छिडकाव आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी किसानों को अपनी भाषा में देते हैं। अनुवादक उनके लिए विदेशी खेतीदूत बन गया है।

9) प्रशासकीय क्षेत्र :

14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा घोषित किया पर आज भी प्रशासकीय कार्यों में हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। प्रशासकीय व्यवस्था में उसके विभिन्न विभाग होते हैं। केन्द्रीय स्तर से लेकर राज्यस्तर तथा अधिनस्थ कार्यालयों में संपर्क तथा समन्वय स्थापित करना पडता है। विभिन्न प्रकार के कार्यालयीन कामकाज के लिए प्रेसनोट, टिप्पणी, संक्षेपण, पल्लवन आदि कार्यालयीन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है तथा विभागों में अतित के कुछ प्रमाणपत्र, दस्तावेज, संदर्भ पत्र-पत्राचार आदि होते हैं। उन्हें समझने के लिए तथा व्यवहार में प्रयुक्त करने के लिए अनुवादक अहम्‌ भूमिका निभाता है।

10) वाणिज्य क्षेत्र :

भूमंडलीकरण और उदारीकरण के युग में यह विश्व संसार एक परिवार बना हुआ है। गाँव, राज्य, देश की सीमाएँ खत्म हो चुकी है। प्रत्येक देश, निजी उद्योगपति एवं व्यावसायिक व्यापार का क्षेत्र विस्तृत करना चाहता है। आज विश्व के किसी भी कोने में उत्पादित वस्तु दुनिया के किसी देश के उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए स्थानिय भाषा को प्रधानता दी जाती है। निजी व्यावसायिक तथा उद्योगपति बाजार देश की राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा जनभाषा में अनुवाद करनेवाले अनुवादक को रोजगार प्राप्त करा देती है।

11) क्रीडा क्षेत्र :

मनोरंजन के साथ खेलकूद व्यक्ति के जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। देश-विदेशों में स्थानिय खेल से ऑलम्पिक खेल तक विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते हैं तथा देश-विदेशों में देखे जाते है। आजकल क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, नेमबाजी, शतरंज, ॲथलेटिक, कबड्डी आदि खेल के लिए प्रेक्षक बडे पैमाने पर मिलते हैं। खेल का आनंद मिलने के लिए उन्हें अपनी भाषा में कॉमेंट्री सुनना अनिवार्य होता है। यह सोपस्कर अनुवादक सहज, सरल भाषा में करता है जिससे प्रेक्षक खेल से रू-ब-रू होते हैं।

12) विज्ञापन क्षेत्र :

विज्ञापन को आकर्षक तथा उपभोक्ताओं के मस्तिष्क पर राज करने के लिए विज्ञापन की भाषा सहज, सरल, गेयतात्मक तथा जनभाषा होना अनिवार्य होता है। अगर भारत की बात करे तो यह बहुभाषी देश है। ऐसी स्थिति में विज्ञापनों का अनुवाद करना अनिवार्य होता हैं। अनुवादक भाषा क्षेत्र के अनुसार उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए जनभाषा में विज्ञापनों का अनुवाद करता है। वर्तमान काल में हिंदी भाषा में बने विज्ञापन भारत के साथ विदेशों में सुप्रसिद्ध है।

13) राष्ट्रीयकृत बैंक तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों का क्षेत्र :

वैश्वीकरण के युग ने सारे क्षेत्र में स्पर्धात्मक रूप को बढावा दिया है। जिसके कारण बैंक हो या बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करना तथा उसका स्तर बनाए रखना चुनौती पूर्ण कार्य बन गया है। देश-विदेश के हर क्षेत्र के साथ, हर भाषिकों के साथ व्यवहार करना, ग्राहकों के साथ मैत्रीपूर्ण संपर्क बनाना, तथा उन्हें सुविधाएँ प्रधान करना, उनके साथ मेल-जोल बनाकर बैंक तथा कंपनिया अपना सेल बढाने का और मार्केटिंग का कार्य करती हैं। जो व्यक्ति बहुभाषी है उसे यह अवसर मिलता है। यह संस्थाएँ जहाँ कार्य करती है वहाँ की भाषा का ज्ञान और कंपनी जिस क्षेत्र की है वहाँ की भाषा का ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों का चुनाव करती है।

14) धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र :

विश्व मानस पटल पर विभिन्न जाति, धर्म, पंथ के लोक आवास करते हैं। उनके रीति-रिवाज, रूढी-परंपरा, उत्सव-त्यौहार, लोकगीत, साहित्य ग्रंथ और उनकी भाषा अलग-अलग होती है। वैश्वीकरण के कारण मनुष्य विविध जाती-धर्म के लोग, संस्कृति, धर्म तथा ज्ञान-विज्ञान से जुडना चाहता है और अनुवादक की सहायता से वह उनसे जुड़ जाता है - जैसे कि हिंदू धर्म के ग्रंथ रामायण, महाभारत विश्व की विविध भाषा में अनुवादित है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति, विविध कलाओं में संबंध स्थापित करने के लिए और उसके प्रचार-प्रसार के लिए अनुवादक अहम भूमिका निभाता है। अनुवादक को अनुवाद करते समय शब्दों का चयन सोच-समझकर करना चाहिए ताकि किसी धर्म या संस्कृति की धरोहर या प्रतिष्ठा को ठेस ना पहुँचे। इस प्रकार विभिन्न जगहों पर अनुवादक के रूप में कार्य करने का सुअवसर मिलते हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में सरकारी नौकरी के अवसर :

भारत की राजभाषा हिंदी है। विश्व में हिंदी को समझने तथा बोलने वालों की तादात ज्यादा हैं। आज सबसे ज्यादा रोजगार अनुवाद के क्षेत्र में मिलते हैं। युवकों को अनुवादक के रूप में सरकारी कई अवसर मिलते हैं। जिसमें अनुवादक, जूनियर अनुवादक और सीनियर अनुवादक आदि पदों के लिए विज्ञापन प्रसारित होते हैं। कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी), भारतीय रेल्वे, लोकसभा, राज्यसभा, सभी मंत्रालयों के विभिन्न विभागों के साथ कई सरकारी पदों पर कार्य करने का अवसर मिलते हैं।

3.3.3.1 जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर (Junior Hindi Translator) :

हिंदी देश की राजभाषा होने के कारण मंत्रालयों, विभागों और अधीनस्थ कार्यालयों में जो भी कार्य, पत्राचार, योजना, परियोजना तथा विभिन्न तरह के कार्य राज्य की राजभाषाओं में या अंग्रेजी में होता है। प्रत्येक विभाग की जानकारी राजभाषा में करने की जिम्मेदारी उस विभाग के जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर की होती है। कर्मचारी चयन आयोग की ओर से जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए विज्ञापन दिया जाता है।

कहाँ मिलता है अवसर :

केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा, रेल मंत्रालय, सशस्त्र सेना मुख्यालय, केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, कार्यालयों, अधीनस्थ सभी कार्यालयों, राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों तथा अधीनस्थ विभिन्न कार्यालयों, कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग में, राष्ट्रीयकृत बैंकों में कार्य करने का अवसर मिलता है।

जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए शैक्षिक योग्यता :

1. मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक स्तर पर अनिवार्य या वैकल्पिक विषय अथवा परीक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के साथ हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि
2. हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से अनुवाद डिप्लोमा अथवा प्रमाणपत्र पाठयक्रम **अथवा**

भारत सरकार के उपक्रम सहित केन्द्रीय अथवा राज्य सरकार के कार्यालयों में हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद कार्य करने का दो वर्ष का अनुभव।

जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए चयन प्रक्रिया :

जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए अभ्यर्थी को दो चरणों से गुजरना पड़ता है।

1. लिखित परीक्षा
2. साक्षात्कार (दस्तावेज़ सत्यापन)

जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए पाठयक्रम और परीक्षा :

1. लिखित परीक्षा :

जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए पहले लिखित परीक्षा देनी पड़ती है उसमें दो प्रश्नपत्र होते हैं। उसमें पहला प्रश्नपत्र कंप्यूटर आधारित होता है। इस जिसमें हिंदी और अंग्रेजी भाषा के ज्ञान पर आधारित होता है।

1. प्रश्नपत्र 1 (वस्तुनिष्ठ) :

प्रश्नपत्र 1 (वस्तुनिष्ठ) के लिए निम्नलिखित पाठ्यक्रम होता है–

सामान्य हिंदी :

सामान्य हिंदी परीक्षा में शब्द (समानार्थक, पर्यायवाची, विलोम), शब्दावली, समानार्थक शब्द, रिक्त स्थानों की पूर्ति करना (सही शब्दों को चुनना), गलती पहचानना (वर्तनी), वाक्यों का अनुवाद, वाक्यांश को शुद्ध करना, मुहावरों का सही अर्थ चुनना, प्रत्यय, उपसर्ग, बहुवचन आदि पर वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाते हैं। हिंदी भाषा के लिए 100 प्रश्न 100 अंकों के लिए पूछे जाते हैं।

अंग्रेजी भाषा :

सामान्य अंग्रेजी में वाक्य व्यवस्था, रिक्त स्थानों की पूर्ति, मुहावरे और वाक्यांश, शब्दावली, काल और काल परिवर्तन, समानार्थक शब्द, विलोम शब्द, क्रिया, परीक्षण, गलतियों का सुधार आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं। अंग्रेजी भाषा के लिए 100 प्रश्न 100 अंकों के लिए पूछे जाते हैं।

प्रश्नपत्र 1 का स्वरुप :

जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर प्रश्नपत्र 1 का स्वरुप निम्नलिखित होता है –

<table>
<tr><th>अ.क्र.</th><th>विषय</th><th>प्रश्न</th><th>अंक</th><th>समय</th></tr>
<tr><td rowspan="2">प्रश्नपत्र 1</td><td>सामान्य हिंदी</td><td>100</td><td>100</td><td rowspan="2">2 घंटे</td></tr>
<tr><td>सामान्य अंग्रेजी</td><td>100</td><td>100</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>कुल 200</td><td>200</td><td>120 मिनट</td></tr>
</table>

इस परीक्षा के लिए नकारात्मक अंकन प्रणाली (Negative Marking System) होती है। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 0.25 अंक अभ्यर्थी द्वारा प्राप्त किए हुए अंकों से काट दिए जाते है।

प्रश्नपत्र 2 (वर्णनात्मक) का पाठ्यक्रम और परीक्षा :

प्रश्नपत्र 2 उम्मीदवार का भाषा और साहित्य ज्ञान परखने के लिए तैयार किया जाता है। शब्दों, वाक्यांशों और मुहावरों का सही उपयोग पर प्रश्न पूछे जाते हैं। इसके अलावा, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में सटीक और प्रभावी रूप से लिखने की क्षमता को जाँचा जाता हैं। इसमें

1. हिंदी से अंग्रेजी और
2. अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करना।
3. हिंदी और अंग्रेजी में निबंध लिखना होता हैं।

<table>
<tr><th>अ.क्र.</th><th>विषय</th><th>प्रश्न</th><th>अंक</th><th>समय</th></tr>
<tr><td rowspan="2">प्रश्नपत्र 2</td><td>अनुवाद</td><td>2</td><td>100</td><td rowspan="2">2 घंटे</td></tr>
<tr><td>निबंध</td><td>2</td><td>100</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>कुल 200</td><td>200</td><td>120 मिनट</td></tr>
</table>

यह परीक्षा उम्मीदवार का अनुवाद कौशल और दोनों भाषाओं का सही, उचित एवं प्रभावशाली ढंग से लिखने एवं समझने की योग्यता का परीक्षण करने के लिए आयोजित की जाती है। इस प्रश्नपत्र में अनुवाद करने के लिए 2 (दो) गद्यांश होंगे, जिसमें एक गद्यांश का हिंदी से अंग्रेजी में तथा अंग्रेजी का हिंदी में अनुवाद करना होगा। अंग्रेजी भाषा में एक और हिंदी भाषा में एक विषय पर निबंध लिखना होता है। प्रश्नपत्र का स्तर स्नातक स्तर का होता है।

दस्तावेज सत्यापन (Document Verification) :

जो अभ्यर्थी प्रश्नपत्र क्र. 1 और प्रश्नप्रत्र 2 में सफलता प्राप्त करते हैं सिर्फ उन्हें दस्तावेज सत्यापन के लिए बुलाया जाता है। दस्तावेज सत्यापन के बाद अभ्यर्थियों का न्यूनतम अंकों के आधार पर चयन किया जाता है। विभिन्न विभागों में पदों की आवश्यकता के अनुसार और योग्यता के बूते पर तथा अभ्यर्थियों द्वारा दिए गए विकल्प के आधार पर चयन किया जाता है।

3.3.3.2 सीनियर हिंदी अनुवादक (Senior Hindi Translator) :

सीनियर अनुवादक कार्यालयों में अहम् भूमिका निभाते हैं। अंग्रेजी के दस्तावेज हिंदी में अनुवाद करना, आधिकारिक (राजभाषा/सरकारी) भाषा के प्रावधानों का उचित अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए उनके विभाग, दिये हुए आदेशों की कार्यवाही करना, अपने विभाग तथा कार्यालयों की कार्यान्वयन समिति के द्वारा तैयार एजेंडे की पूर्ति के लिए प्रयास करना, अपने कार्यालय में बार-बार प्रयुक्त होनेवाली हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली बनाने में सहयोग देना, कार्यालय से संबंधित अंग्रेजी दस्तावेज को हिंदी में लाने हेतु कार्य करना आदि कार्य सीनियर हिंदी अनुवाद को करने होते हैं।

कहाँ मिलता है अवसर :

केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा, रेल मंत्रालय, सशस्त्र सेना मुख्यालय, केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, कार्यालयों, अधिनस्थ सभी कार्यालयों, राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों तथा अधिनस्थ विभिन्न कार्यालयों, कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग में, राष्ट्रीयकृत बैंकों में कार्य करने का अवसर मिलता है।

सीनियर अनुवादक पद के लिए शैक्षिक योग्यता :

1. मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक स्तर पर अनिवार्य या वैकल्पिक विषय अथवा परीक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के साथ हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि। या

   किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक स्तर पर अनिवार्य अथवा वैकल्पिक विषय के रूप में अथवा परीक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी तथा हिंदी माध्यम से हिंदी अथवा अंग्रेजी छोडकर किसी भी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि। या

   किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक स्तर पर अनिवार्य अथवा वैकल्पिक विषय के रूप में हिंदी अथवा अंग्रेजी विषय के साथ उनमें से एक परीक्षा के माध्यम के रूप में और अन्य अनिवार्य तथा वैकल्पिक विषय के रूप में हिंदी अथवा अंग्रेजी को छोडकर किसी भी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि।

2. हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से अनुवाद डिप्लोमा अथवा प्रमाणपत्र पाठयक्रम उत्तीर्ण होना अनिवार्य होता है। अथवा भारत सरकार के उपक्रम सहित केन्द्रीय अथवा राज्य सरकार के कार्यालयों में हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद कार्य में पाँच वर्ष का अनुभव होना आवश्यक होता हैं।

सीनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए चयन प्रक्रिया :

सीनियर हिंदी ट्रांसलेटर पद के लिए अभ्यर्थी को दो चरणों से गुजरना पड़ता है।

1. लिखित परीक्षा
2. साक्षात्कार (दस्तावेज़ सत्यापन)

सीनियर हिंदी अनुवादक पद के लिए पाठयक्रम :

जूनियर अनुवादक और सीनियर अनुवादक के लिए दो प्रश्नपत्र अनिवार्य होते हैं। उसमें पहला प्रश्नपत्र कंप्यूटर आधारित होता है।

प्रश्नपत्र –1 कंप्यूटर आधारित :

क) सामान्य हिंदी (वस्तुनिष्ठ)	प्रश्न 100	अंक 100
ख) सामान्य अंग्रेजी (वस्तुनिष्ठ)	प्रश्न 100	अंक 100

इस प्रश्नपत्र का समय दो घंटे का होता है। इसमें बहुविकल्पों में से सही विकल्प चुनना होता है। इस प्रश्नपत्र में उम्मीदवारों की भाषा और साहित्य का ज्ञान, उचित शब्द का ज्ञान, मुहावरों तथा वाक्यांशों का सही प्रयोग, भाषा को सही तथा ठीक–ठाक और प्रभावशाली ढंग से लिखने की उनकी योग्यता को परखा जाता है।

प्रश्नपत्र – 2 अनुवाद और निबंध (वर्णनात्मक) :

उम्मीदवार का अनुवाद कौशल और दोनों भाषाओं को सही, ठीक–ठाक एवं प्रभावशाली ढंग से लिखने एवं समझने में उनकी योग्यता का परीक्षण करने के लिए लिया जाता है। इस प्रश्नपत्र में अनुवाद करने के लिए 2 (दो) गद्यांश होंगे, जिसमें एक गद्यांश का हिंदी से अंग्रेजी में तथा अंग्रेजी का हिंदी में अनुवाद करना होगा। अंग्रेजी भाषा में एक और हिंदी भाषा में एक विषय पर निबंध लिखना होता है।

प्रश्नपत्र का स्तर स्नातक स्तर का होता है।

सीनियर हिंदी अनुवादक पद के लिए परीक्षा योजना :

सीनियर अनुवादक पद के लिए दो प्रश्नपत्र होते हैं। पहला प्रश्नप्रत्र कंप्यूटर आधारित वस्तुनिष्ठ होता है और दूसरा वर्णनात्मक होता है।

सीनियर हिंदी अनुवादक पद के लिए प्रश्नप्रत्र का स्वरूप :

अ.क्र.	पेपर	प्रश्नप्रत्र की पद्धति	विषय	प्रश्नों की संख्या	गुण	समय
1.	वस्तुनिष्ठ (Objective)	कॅप्यूटर	सामान्य हिंदी	100	100	2 घंटे (दृष्टि और दिव्यांग के लिए 2.40 मिनट)
			सामान्य अंग्रेजी	100	100	
2.	परंपरागत (Discriptive)	वर्णनात्मक	अनुवाद तथा		200	2 घंटे (दृष्टि और दिव्यांग के लिए 2.40 मिनिट)

सूचना : 1. पेपर क्र. 1 वस्तुनिष्ठ पेपर में बहु-विकल्पीय प्रश्न होंगे। पेपर क्र. 1 में जो उम्मीदवार आयोग द्वारा निर्धारित विवेकानुसार न्यूनतम अर्हक मानक (Cut Off) अंक प्राप्त करते हैं उन उम्मीदवारों का ही पेपर क्र. 2 का मूल्यांकन किया जाता है।

2. प्रश्नपत्र क्र. 1 में गलत उत्तर के लिए 0.25 नकारात्क अंक काट दिए जाते हैं।

2. साक्षात्कार (दस्तावेज़ सत्यापन) :

अभ्यर्थियों का केवल परीक्षा के प्रश्नपत्र क्र. 1 और प्रश्नप्रत्र 2 में न्यूनतम अंकों के आधार पर सफल अभ्यर्थियों का चयन किया जाता है। परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों के प्रमाणपत्रों की जाँच की जाती है। विभिन्न विभागों के रिक्त पदों के अनुसार अभ्यर्थियों की योग्यता, स्थिति और उनके द्वारा दिए गए विकल्प के आधार पर चयन किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए :

www.rajyasabha.com

www.rajyasabha.nic.in

www.indianrailwayrecruitment.com

www.jointrecuritmentcell.com

3.3.4 पत्रकारिता में रोजगार :

विज्ञान की तरक्की कारण जनसंचार माध्यमों अविश्वसनीय बदलाव दिखाई देते हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के कारण पत्रकारिता क्षेत्र में तेजी और कम समय में नाम, रुतबा, जनसेवा के साथ मेवा प्राप्ति के अवसर मिलते हैं। यही कारण है की मीडिया में करियर बनाने के प्रति युवाओं का रुझान बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है। नागरी के साथ ग्रामीण युवक पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना करियर बनाते हुए दिखाई देते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि आज के युवा खतरों से खेल ते हुए चुनौतियों और रोमांच से भरी जिंदगी को पसंद करते है।

पत्रकारिता ऐसा क्षेत्र हैं जिसमें युवाओं के लिए रोजगार की कमी नहीं हैं। इसलिए युवक भाषा अध्ययन के साथ पत्रकारिता जैसे प्रोफेशनल कोर्स करते है। यह करियर के साथ-साथ अभिव्यक्ति का बेहतर माध्यम भी है। वर्तमान में समाचार-पत्रों व न्यूज चैनलों की बढ़ती संख्या से युवाओं के लिए रोजगार की संभावनाएं बहुत ज्यादा हो गई हैं। मीडिया हर व्यक्ति से जुड़ा सशक्त माध्यम है। वर्तमान में मीडिया के सभी माध्यमों की बढ़ती तादाद नव रोजगारों का निर्माण करती है। इन जगहों पर योग्य कर्मियों की आवश्यकता भी काफी बढ़ गई है। विकसित जनसंचार माध्यमों के बूते पर युवाओं को अपनी रूचि के अनुसार पत्रकारिता में अपने क्षेत्र चुनाव कर सकते हैं। समाचार पत्र, पत्र पत्रिकाओं की व्यक्ति के जीवन में अहम भूमिका है। समाचार पत्र विश्व की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करा देता है। पत्र पत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्ध वार्षिक, वार्षिक रूप में प्रकाशित होती हैं तथा मनुष्य की रूचि के अनुसार वर्गीकृत होती है। जैसे साहित्यिक, राजनीतिक, धार्मिक, सरकारी, कृषी, उद्योग, वाणिज्य, विज्ञान, शिक्षा, महिला, बाल पत्रिकाएँ आदि अपना योगदान देती हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में एक सफल करियर के रूप में किसी भी व्यक्ति को जिज्ञासु, दृढ़ इच्छा शक्ति, सूचना को वास्तविक, संक्षिप्त तथा प्रभावी रूप में प्रस्तुत करने की अभिरुचि रखने वाला, किसी के विचारों को सुव्यवस्थित करने तथा भाषिक और लिखित रूपों में अभिव्यक्त करने में महारथ हासिल होना चाहिए। दबाव में कार्य करने के दौरान भी नम्र एवं शांत चित्त बने रहना एक अतिरिक्त योग्यता होती है। जीवन के सभी क्षेत्रों से व्यक्तियों का साक्षात्कार लेते समय पत्रकार को व्यावहारिक, आत्मविश्वासपूर्ण तथा सुनियोजित रहना चाहिए। उसे प्रासंगिक तथ्यों को अप्रासंगिक तथ्यों से अलग करने में सक्षम होना चाहिए। अनुसंधान तथा सूचना की व्याख्या करने के लिए विश्लेषण कुशलता होनी चाहिए।

पत्रकारिता में करियर एक प्रतिष्ठित व्यवसाय है और कुछ मामलों में एक उच्च वेतन देने वाला व्यवसाय है, जो युवाओं को आकर्षित कर रहा है। किसी भी राष्ट्र के विकास में पत्रकारिता एक अहम भूमिका निभाती है। पत्रकारिता ही वह साधन है, जिसके माध्यम से हमें समाज की दैनिक घटनाओं के बारे में सूचना प्राप्त होती है। वास्तव में पत्रकारिता का उद्देश्य जनता को सूचना देना, समझाना, शिक्षा देना और उन्हें प्रबुद्ध करना होता है।

3.3.4.1 पत्रकारिता और रोजगार :

एक मीडिया हाउस में पत्रकारिता से सम्बंधित 27 विभाग होते हैं जिसे आप अपनी प्रतिभा और अपने रूचि के हिसाब से चुन सकते हैं जैसे अगर आपकी रुचि राजनीति में है तो आप राजनीतिक पत्रकारिता कर सकते हैं अगर आपको विज्ञान में रूचि रखते हैं तो आप विज्ञान की पत्रकारिता कर सकते है अगर आपका मनपसन्द विषय अर्थशास्त्र है तो आप उस विषय को लेकर भी अच्छे पत्रकार बन सकते हैं। जिस विषय में आपकी रुचि है आप उस विषय के पत्रकार बन सकते हैं। पत्रकार को एक बुद्धिजीवी इंसान माना जाता है ऐसा कहा जाता है कि पत्रकार की सोच और नजरिया आम लोगो से अलग होती है। क्योंकि पत्रकार की नज़र हमेशा दूसरे पहलु पर रहती है। पत्रकारों के लिए अवसर अनंत है। किंतु साथ ही साथ किसी भी पत्रकार का कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। पत्रकार का कार्य :

1) साक्षात्कार, जाँच, अवलोकन के माध्यम से समाचार तथा घटनाओं के बारे में तथ्यों को इकट्ठा और अन्वेषण करना।
2) नई सामग्री बनाने के लिए समाचार संपादक और संवाददाताओं के साथ कार्य करना।
3) अख़बारों, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के लिए कहानियों की रिपोर्ट करना और लिखना।

पत्रकार के लिए सुविधाएँ :

मान्यता प्राप्त पत्रकारों को दुर्घटना बिमा राशी ५ लाख रूपए, शस्त्र लाइसेंस प्रदान किया जाता है, टोल प्लाजा मुक्त होता है आदि सुविधाएँ दी जाती है।

कहाँ मिलता है रोजगार :

युवाओं को समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, न्यूज चैनल्स आदि में रोजगार के अनेक अवसर मिलते हैं। फील्ड में रिपोर्टर, प्रेस फोटोग्राफर, संपादकीय विभाग में उपसंपादक, कॉपी राइटर, उद्घोषक के रूप में कार्य

कर सकते हैं। जनसंपर्क के क्षेत्र में भी रोजगार की संभावनाएँ हैं। सरकारी विभागों, निगमों, विश्वविद्यालयों एवं प्राइवेट संस्थानों में जनसंपर्क अधिकारी, सहायक सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी के तौर पर नियुक्ति पा सकते हैं।

पत्रकारिता की पढ़ाई करने के बाद आपको न्यूज एजेंसी, न्यूज वेबसाइट, प्रोडक्शन हाउस, प्राइवेट और सरकारी न्यूज चैनल, प्रसार भारती, पब्लिकेशन डिजाइन, फिल्म मेकिंग में रोजगार से अवसर मिलते हैं। आप चाहें तो फ्रीलान्सिंग भी कर सकते हैं।

एक करियर के रूप में पाँच ऐसे मुख्य क्षेत्र हैं जिनमें पत्रकारिता के इच्छुक व्यक्ति रोजगार ढूंढ़ सकते हैं –

अनुसंधान एवं अध्यापन :

उच्च शिक्षा, पत्रकारों के लिए रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पत्रकारिता में पी.एच.डी. प्राप्त व्यक्ति कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थाओं में रोजगार तलाशते हैं। कई अध्यापन पदों पर विशेष रूप से विश्वविद्यालयों और संस्थानों में अनुसंधान कार्यकलाप अपेक्षित होते हैं। कई संस्थाएं उन्नति के एक प्रारंभिक मार्ग के रूप में अनुसंधान अथवा अध्यापन पर अधिक बल देती है। इन सभी जगहों पर उच्च शिक्षित युवक रोजगार प्राप्त कर सकता है।

प्रिंट पत्रकारिता :

प्रिंट पत्रकारिता समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाओं तथा दैनिक पत्रों के लिए समाचारों को एकत्र करने एवं उनके सम्पादन से संबद्ध हैं। समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं, वे बड़ी हों या छोटी, हमेशा विश्वभर की समाचारों तथा सूचना का मुख्य स्रोत रही हैं और लाखों व्यक्ति उन्हें प्रतिदिन पढ़ते हैं। कई वर्षों से प्रिंट पत्रकारिता बडे. परिवर्तन के साथ आज भी अपना महत्त्व प्रस्तापित करती है। आज समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएं विविध विशेषज्ञतापूर्ण वर्गों जैसे राजनीतिक घटनाओं, व्यवसाय समाचारों, सिनेमा, खेल, स्वास्थ्य तथा कई अन्य विषयों पर समाचार प्रकाशित करते हैं, जिनके लिए व्यावसायिक रूप से योग्य पत्रकारों की मांग होती है। प्रिंट पत्रकारिता में कोई भी व्यक्ति सम्पादक, संवाददाता, रिपोर्टर, आदि के रूप में कार्य कर सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता :

इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता का विशेष रूप से प्रसारण के माध्यम से जन-समुदाय पर पर्याप्त प्रभाव है। दूरदर्शन, रेडियो, श्रव्य, दृश्य (ऑडियो, वीडियो) और वेब जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने दूर-दराज के स्थानों में समाचार, मनोरंजन एवं सूचनाएं पहुँचाने का कार्य किया है। इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता में कोई भी व्यक्ति रिपोर्टर, लेखक, सम्पादक, अनुसंधानकर्ता, संवाददाता के रूप में रोजगार प्राप्त कार्य कर सकता है।

वेब पत्रकारिता :

पत्रकारिता के इस सुविधा ने पाठक, विजिटर्स को फीडबैक की सुविधा दी जाती है। इसमे आप समाचार निर्माता से सीधे सवाल पूछ सकते हैं। स्मार्ट फोन के अविष्कार से यह दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ रही है। पत्रकारिता के भविष्य के रूप में इस माध्यम को स्थापित किया जा रहा है।

जनसंपर्क अधिकारी :

यह क्षेत्र पत्रकारिता से थोड़ा हटकर है, जर्नलिज्म की पढ़ाई के दैरान इसे भी पढ़ाया जाता है। किसी व्यक्ति, संस्थान की छवि को लोगों की नजर में सकारात्मक रुप से प्रस्तुत करना जनसंपर्क (पब्लिक रिलेशन) में आता हैं। इसके बूते पर बिजनेस हाउसेस, पॉलिटिकल पर्सन्स, सेलेब्रेटी और संस्थानों के लिए काम करने का अवसर मिलता है।

3.3.4.2 विदेशों में पत्रकारिता के अवसर :

हिंदी भाषा को पढ़ने, बोलने और समझने वालों की तादात पूरे विश्व में प्रचुर मात्रा में मिलती है। इसी कारण हिंदी आम लोगों की भाषा बनी हुई हैं। वे चाहते हैं कि सभी समाचार, देश-विदेश की ख़बरे, मनोरंजन की बातें, खेलों के समाचार, तकनीकी जानकारी आदि अपनी भाषा में प्राप्त हों। इसी कारण विदेशों में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को बड़े शौक के साथ पढ़ा जाता हैं। इसी कारण विदेशों में पत्रकारिता में एक सुअवसर मिलता है।

विदेशों में प्रकाशित कुछ हिंदी प्रत्रिकाएँ :

नेपाल :- प्रतिध्वनि, सही रास्ता, जनचेतना, रुपरेखा आदि।

बर्मा :- प्राची, कलश, जागृति, बह्मभूमि आदि।

श्रीलंका :- जनता, लंकादीप, वीरकेसरी आदि।

जापान :- सर्वोदय, ज्वालामुखी आदि।

चीन :- चीन सचित्र आदि।

रूस :- युवक दर्पण, सोवियंत नारी पत्र (मास्को)।

ब्रिटन व नार्वे :- अमरदीप, प्रवासिनी, शांति दूत, हिंदुस्थान (1883), कालाकांकर (अवध) (1885)।

मॉस्को :- सोवियत संघ (1972)।

फ्रांस :- यूनिस्को कुरियर।

मॉरीशस :- हिन्दी में अनेक पत्र-पत्रिकाएं समय-समय पर प्रकाशित हुई। जिसमें हिन्दुस्तानी, जनता, आर्योदय, कांग्रेस, हिन्दू धर्म, दर्पण, इण्डियन टाइम्स, अनुराग, जागृति, महाशिवरात्रि एवं आभा आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मारीशस से प्रकाशित होने वाला हिन्दी का सर्वप्रथम पत्र हिन्दुस्तानी था। इसका प्रकाशन 1909 है। इसके प्रथम सम्पादक मणिलाल थे। सोमदत्त बरबौरी ने पोर्ट लुई से 1968 में त्रैमासिक अनुराग का सम्पादन करके हिन्दी पत्रकारिता का उन्नयन किया।

सूरीनाम :- दैनिक प्रकाश और शांतिदूत तथा मासिक ज्योति विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

दक्षिण अफ्रीका :- अमृतसिंधु नामक (मासिक पत्र नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक भवानी दयाल थे। इसका प्रकाशन 1990 से आरम्भ हुआ था। इसी क्रम में दक्षिण अफ्रीका के

डरबन नामक शहर से धर्मवीर नामक पत्र का प्रकाशन 1916 में आरम्भ हुआ था। यह एक साप्ताहिक पत्र था।

बर्मा :– प्राची प्रकाश जागृति तथा ब्रह्म भूमि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्राची प्रकाश दैनिक पत्र रंगून से प्रकाशित होता है।

फिजी :– शांतिदूत।

कनाडा :– विश्वभारती, जीवन ज्योति आदि।

हांगकांग :– भारतीय विविध।

अमेरिका :– संजीविनी।

त्रिनिनाद :– कोहिनूर।

समाज के प्रति अपना दायित्व समझकर सत्यता के आधार पर समाज परिवर्तन तथा समाज का पुनर्निर्माण करने का बीड़ा उठाने वाला व्यक्ति एक सफल पत्रकार बन सकता है और रोजी–रोटी के साथ समाज में रुतबा और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है।

3.3.4.3 उप संपादक (हिंदी) (Sub Editor Hindi) :

उपसंपादक संपादक द्वारा तैयार की हुई नीतियों का निर्धारण करता है। समाचार पत्र की कार्य व्यवस्था देखना उसका सुयोग्य अनुपालन करके समाचार पत्र के हर एक कोने से रु–ब–रु होकर वहाँ की त्रूटीयों को दूर करके संपादक के सामने प्रस्तुत करना उपसंपादक का कार्य होता है।

देश के विविध मंत्रालय विभागों में योजनाओं का संकलन करना, नई योजनाओं की जानकारी तैयार करना और जनलोगों तक पहुँचाने के लिए उसे प्रकाशित करना अनिवार्य होता है। प्रकाशित जानकारी सुयोग रूप से करने के लिए विभिन्न मंत्रालयों के विभागों में संपादक, उपसंपादक, प्रूफ रीडर आदि पदों का सृजन होता हैं। विभागों के और से इसके लिए विज्ञापन आता हैं।

उपसंपादक (हिंदी) पद के लिए शैक्षिक योग्यता :

1. हिंदी में स्नातक उपाधि।
2. मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या संस्थान से पत्रकारिता में डिप्लोमा।
3. संगणक का ज्ञान।
4. हिंदी में लेख, ऑडियो विजुअल प्रेजेंटेशन, प्रदर्शनियों में लेख लिखने और संपादित करने का दो साल का अनुभव।

उपसंपादक (हिंदी) पद के लिए परीक्षा का पाठयक्रम :

उपसंपादक (हिंदी) परीक्षा के लिए निम्नलिखित पाठ्यक्रम होता है –

सामान्य ज्ञान (General Intelligence) **:**

इसमें मौखिक और गैर-मौखिक दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल होंगे। इस घटक में अनुरूपता, समानताएं और अंतर, दृश्य, स्थानिक उन्मुखीकरण, समस्या सुलझाने, विश्लेषण, निर्णय लेने, दृश्य स्मृति, भेदभाव, अवलोकन, रिश्ते की अवधारणाएं, अंकगणितीय तर्क और वर्गीकरण, अंकगणित संख्या श्रृंखला, गैर-मौखिक श्रृंखला, कोडिंग और डिकोडिंग, कथन निष्कर्ष, तर्क आदि विषयों, अर्थ अनुरूप, प्रतीकात्मक संख्या, एनालॉजी, फिग्यूरल एनालॉजी, सिमेंटिक क्लासिफ़ीकेशन, सिगल नंबर वर्गीकरण, सिमेंटिक सीरीज़, नंबर सीरीज़, समस्या सुलझाने, वर्ड बिल्डिंग, कोडिंग और डी.कोडिंग, संख्यात्मक संचालन, प्रतीकात्मक संचालन, रुझान, स्पेस विज़ुअलाइज़ेशन, वेन डायग्राम, आरेखण के संदर्भ, दिनांक और शहर मिलान, केंद्र कोड एवं रोल नंबर का वर्गीकरण, लघु और पूंजी पत्र एवं संख्या कोडिंग, डिकोडिंग और वर्गीकरण, एंबेडेड आंकड़े, क्रिटिकल सोच, आदि उपविषयों पर पूछे जाते हैं।

अंग्रेजी भाषा (English Language) (Basic Knowledge) **:**

सही अंग्रेजी समझने की उम्मीदवारों की क्षमताएँ, उनकी बुनियादी समझ और लेखन क्षमताएँ आदि का परीक्षण किया जाएगा। पार्ट्स ए, बी और डी में पूछे गए सवालों का स्तर स्नातक होता हैं और पार्ट सी में पूछे गए सवालों का स्तर कक्षा 10 वीं तक का होता हैं।

मात्रात्मक योग्यता (Quantitative Aptitude) (Basic Arthmetic Skill) **:-**

उम्मीदवारों का संख्या ज्ञान और उचित प्रयोग की क्षमताओं का परीक्षण करने के लिए प्रश्न तैयार किये जाते हैं। इसमें संपूर्ण संख्या, दशमलव, भिन्न और संख्याओं के बीच संबंध, प्रतिशत, अनुपात, औसत, ब्याज, लाभ और हानि, डिस्काउंट, साझेदारी, व्यापार मिश्रण और संलयन, समय और दूरी, समय और कार्य, मूलभूत बीजीय पहचान, विद्यालय बीजगणित और प्राथमिक अभिलेख, रैखिक समीकरणों के रेखांकन, त्रिभुज और इसके विभिन्न केंद्रों के प्रकार, एकरूपता और त्रिभुज की समानता, मंडल और इसके स्पर्शरेखा, एक चक्र के दाँतों से दोहराए गए कोण, दो या दो से अधिक मंडलियों के लिए आम स्पर्शरेखा, त्रिभुज, क्वाड्रिलाटरल्स, रेगुलर पॉलीगंस, सर्किल, राइट प्रिज्म, राइट सर्कुलर कॉन, राइट सर्कुलर सिलेंडर, गोलाकार, गोलार्ध, आयताकार समानांतर पैड, नियमित राइट पिरामिड, त्रिकोणीय या वर्ग आधार, त्रिकोणमितीय अनुपात, डिग्री, मानक पहचान, पूरक कोण, हाइट्स और दूरी, हिस्टोग्राम, फ्रीक्वेंसी, बहुभुज, बार आरेख और पाई चार्ट आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

सामान्य जागरूकता (General Awareness) **:-**

सामान्य जागरूकता परीक्षा में उम्मीदवारों की परीक्षण क्षमताओं को जाँचना प्रमुख उद्देश्य होता हैं। उसके चारों ओर पर्यावरण की सामान्य जागरूकता और समाज की मौजूदा घटनाओं और हर दिन के ऐसे मामलों के ज्ञान का परीक्षण करने के लिए प्रश्न डिजाइन किए जाते हैं। एक शिक्षित नागरिक की तरह मुलभूत ज्ञान की अपेक्षा की जाती है, उनके वैज्ञानिक पहलू में टिप्पणियां और अनुभव, व्यक्ति परीक्षण में

भारत और उसके पड़ोसी देशों से संबंधित प्रश्न शामिल होंगे, विशेष रूप से इतिहास, संस्कृति, भूगोल, आर्थिक दृश्य, सामान्य नीति और वैज्ञानिक अनुसंधान आदि को आधार बनाकर प्रश्न पूछे जाते हैं।

उपसंपादक (हिंदी) पद के लिए परीक्षा योजना :

उपसंपादक (हिंदी) पद के लिए संगणक आधारित परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इसमें बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाते हैं। स्नातक स्तर तक आधार बनाकर प्रश्न पूछे जाते हैं।

अ.क्र.	प्रश्नों का विवरण	प्रश्नों की संख्या	कमाल अंक	समय
1.	सामान्य ज्ञान (Genera Intelligence)	25	50	
2.	अंग्रेजी भाषा	25	50	
3.	मात्रात्मक योग्यता (Quantitative Aptitude) (Basic Arthemetic Skill)	25	50	1 घंटा
4.	सामान्य जागरूकता (General Awareness)	25	50	
	कुल (Total)	100	200	

नोट : प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 0.50 अंक का नकारात्मक अंकन होता हैं। प्राप्त अंको में से काट लिए जाते हैं। परीक्षा के बाद उत्तर कुंजी आयोग की वेबसाइट पर दी जाती है।

उपसंपादक समाचार पत्र का कार्यकारी संचालक होता है। संवाददाता और संपादक के बीच महत्त्वपूर्ण प्रवाहित कड़ी है। समाचारों के समस्त विवरणों को प्राप्त करता है, समाचारों का चुनाव करना, विश्लेषण करना, सारांश लिखना, अनुवाद करना, समाचारों को उचित शीर्षक देना आदि जिम्मेदारियों को निभाकर स्वीकृत समाचारों को सुंदर एवं आकर्षक रूप देकर क्रमबद्धता के साथ प्रस्तुत करता है। वस्तुनिष्ठता के साथ समाज सेवा करने का जज्बा रखने वाला युवक यह रोजगार प्राप्त कर सकता है और समाज के प्रति अपना दायित्व निभा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए :

www.rajyashabha.com.

www.jointrecruitmentcell.com

3.3.5 फिल्म में रोजगार :

फिल्म मनुष्य के मनोरंजन के साधनों में से एक है। दिल बहलाने और थकावट से राहत पाने के लिए वह फिल्म का सदियों से उपयोग करता आ रहा है। हालाँकि समय के बदलाव के साथ फिल्म में कई परिवर्तन आए है। वर्तमान समय में फिल्मों की चका-चौंध ने बच्चों से लेकर बुजुर्गो तक सभी को प्रभावित किया है। इसकी वजह यह है कि फिल्म की हर एक बारीकियों को प्रत्येक क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा जाँच, परख कर देखा जाता है। स्पॉट बॉय से लेकर फिल्म निर्माता तक सभी को खासियत के अनुसार कार्य दिया

जाता हैं। फिल्म समाज का प्रतिबिंबित रूप होता है जिसे कल्पना की किनार दी जाती है। मनुष्य, समाज और फिल्म एक ही सिक्के के पहलू हैं। इन तीनों का एकमात्र आधार हैं- भाषा। जो भाषा फिल्मों में ज्यादा प्रयुक्त होती है उनके अध्येताओं को रोजगार के कई अवसर मिलते हैं। फिल्म क्षेत्र का कारोबार बहुत विस्तृत है जिसमें रोजगारों की भरमार हैं और इज्जत, शौहरत के साथ कम समय में धन कमाया जाता हैं। फिल्म में मिलने वाले कुछ रोजगारों की जानकारी निम्नांकित है-

3.3.5.1 गीतकार :

मनुष्य मनोरंजन प्रिय प्राणी है। अपने सुख-दुख, उत्साह, उमंग, वेदना, दर्द, उत्सव-पर्व, त्यौहार, आदि को लोकगीत, ऋतुगीत, व्रतगीत, बधाईयाँ गीत, श्रमगीत, प्रेमगीत, विरह गीत, शादी में गाये जाने वाले गीत के द्वारा अपनी वाणी को अभिव्यक्ति देता है।

गीतकार या कवि ने लोकगीत, देशभक्ति, प्रेमगीत, प्रकृति आदि को आधार बनाकर गीत लिखे गए है। गीतकार नीरज, शैलेंद्र, प्रदीप, मजरूह सुलतानपुरी, हजरत अली, गुलजार, साहिर लुधियानवी, हसरत जैनपुरी, राजा मेंहदी आलिखान, गौहर कानपुरी, आनंद बक्षी, जावेद अख्तर आदी गीताकारोंने दिल की धडकनों में उत्साह, उमंग, प्रेरणा डालने का कार्य किया है तथा भारतीय सिनेमा के द्वारा जनजीवन के सुख-दुखों को अभिव्यक्त किया गया है। उसमें से कुछ गीत आज भी हमारे दिलों-दिमाग पर राज करते हैं उन्हें में एक गीत-

''ऐ मेरे वतन के लोगों, तुम सब लगाओं नारा

यह शुभ दिन है हम सबका, लहरा दो तिरंगा प्यारा

पर मत भूलों सीमा पर, वीरों ने प्राण गँवाये

जो लौट के घर ना आये..............

कवि प्रदिप जी ने इस गीत को लिखा है। भारत सरकार ने इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में सन्मानित किया है। हिंदी सिनेमा में गीतकारों ने लोकगीतों का विशेष रूप से प्रयोग किया गया है -

''रंग बरसे भीगे चुनरवाली रंग बरसे'' - फिल्म - सिलसिला

''म्हारे हिवडा में नाचे मोर'' फिल्म - हम साथ साथ है

वैश्वीकरण के बदौलत या मनुष्य की बदलती मानसिकता के कारण आजकल रिमिक्स और आइटम साँग का प्रचलन बड़े जोर के साथ सिनेमा में हो रहा है। इस साँग में स्त्रियों को आइटम गर्ल्स के रूप में नई पहचान दी जाती है। यह सिलसिला फिल्म कुर्बानी (1980) में लैला मैं लैला, ऐसी मैं लैला, हर कोई चाहे मुझसे मिलना अकेला शायद यहाँ से शुरूआत हुआ। इसके बाद -

''जवानी जानेमन हसीना दिलरूबा'' - नमक हलाल 1982

''छम्मा छम्मा .... बाजेरे मेरी पैजनिया'' - चाइना गेट 1998

''दिलवालों के दिल का करार लूटने'' - शूल 1999

''चोली के पीछे क्या है, चुनरी के नीचे क्या है'' - खलनायक 1993

''बाबूजी जरा धीरे चलो बिजली खडी यहाँ बिजली खडी'' दम 2003

''बीडी जलाइले जिगर से पिया'' - ओमकारा 2006

''शीला शीला की जवानी'' - तीसमार खान 2010

''मुन्नी बदनाम हुई, डार्लिंग तेरे लिए'' - दबंग 2010

''इश्क का मंजन घीसे औ पिया'' - यमला पगला दीवाना 2011

''अनारकली डिस्को चली'' - हाऊसफुल्ल-2 2012

''चिकनी चमेली छुपके अकेली पउवा चढा के आयी'' - अग्निपथ 2012

''मेरे फोटो को सीने से यार चिपका ले सईयाँ फेबिकोल से'' - दबंग-2 2012

आइटम साँग और फिल्म की कहानी से कुछ लेना-देना नहीं होता इसका उद्देश्य सिर्फ बडा मुनाफा कमाना होता है। इस व्यावसायिकता के कारण और मुनाफा कमाने की मानसिकता ने स्त्रियों के प्रति समाज का नजरिया अत्यधिक घातक होता जा रहा है।

एक सफल गीतकार को मनुष्य की गिरती हुई मानसिकता को बदलने का तथा भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना एक आव्हान है।

कहाँ मिलता है अवसर :

फिल्म, दूरदर्शन, निजी चैनेलों में चल रही हजारों धारावाहिक सीरीयल्स में, नाटकों में आदि

युवा वर्ग के लिए गीतकार के रूप में एक अच्छासा अवसर मिल सकता है।

3.3.5.2 पटकथा लेखक :

कहानी को निश्चित रूप देने के बाद पटकथा लिखी जाती है। पटकथा फ़िल्म की नींव है। इसे स्क्रीन प्ले, चलचित्र और सिनेरिया भी कहते हैं। जिस प्रकार कथानक से कहानी और उपन्यास का विकास होता है उसी प्रकार पटकथा के माध्यम से चलचित्र का विकास होता है। पटकथा की लघु इकाई शॉट होती है। शॉट को जोड़ने से दृश्य बनता है और दृश्यों को सही क्रम से से जोड़ने से पटकथा बनती है। जब पटकथाकार कहानी को फ़िल्म की भाषा में ढालता है तब पटकथा का सृजन होता है। पटकथा का आधार कहानी होती है।

पटकथा में निर्देशक, छायाकार, ध्वनि-संयोजक, प्रकाश-प्रबंधक, संवाद-लेखक, कैमरामन और कलाकारों के कार्यों का ब्योंरा होता है। जैसे कि कलाकार को क्या करना है? क्या संवाद बोलने है? कैमरा की दिशा, दूरी आदि सभी बातें पटकथा में लिखी जाती है। पटकथा लंबे पृष्ठों या जिल्दबंद पृष्ठों पर लिखी जाती है। इन पृष्ठों दो भागों में विभाजित किया जाता है। बायीं ओर शॉट, दृश्य की विस्तृत जानकारी लिखी जाती है और दाहिनी ओर संवाद, संगीत और प्रभाव का जिक्र किया जाता है। पटकथाकार एक फ़िल्म

बनाने के लिए करीब 60 से 80 दृश्य लिखता है। पटकथा दो प्रकार से लिखी जाती है। एक मौलिक कथा-सूत्र के आधार पर और दूसरा साहित्यिक कृति के आधार पर लिखी जाती है।

पटकथा के प्रसंग दर्शक के सम्मुख क्रम से आते हैं। प्रत्येक दृश्य से पाठकों की उत्सुकता और जिज्ञासा धीरे-धीरे विकसित होती चली जाए, वह चरमोत्कर्ष तक पहुँचकर उसका ऐसा सहज और स्वाभाविक अंत प्रस्तुत करे कि दर्शक आत्मविभोर होकर छविग्रह से बाहर आए। उत्तम पटकथा वही होती है जिसमे जिज्ञासा, भावुकता, संगीत, नृत्य आदि का यथोचित समन्वय किया जाता है। पटकथा लिखते समय पटकथा लेखक, निर्माता, दिग्दर्शक परस्पर विचार-विमर्श करके निम्नांकित तथ्यों को सुनिश्चित करते हैं-

1. फ़िल्म की लम्बाई कितनी होगी
2. कहानी दिखाने की शैली कौनसी होगी
3. दृश्यों की संख्या कितनी होगी
4. दृश्यों का क्रम निर्धारण
5. दृश्यों का प्रारंभ और अंत कहाँ और कैसे होगा?

इन तथ्यों के आधार पर फ़िल्म का निर्माण होता है।

कुशल पटकथाकार के गुण :

1. दर्शक के मन में जिज्ञासा जागृत करने की क्षमता
2. दृश्यों की समझ
3. संप्रेषण की क्षमता
4. सिनेमा प्रकारों का ज्ञान
5. रचनात्मक क्षमता
6. चित्र-कथात्मक कौशल्य
7. संगीत का ज्ञान
8. व्यक्ति के आतंरिक तथा बाह्य द्वंद्व को पकड़ने की क्षमता
9. संवेदनशीलता
10. संयोजन क्षमता

एक सफल पटकथा के पास उपर्युक्त गुण होना अनिवार्य होता है। जिसके बूते पर वह अपना करियर निखार सकता है।

3.3.5.3 संवाद लेखक :

भाषा हमारे जीवन का अविभाज्य अंग है। भाषा के बिना हमारा जीवन अधूरा है। भाषा के कारण ही मनुष्य अपने विचार दूसरे लोगों तक पहुंचाता है। अपने मन की जिज्ञासा कुतूहल विचार यह सब दूसरों को बताता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण उसका संबंध समाज और अन्य मनुष्य के साथ होता है। वह हमेशा अपने सुख दुख दूसरों के साथ बांटता है। यानी संवाद मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

साहित्य क्षेत्र विस्तृत और बड़ा है। साहित्य की विभिन्न विधाएं हैं जैसे की उपन्यास, कहानी, नाटक आदि। कहानी, उपन्यास, नाटक इसमें संवाद अहम भूमिका निभाते हैं। दैनिक जीवन में सफल एवं चतुर व्यक्ति, दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है पारस्परिक संवाद से ही व्यक्ति के अनुभव, अध्ययन, ज्ञान एवं भावनाओं का प्रगटीकरण होता है।

संवाद लेखन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

संवाद का आरंभ और अंत आकर्षक हो।

संवाद स्वाभाविक सजीव तथा रोचक हो।

संवाद संक्षिप्त हो।

संवाद की भाषा सरल होनी चाहिए।

संवाद में उत्तर प्रत्युत्तर एक साथ आने चाहिए।

संवाद के विचार सशक्त होने चाहिए।

संवाद छोटे एवं स्पष्ट होने चाहिए।

कहाँ मिलता है अवसर :

फिल्म, दूरदर्शन और निजी चैनेल में प्रसारित धारावाहिक में, डॉक्यूमेंट्री, शॉर्ट फिल्म आदि।

संवाद लेखन एक कला है चाहे वह किसी कहानी, नाटक, उपन्यास या सिनेमा क्यों न हो। संवादों से पात्रों के विचारों की अभिव्यक्ति होती है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. रेडियो .... माध्यम है।

   अ) दृश्य-श्राव्य   ब) श्राव्य   क) दृश्य   ड) प्रिंट

2. .... उच्चारण की एक स्वाभाविक प्रकिया है।

   अ) डिकोडिंग   ब) कोडिंग   क) मॉडयूलेशन   ड) डिमॉडयूलेशन

3. रेडियो .... के लिए वरदान है।

   अ) छात्र   ब) व्यावसायिक   क) साक्षर   ड) निरक्षर

4. आरजे ………… पर कभी टिप्पणी नहीं करता।

अ) राजनीति ब) विचार क) जाति–धर्म ड) रिश्तों

5. समाचारों का संकलन करना और उसमे ………… निर्माण करना समाचार संपादक का कार्य है।

अ) ज्ञान ब) रोचकता क) जान ड) कल्पना

6. आरजे अपने स्क्रिप्ट को --------- और दिलचस्प बनाता है।

अ) विचारात्मक ब) तथ्यात्मक क) गुणात्मक ड) रचनात्मक

7. समाचार संपादक(हिंदी) का -------- कौशल और पत्रकारिता का सामान्य ज्ञान परखा जाता है।

अ) लिखित ब) वाचिक क) भाषिक ड) मौखिक

8. आवाज परीक्षण में उम्मीदवारों को बिना रुके हिंदी में -------- मिनट में बात करना अनिवार्य होता है।

अ) 1 ब) 3 क) 5 ड) 6

9. उपभोक्ता समाज में विज्ञापन ----------- बना है।

अ) सलाहकार ब) जानकर क) दर्शक ड) सूचनादाता

10. वर्तमान विज्ञापन का उद्देश्य -------- ।

अ) सूचना देना ब) ज्ञान देना क) व्यवसाय करना ड) दिशा देना

11. उत्पादक और उपभोक्ता के बीच विज्ञापन ------ का कार्य करता है।

अ) संवाद ब) विचार क) भाषा ड) सूचना

12. हिंदी वर्तमान समय और समाज की --------- भाषा बनी है।

अ) नविनतम ब) रोचक क) आकर्षक ड) जीवंत

13. हिंदी के क्रियापदों में ------ कहने की क्षमता है।

अ) कम ब) अधिक क) सीमित ड) अलग

14. विज्ञापन बार–बार वस्तु के ------- का उल्लेख करता है।

अ) नाम ब) उत्पादक क) खरीददार ड) निर्माता

15. विज्ञापन ने -------- के शरीर को भी नहीं छोड़ा।

अ) उत्पादक ब) निर्माता क) खरीददार ड) मनुष्य

16. विज्ञापन सरल, रोचक और -------- में होता है।

अ) राजभाषा ब)राष्ट्रभाषा क) जनभाषा ड) मानक भाषा

17. दो भाषाओं, संस्कृतियों और सभ्यताओं को जोड़ने का कार्य ------- करता है।

अ) अनुवाद ब) संपर्क क) पर्यटन ड) यात्रा

18. वर्तमान समय में फिल्मों का --------- अनिवार्य बन गया है।

अ) डबिंग ब) व्यवसाय क)

19. ग्लोबल ज्ञानार्जन की सर्वोच्च स्थिति -------- के कारण उपलब्ध होती है।

अ) डिजिटल किताब ब) संचार क) अनुवादक ड) प्रिंट माध्यम

20. मीडिया व्यक्ति डे जुड़ा ------- माध्यम है।

अ) सकारात्मक ब) नकारात्मक क) सशक्त ड) दिशादर्शक

21. पत्रकारिता का उद्देश्य जनता को ---------- करना होता है।

अ) प्रबुद्ध ब) प्रवृत्त क) निर्देशित ड) रोमांचित

22. मीडिया हाउस में पत्रकारिता से संबंधित -------- विभाग होते हैं।

अ) 7 ब) 17 क) 27 ड) 15

23. विदेशों में ------- पत्र-पत्रिकाओं को बड़े शौक के साथ पढ़ा जाता है।

अ) अंग्रेजी ब) जर्मन क) हिंदी ड) अरेबिक

24. युवक दर्पण पत्रिका ------- देश से प्रकाशित होती है।

अ) चीन ब) अमरीका क) रुस ड) फ्रांस

25. -------- कवि को राष्ट्रकवि के रूप में सन्मानित किया है।

अ) गुलजार ब) नीरज क) प्रदीप ड) मजरूह सुलतानपुरी

26. -------- साँग के कारण स्त्रियों के प्रति समाज का नजरिया घातक हो रहा है।

अ) लव ब) सैड क) लोक ड) आइटम

27. -------- से ही व्यक्ति के अनुभव, अध्ययन, ज्ञान एवं भावनाओं का प्रगटीकरण होता है।

अ) विचार ब) कार्य क) दृष्टि ड) संवाद

28. पटकथा को -------- कहा जाता है।

अ) स्क्रीन प्ले ब) कहानी क) कथा ड) दृश्य

29. पटकथा की लघु इकाई --------- होती है।

अ) शॉट ब) चित्र क) दृश्य ड) संवाद

30. -------- में लिखे संवाद प्रभावशाली साबित होते हैं।

अ) मातृभाषा ब) जनभाषा क) राजभाषा ड) मानक भाषा

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–एक वाक्य में लिखिए।

1. समाचार संपादक (हिंदी) कौन से कार्य करते हैं?
2. आवाज परीक्षण का उद्देश्य क्या होता है?
3. हिंदी के क्रियापदों में कौन–सी क्षमता है?
4. विज्ञापन लेखक कौन–सी बातों का समन्वय करता है?
5. तुलसीदास द्वारा लिखित किस महाकाव्य का अनुवाद विश्व प्रसिद्ध है?
6. अनुवाद और निबंध परीक्षा क्यों ली जाती है?
7. वर्तमान समय में युवक पत्रकारिता की ओर क्यों आकर्षित होते हैं?
8. सफल पत्रकार कौन बन सकता है?
9. पटकथा में किसका ब्यौरा होता है?
10. एक फिल्म में कितने दृश्य होते है?

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

१. रुतबा - प्रतिष्ठा, पद, इज्जत

२. आरजे - रेडियो जॉकी

३. मॉड्यूलेशन - ध्वनि उच्चारण की स्वाभाविक प्रक्रिया

४. स्क्रिप्ट - हस्तलेख, पटकथा

५. ट्रांसलेटर - अनुवादक

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ)

1) श्राव्य	2) मॉडयूलेशन	3) निरक्षर	4) जाति–धर्म
5) रोचकता	6) तथ्यात्मक	7) भाषिक	8) 3
9) सलाहकार	10) व्यवसाय करना	11) संवाद	12) जीवंत
13) अधिक	14) नाम	15) मनुष्य	16) जनभाषा
17) अनुवाद	18) डबिंग	19) अनुवादक	20) सशक्त
21) प्रबुद्ध	22) 27	23) हिंदी	24) रुस
25) प्रदीप	26) आइटम	27) संवाद	28) स्क्रीन प्ले
29) शॉट	30) जनभाषा		

आ)

1. समाचारों का संकलन करना, वर्गीकृत करना, उचित क्रम से लगाना और उनमें से महत्त्वपूर्ण समाचारों की प्रमुख सुर्खियाँ बनाना आदि विशेष कार्य समाचार संपादक को निभाने पड़ते हैं।
2. उम्मीदवारों का भाषा प्रवाह, भाषा सामग्री, शैली, उच्चारण और आवाज का परीक्षण करना इसका उद्देश्य होता है।
3. हिंदी के क्रियापदों में अधिक कह देने की क्षमता होती है।
4. विज्ञापन लेखक चित्र, लिखित तथ्य, ट्रेडमार्क और शीर्षक आदि में समन्वय करता है।
5. महाकवि तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस महाकाव्य का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है।
6. उम्मीदवार का अनुवाद कौशल और दोनों भाषाओं को सही, ठीक-ठाक एवं प्रभावशाली ढंग से लिखने एवं समझने में उनकी योग्यता का परीक्षण करने के लिए आयोजित की जाती है।
7. आज के युवक खतरों से खेल ते हुए चुनौतियों और रोमांच से भरी जिंदगी को पसंद करते है।
8. समाज के प्रति अपना दायित्व समझकर सत्यता के आधार पर समाज परिवर्तन तथा समाज का पुनर्निर्माण करने का बीड़ा उठाने वाला व्यक्ति एक सफल पत्रकार बन सकता है।
9. पटकथा में निर्देशक, छायाकार, ध्वनि-संयोजक, प्रकाश-प्रबंधक, संवाद-लेखक, कैमरामन और कलाकारों के कार्यों का ब्योंरा होता है।
10. पटकथाकार एक फ़िल्म बनाने के लिए करीब 60 से 80 दृश्य लिखता है।

3.7 सारांश :

1. रेडियो श्राव्य माध्यम है। हिंदी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि, भाषा पर प्रभुत्व, सामान्य ज्ञान, भारतीय सभ्यता और संस्कृति की जानकारी और वाणी पर अधिकार रखने वाला व्यक्ति रेडियो में रोजगार प्राप्त कर सकता है। रेडियो में रेडियो जॉकी, समाचार संपादक (हिंदी) और समाचार प्रपाठक-कम-अनुवाद (हिंदी) के साथ कई रोजगार के अवसर मिलते हैं।
2. आधुनिक और उपभोक्तावादी समाज में विज्ञापन मार्गदर्शक, दिशादर्शक, सलाहकार बना हुआ दिखाई देता है। विज्ञापनों में हिंदी भाषा प्रचलित है जिसके बूते पर देश-विदेश में रोजगार के कई अवसर मिलते हैं।
3. अनुवाद एक बहुत बड़ा क्षेत्र है, इसकी सीमाओं को हम तय नहीं कर सकते। भूमंडलीकरण के इस युग में अनुवादकों की माँग दिनों-दिन बढ़ रही है। संसार के असीम ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुवाद अहम् भूमिका निभाता है और साथ ही लाखों रोजगारों का सृजन करता हैं।

4. समाज के प्रति अपना दायित्व समझकर सत्यता के आधार पर समाज परिवर्तन तथा समाज का पुनर्निर्माण करने का बीड़ा उठाने वाला व्यक्ति देश-विदेश में पत्रकारिता में रोजी-रोटी के साथ समाज में रुतबा और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है।

5. फिल्मों पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव और अनैतिक व्यावसायिकता का तीव्र प्रभाव दिखाई देता है। इस क्षेत्र में रोजगारों की कमी नहीं है। कम समय में भाषा के बूते पर इज्जत, शौहरत और धन कमाने का यह एक राजमार्ग है।

3.8 स्वाध्याय :

टिप्पणियाँ लिखिए :

1. रेडियो जॉकी के गुण लिखिए।
2. समाचार प्रपाठक-कम-अनुवादक (हिंदी)
3. विज्ञापनों में हिंदी का स्वरुप
4. अनुवाद में रोजगार के अवसर
5. सीनियर अनुवादक चयन प्रक्रिया
6. विज्ञापन के गुण
7. गीतकार
8. पटकथाकार
9. संवाद लेखक
10. विदेशों में पत्रकारिता के अवसर
11. उपसंपादक (हिंदी)

लघुत्तरी प्रश्न लिखिए।

1. वरिष्ठ संवाददाता (हिंदी) की जिम्मेदारीयों को स्पष्ट कीजिए।
2. रिपोर्टर किसे कहते है? रिपोर्टर के प्रमुख कार्य लिखिए।
3. हिंदी समाचार वाचक सह-अनुवादक पद की चयन प्रक्रिया को संक्षिप्त लिखिए।
4. हिंदी समाचार संपादक पद को कैसे प्राप्त करे? संक्षेप में लिखिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. महाविद्यालयीन समारोहों का समाचार लेखन कीजिए।
2. महाविद्यालयीन पत्रिका की संपादक, उपसंपादक, सहायक संपादक के रूप में कार्य कीजिए।

3. कविता, कहानी, संवाद, पटकथा, विज्ञापन आदि पर लेखन और अनुवाद की कार्यशालाओं का आयोजन कीजिए।

4. महाविद्यालयीन समारोहों का सूत्र संचलन कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी डॉ. अम्बादास देशमुख
2. हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास डॉ. रमेशकुमार जैन
3. अनुवाद चिंतन डॉ. अर्जुन चव्हाण
4. मीडिया कालीन हिंदी – डॉ. अर्जुन चव्हाण
5. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर प्रा. विकास पाटील
6. मीडिया लेखन डॉ. चन्द्रप्रकाश मिश्र
7. मीडिया और प्रसारण डॉ. रमेश मेहरा
8. समाचार पत्रों की भाषा डॉ. माणिक मृगेश
9. पत्रकारिता एवं संपादन कला नेहा वर्मा
10. विज्ञापन की दुनिया कुमुद शर्मा

❑❑❑

इकाई –4
समाचार लेखन

अनुक्रम –

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय – विवरण

4.3.1 समाचार लेखन

4.3.1.1 समाचार लेखन : स्वरूप, परिभाषा, व्याप्ति

4.3.1.2 समाचार लेखन के महत्त्वपूर्ण पक्ष

4.3.1.3 समाचार लेखन : विविध सोपान

4.3.1.4 समाचार लेखन : तत्त्व

4.3.1.5 समाचार लेखन : विधि

4.3.2 महाविद्यालयीन समारोह का स्वरूप

4.3.2.1 सामाजिक समारोह की विविधता

4.3.2.2 महाविद्यालयीन समारोह : प्रारूप लेखन

4.3.2.3 महाविद्यालयीन समारोह हे समाचार लेखन की विशेषताएँ

4.3.2.4 महाविद्यालयीन समारोह के समाचार लेखन की समस्याएँ

4.3.2.5 महाविद्यालयीन समारोह का समाचार लेखन

4.3.3 सामाजिक समारोह का स्वरूप

4.3.3.1 सामाजिक समारोह : विवरण शैली

4.3.3.2 सामाजिक समारोह : महत्त्वपूर्ण बातें

4.3.3.3 सामाजिक समारोह : प्रारूप लेखन

4.3.3.4 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन की भाषा

4.3.3.5 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन की विशेषताएँ

4.3.3.6 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन की समस्याएँ

4.3.3.7 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन

4.3.4 प्राकृतिक आपदाओं का स्वरूप और प्रकार

4.3.4.1 प्राकृतिक आपदाएँ : प्रारूप लेखन

4.3.4.2 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन की भाषा

4.3.4.3 प्राकृतिक आपदाओं के समाचार लेखन की विशेषताएँ
4.3.4.4 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन की समस्याएँ
4.3.4.5 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन
4.3.5 दुर्घटनाओं का समाचार लेखन : स्वरूप
4.3.5.1 दुर्घटनाओं का प्रारूप लेखन
4.3.5.2 दुर्घटनाओं के समाचार लेखन की विशेषताएँ
4.3.5.3 दुर्घटनाओं के समाचार लेखन की समस्याएँ
4.3.5.4 दुर्घटना का समाचार लेखन
4.4 स्वयं - अध्ययन के लिए प्रश्न
4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
4.6 स्वयं - अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
4.7 सारांश
4.8 स्वाध्याय
4.9 क्षेत्रीय कार्य
4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने के बाढ आप,

1. समाज में घटित घटनाओं से परिचित होंगे।
2. मुद्रित माध्यम और हिंदी भाषा के संबंध से परिचित हो जाएंगे।
3. समाचार लेखन की प्रक्रिया से परिचित हो जाएंगे।
4. समाचार लेखन की उपयोगिता को समझ सेकेंगे।
5. हिंदी भाषा के व्यावसायिक रूप से परिचित हो जाएंगे।
6. राष्ट्रीय भावना को बढावा देने के लिए क्या करना चाहिए यह समझ सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना :

आधुनिक युग में मनुष्य संगणक की मदद से अपने विविध कार्यो को तेजी से अंजाम दे रहा है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का समाज पर प्रभाव दिन-ब-दिन बढता ही जा रहा है। इसके बाद भी मुद्रित माध्यमों

का महत्त्व थोडा-सा भी कम नहीं हुआ है। आज समाचार पत्रों में विश्व के हर एक कोने में घटित घटनाओं के समाचार छपने लगे हैं। समाचार लेखन अपने आप में एक कला है। जिसमें विविध बातों का ध्यान रखना पडता है। विभिन्न घटनाओं, परिस्थितियों और सूचनाओं को कम से कम शब्दों में प्रभावशाली ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत करना समाचार लेखन का मूल प्रयोजन है।

प्राचीन काल से आज तक मनुष्य की जिज्ञासू वृत्ति में बढोत्तरी हो चुकी है। वह हर घटनाओं के पीछे का कारण समझने के लिए लालायित नजर आने लगा है। इसी वजह से विविध समाचारों की सही ढंग से प्रस्तुति समाज, के लिए आवश्यक बनी हुई है। जिसकी बढौलत 'समाचार लेखन' की कला काफी विकसित हो चुकी है। प्रभावशाली ढंग से समाचारों को प्रस्तुत करने के लिए उसकी भाषा का व्यावहारिक और सर्वजन सुलभ होना आवश्यक होता है। समाचार पत्रों में विविध समारोह, प्राकृति आपदाएँ और दुर्घटनाओं से संबंधित समाचार आते रहते हैं। इन समाचारों के लेखन की प्रविधि को जानना हमारे लिए बहुत ही आवश्यक है।

4.3 विषय विवरण :

4.3.1 समाचार लेखन :

आज मनुष्य जीवन गतीमय हो चुका है। वैज्ञानिक अविष्कारों के बललूते पर वह कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा कार्यों को अंजाम देने लगा है। अनेक इलेक्टॉनिक माध्यम मनुष्य के पास तेजी से घटनाओं और सूचनाओं को आकर्षक रूप में पहुँचाने लगे हैं। ऐसे समय में समाचार पत्रों में छपनेवाले समाचार प्रभावशाली होते चाहिए। इसके लिए समाचार लेख के स्वरूप, तत्त्वों, विविध सोपानों और प्रक्रिया को समझना अत्यंत आवश्यक है।

4.3.1.1 समाचार लेख का स्वरूप, परिभाषाएँ और व्याप्ति :

समाचार लेखन के स्वरूप को विद्‌वानों एवं प्रसिद्‌ध पत्रकारों ने अपनी दृष्टि से परिभाषित करने का प्रयास किया है। जैसे -

1. टर्नर कॉलेज :

वह सभी कुछ जिससे आप कल तक अनभिज्ञ थे, समाचार है।

2. जॉर्ज. एच. मौरिस :

समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है।

3. लैदर वुड :

किसी घटना, स्थिति, अवस्था अथवा मत का सही-सही और समय पर प्रस्तुत किया गया विवरण समाचार है।

4. विलियम एल. रिवर्स :

समाचार घटना का वर्णन है। घटना स्वयं समाचार नहीं। घटनाओं, तथ्यों और विचारों की सामयिक रिपोर्ट समाचार है, जिसमें पर्याप्त लोगों की रूचि भी हो।

5. जे. जे. सिडिलर :

पर्याप्त संख्या में मनुष्य जिस जाना चाहें वह समाचार है, शर्त यह है कि वह सुरूचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करे।

6. एम. लाइल स्पेन्सर :

वह सत्य घटना या विचार जिसमें बहुसंख्यक पाठकों की अभिरूचि हो, समाचार कहलाता है।

7. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी :

हर घटना समाचार नहीं है। केवल वही घटना समाचार बन सकती है, जिसका सार्वजनिक महत्त्व हो।

8. श्री. रा. र. खाडेलकर :

दिन में कही भी किसी समय कोई छोटी-मोटी घटना या परिवर्तन हो उसका शब्दों में जो वर्णन होगा, उसे समाचार या खबर कहते हैं।

9. एम. चेलापति राव :

परिवर्तन की जानकारी देनेवाली कोई सूचना समाचार है।

जिन घटनाओं और परिस्थितियों की जानकारी हम कल तक नहीं जानते थे ऐसी खबर को समाचार कहा जाता है। इसमें एक विशेष सूचना से जनता प्रभावित होती है तथा उसे लोककल्याण हेतु माध्यमों द्वारा प्रसारित किया जाता है।

संस्कृत के 'अमरकोष' में समचार के लिए यथा:वार्ता, वृत्ति, प्रवृत्ति तथा उदंत आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। इसके अतिरिक्त अन्य शब्दाकोंशों में वृत्तांत, संवाद, विवरण, खबर और सूचना शब्द भी मिलते हैं। हिंदी का 'समाचार' शब्द अंग्रेजी के NEWS शब्द का पर्यायवाची है। लैटिन भाषा में इसके लिए NOVA तथा संस्कृत में 'नव' शब्द प्रयुक्त है। इन सबका अर्थ नया, नवीन या नूतन है। NEWS शब्द के चारों अक्षर चार दिशाओं के सूचक हैं - North (उत्तर), East (पूर्व), West (पश्चिम), South (दक्षिण)। अर्थात चारों दिशाओं में घटित विविध घटनाओं को पाठक वर्ग तक पहुँचाने की प्रक्रिया को समाचार कहते है।

4.3.1.2 समाचार लेखन के महत्त्वपूर्ण पक्ष :

किसी भी घटना की व्यवस्थित रूप में जानकारी पाठकों तक पहुँचाना समाचार का मुख्य उद्देश्य होता है। रूडयार्ड किपलिंग ने सीडिया के छह ककार स्पष्ट किए हैं। इन्हें पाँच 'डब्ल्यु' और एक 'एच' के नाम से भी जाना जाता है।

1) क्या हुआ? - What

2) कहाँ हुआ - Where

3) कब हुआ - When

4) किसके साथ हुआ - Who

5) क्यों हुई (घटना का कारण) - Why

6) कैसे घटी - How

किसी भी समाचार को लिखते समय मुख्यत: इस छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है। प्रत्येक समाचार इन छह बिंदुओं से जुडा होता है। उपर्युक्त छह सवालों के जवाब से ही समाचार में सजीवता आती है। साथ ही समाचार को पढने में भी पाठकों के मन में उत्सुकता पैदा होती है।

4.3.1.3 समाचार लेखन के विविध सोपान :

समाचार लेखन के अंतर्गत कुछ विभिन्न सोपानों पर चर्चा करना अत्यंत आवश्यक है। इन सोपानों के सिवाय समाचार लेखन संभव नहीं है।

1) शीर्षक :

समाचार लेखन में सबसे महत्त्वपूर्ण शीर्षक होता है। क्योंकि शीर्षक की आकर्षकता से ही पाठक समाचार पढने में रूचि लेता है। समाचार की सफलता 'शीर्षक' पर ही निर्भर होती है। कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा जानकारी देनेवाले शीर्षक होने चाहिए। शीर्षक में स्पष्टता, आकर्षकता और सरलता के गुण होने चाहिए।

2) स्थल-काल :

समाचार में स्थल-काल का उल्लेख होना बहुत ही जरूरी है। घटना कब और कहाँ घटित हुई इसका विवरण समाचार में होना ही चाहिए। इसके बिना समाचार उद्‌देश्य विरहित हो सकता है।

3) व्यक्ति का उल्लेख :

यदि कोई घटना किसी प्रसिद्‌ध व्यक्ति से संबंधित हो तो समाचार में उसका संदर्भ देना जरूरी होता है। कभी-कभी तो शीर्षक में आकष्कता पैदा करने के लिए उसमें नाम का उल्लेख भी होता है। समारोह और दुर्घटना से संबंधित समाचारों में सामान्य व्यक्ति के नामों का उल्लेख भी आता है।

4) विवरण :

समाचार का विवरण आकर्षक शैली में होना चाहिए। यदि किसी हादसे से संबंधित समाचार हो तो उसमें हादसे के पीछे का कारण तथा हादसे से प्रभावित लोगों की जानकारी विस्तृत रूप में देना आवश्यक हैं

समारोह से संबंधित समाचार हो तो उसमें अतिथि का मुख्य विधान आना ही चाहिए। साथ ही अतिथि किस संदर्भ में बोल रहे थे, कहाँ बोल रहे थे आदि का विवरण होना जरूरी है। अन्य अतिथियों की जानकारी और समारोह के अध्यक्ष कौन थै इसकी जानकाी देनी चाहिए। समाचार के संदर्भ में पाठक के मन में उपस्थित सभी शंकाओं का समाधान होना चाहिए।

5) तथ्य एकत्रीकरण :

समाचार से संबंधित समग्र तथ्यों का एकत्रीकरण करना समाचार लेखन का महत्त्वपूर्ण सोपान है। तथ्यों के एकत्रीकरण में पत्रकार की जिज्ञासा वृत्ति दृढ इच्छाशक्ति काम करती है।

6) वस्तुनिष्ठता या नि:ष्पक्षता :

समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता होनी चाहिए। घटना का वर्णन कपोल कल्पना के आधारपर नहीं तो सत्यता के आधारपर होना चाहिए। जिस प्रकार से घटना घटित हुई है उसका लेखन उसी प्रकार से होना चाहिए। नहीं तो समाचार गलत रूप धारण कर सकता है।

7) भाषा :

सभी प्रकार के पाठक वर्ग को ध्यान में रखकर समाचार की भाषा होनी चाहिए। वह भाषा लोकजीवन से जुडी होनी चाहिए। भाषा में सरलता, सुबोधता और स्पष्टता का होना जरूरी है। इसमें अलंकारिक और जटिल शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। समाचार की भाषा में प्रवाहमयता और प्रसंगानुकूलता के गुण होने चाहिएं इसमें योग्य एवं अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। अनावश्यक शब्दों का इस्तेमाल पाठक की गंभीरता का हनन कर सकता है। समाचार लेखन में भाषा के व्याकरणिक नियमों का ध्यान रखना बहुत ही जरूरी है नहीं तो गलत अर्थ निकलने की संभावना बनी रहती है।

8) मुद्रण प्रक्रिया :

आज के समय में मुद्रण यंत्रों के नए-नए अविष्कार के चलते मुद्रण प्रक्रिया बहुत विकिसत हो चुकी है। मुद्रण प्रक्रिया में कलात्मकता का इस्तेमाल कर पठनीयता को बढावा दिया जा रहा है। समाचार के विवरण में योग्यता मुद्राक्षरों का उपयोग होना चाहिए। अक्षरों के बीच में योग्य जहग छोडनी चाहिए। जिससे समाचार पढने में पाठकों को दिक्कतों का सामना न करना पडे।

4.3.1.4 समाचार लेखन के तत्त्व :

किसी भी प्रकार का समाचार हो उसके लेखन में कुछ मौलिक तत्त्वों और सिद्धांतों का ध्यान रखना जरूरी है। अमरिकी पत्रकार जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन में यथार्थता, संक्षिप्तता एवं रोचकता इन तीन तत्त्वों का निर्धारण किया है। इन तीन तत्त्वों के साथ समाचार लेखन में कुछ अन्य तत्त्वों को जोडना अनिवार्य है।

1. यथार्थता :

समाचार लेखन में यथार्थता को विशेष महत्त्व दिया गया है। समाचार को बिना किसी लाग–लपेट के बेबाकी के साथ सीधे–साधे ढंग से लिखना चाहिएं इसमें बनावटीपन और काल्पनिकता के लिए कोई स्थान नहीं है। कोई भी घटना जेसे भी घटी हो उसका वर्णन यथावत् होना चाहिए। ऐसा न होने से समाचार की विश्वसनीयता में गिरावट आ सकती है।

2. संक्षिप्तता :

समाचार में अनावश्यक जानकारी नहीं होनी चाहिए। समाचार को हमेशा संक्षिप्त होना चाहिए। समाचार कोई लेख नहीं है उसे कम–से–कम शब्दों में प्रस्तुत करना चाहिए। इसमें लेखक की भाषायी क्षमता काम में आती है। समाचार लेखन में अनावश्यक शब्दों, विशषनों और क्रियाओं से बचना चाहिएं संक्षिप्त समाचार समाचार पत्र में प्रभावशाली साबित होते हैं।

3. रोचकता :

समाचार रोचक और दिलचस्प होने चाहिए। यदि समाचार में रोचकता का अभाव होगा तो वह नीरस हो जाएगा। समाचार को रोचक बनाने में लेखक की विशिष्ट कला काम करती है। जिससे पाठक की समाचार पढने की रूचि बनी रहती हैं लंबा–चौडा, शुष्क और निरस विवरण समाचार को प्रभावहीन बना देता है। लेकिन समाचार लेखन में रोचकता के साथ समाजहित को ध्यान रखना भी आवश्यक होता है।

4. लोकहित की भावना :

समाचार लेखन में लोकहित की भावना को ज्यादा महत्त्व देना चाहिए। समाज के हर वर्ग की भावनाओं की कदर करके समाचार लिखे जाने चाहिए। समाचार में कसी भी जाति, वर्ग और संप्रदाय के प्रति भेदभाव नहीं दिखना चाहिए। सभी के प्रति सम्मान और आदर की भावना होनी चाहिए।

5. नवीनता :

नवीनता समाचार का अनिवार्य तत्त्व है। प्राचीन काल से ही मनुष्य की जिज्ञासू वृत्ति रही है। वह हर समय प्राकृतिक और अप्राकृतिक घटनाओं के पीछे के कारणों की जानकारी हासिल करने के लिए लालायित नजर आता है। हर घटना की जानकारी वह पहले प्राप्त करना चाहताहै। नई बात एवं घटना को पाठक अत्यंत चाव से पढता है। इसलिए समाचार लेखक को नई–नई घटनाओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की कोशिश करनी चाहिए।

6. विलक्षणता :

असाधारण घटना ही समाचार की श्रेणी में आती है यदि कोई कुत्ता आदमी को काटें तो वह समाचार नहीं होगा लेकिन कोई आदमी किसी कुत्ते को काटें तो वह निश्चित ही समाचार का विषय बन सकता है।

यानी समाचार की घटना में विलक्षणता का होना जरूरी है। विस्मयकारी और अद्‌भुत घटनाएँ पाठकों का ध्यान आकर्षित कर लेती है।

7. परिवर्तन बोध :

नेशनल हेराल्ड के संपादक एम. चेलापति राव ने परिवर्तनशीलता को समाचार का विशेष गुण माना हैं उनके मतानुसार, ''समाचार की नवीनता इसी में है कि वह परिवर्तनशीलता की जानकारी दे। यह परिवर्तन चाहे राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक हो। आज भारत तेजी से बदला रहा है। भारत में इस परिवर्तन की जानकारी देनेवाले समाचार ही महत्त्वपूर्ण है।'' आज मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है। जिससे समाचार भी प्रभावित होने लगे हैं।

8. परिपूर्णता :

समाचार में घटना से संबंधित हर एक पहूल की प्रस्तुति होनी चाहिए। समाचार को संक्षिप्त करनके के मोह में घटना से संबंधित कुछ तथ्य छुटने को ठर रहता है। आधे-अधूरे समाचार पाठक को भ्रम में डाल सकते हैं। इसी वजह से समाचार में घटना के हर एक हिस्से का वर्णन आना चाहिए।

9. सत्यता और प्रामाणिकता :

समाचार में घटना की सत्यता और प्रामाणिकता के लिए बहुता बडा महत्त्व है। सुनी-सुनाई और अफवाहों के आधारपर समाचार का लेखन नहीं होना चाहिए। सत्य घटनाओं के आधारपर लिखे गए समाचार ही विश्वसनीय माने जाते हैं।

10. भाषाशैली :

समाचार लेखन करते समय भाषा की सरलता, प्रवाहमयता और सुबोधता की और ध्यान देना चाहिए। कठिन शब्दों के इस्तेमाल से पाठक ऊबाडपन महसूस कर सकता है। इसकी भाषा में आलंकारिका और चमत्कारिकता के लिए कोई स्थान नहीं है।

4.3.1.5 समाचार लेखन की विधि :

समाचार लेखन में घटनाओं को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। इसलिए समाचार लेखक को घटनाओं का क्रम निर्धारण करना आना चाहिए। समाचार को शुष्कता और नीरसता से बचाना चाहिए। समाचार लेखन की प्रक्रिया में शीर्षक, आमुख और विवरण पर विशेष लक्ष्य देना जरूरी है।

1. शीर्षक :

समाचार को आकर्षक बनाने में शीर्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। समाचार का शीर्षक लिखना एक कला है। कभी-कभी एक अच्छा समाचार उचित शीर्षक के अभाव में पाठकों का ध्यान खीचं नहीं पाता है। इसी कारण पाठकों को प्रभावित करनेवाला ही शीर्षक होना चाहिए। शीर्षक संक्षिप्त और सारगर्भित

होना चाहिए। उसमें स्पष्टता और अर्थपूर्णता आवश्यक है। शीर्षक विशिष्ट ढंग से लिखकर पाठकों की जिज्ञासा को बढावा देनेवाला होना चाहिए।

2. आमुख :

शीर्षक के बाद के पहले अनुच्छेद को आमुख या इंट्रो कहा जाता है। इंट्रो अंग्रेजी के इंट्रोडक्शन का संक्षिप्त रूप है। इसे हम घटना संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी या विषय प्रवेश भी कह सकते हैं। आमतुख को पढने के बाद यदि पाठक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो वह पूरे समाचार पढने की कोशिश करता है। उसकी अभिरूचि बढती ही जाती है। इसलिए कम से कम शब्दों में महत्त्वपूर्ण जानकारी देना आमुख की सफलता मानी जाती है।

3. विवरण :

शीर्षक और आमुख के बाद घटना का विवरण आता है। आमतुख को पढने से पाठक के मन में जो जिज्ञासा उत्पन्न हुई है उसको समाचार के अंत तक बनाए रखना जरूरी होता है। इसलिए घटना का विवरण संतोषजनक होना चाहिए। घटनाओं के हर एक पहलू का प्रस्तुतीकरण योग्य क्रम से होना चाहिए। तथ्यों को अलग-अलग अनुच्छेदों में विभाजित कर रोचक ढंग में प्रस्तुत करना चाहिए। विवरण का योग्य प्रस्तुतीकरण ही समाचार की संप्रेषणीय बनाता है।

4.3.2 महाविद्यालयीन समारोह का स्वरूप :

महाविद्यालयीन स्तर पर विभिन्न समारोहों का आयोजन किया जाता है। जिनका उद्‌देश्य छात्रों के व्यक्तित्त्व विकास और उनके अंदर छिप विभिन्न कला गुणों को बाहर निकालता होता है। जिससे छात्रों को अपने जीवन को योग्य दिशा देने में सहायता मिलती है।

समारोह का समाचार लेखन अत्यंत क्रमबद्‌ध पद्‌धति से होना चाहिए। निश्चित क्रम ही समारोह के समाचार को योग्य आकार देता है। महाविद्यालयीन समारोह का प्रारंभ स्वागतगीत, प्रतिमापूजन तथा दीपप्रज्वलन या पौधे को पानी डालकर होना चाहिए। समारोह के प्रमुख अतिथि या समारोह के अध्यक्ष के हाथों दीप प्रज्वलन होता है। प्रास्ताविक में समारोह का संयोजक उद्‌देश्य और महाविद्यालय की भूमिका को स्पष्ट करता है। बादमें छात्रों और अध्यापकों के मंतव्य होते हैं। इन मंतव्यों के बाद प्रमुख अतिथि अपने विचार रखते है। अंत में अध्यक्षीय मंतव्य और आभार प्रदर्शन होता है। इसके बाद में राष्ट्रगीत के सिवा किसीका मंतव्य नहीं होता है।

महाविद्यालयीन स्तरपर समारोह की जिम्मेदारी अध्यापक अपने छात्रों को देते हैं। जिससे छात्रों में धैर्यता का गुण निर्माण हो जाता है। छात्र समारोह की जिम्मेदारी अपने कंधोपर लेकर समारोह की सफल एवं संपन्न बनाते है। बीच-बीच में अध्यापक मी अपने छात्रों को प्रोत्साहित कते रहते हैं। महाविद्यालयीन स्तर पर होनेवाले समारोह में विद्‌वानों और अतिथियों का स्वागत करन की पद्‌धति में काफी समय बरबाद होता है। इस बार पर भी ध्यान देना जरूरी है।

समारोह का आयोजन एक दिन पहले ही करना चाहिए। समारोह के दिन केवल समारोह की संपन्नता पर ध्यान देना चाहिए। समारोह में किस अतिथि को बुलाना है उसकी तैयारी, कुछ दिन पहले ही होती चाहिए। तब कहीं जाकर समारोह सुचारू एवं सुनियोजित रूप में संपन्न हो सकता है।

4.3.2.1 महाविद्यालयीन समारोह की विविधता :

छात्रों के विभिन्न कलाओं को मंच प्रदान करके के उद्देश्य से महाविद्यालयों विविध समारोह संपन्न होते हैं। छात्रों के व्यक्तित्त्व विकास में इन समारोहों का बडा भारी हाथ होता है।

छात्रों के व्यक्तित्त्व विकास के लिए महाविद्यालय में निबंध, काव्यवाचन, रंगोली, भाषण, चित्रकला और गीत गायन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन एक प्रकार से समारोह ही माना जा सकता है।

महाविद्यालयों में वार्षिक पारितोषिक वितरण, छात्रों का स्वागत, शिक्षक दिन, रक्तदा, स्वाधिनता दिवस, गणतंत्र दिवस, कवि सम्मेलन, हिंदी दिवस, काव्यगोष्टी, रंगोली, वार्षिक क्रीडा महोत्सव, वृक्षारोपण, जनसंख्या दिन, महिला दिन, पर्यावरण दिन, योगा दिन, क्रांतिदिन, शाहु जन्मदिन, महात्मा गांधी जन्मदिन, सावित्रीबाई फुले जन्मदिवस, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जन्मदिन, राष्ट्रीय सेवा योजना संबंधी समारोह, मातृदिन आदि विभिन्न प्रकार के समारोहों का आयोजन छात्रों के लिए किया जाता है।

उपर्युक्त समारोहों का आयोजन छात्रों में राष्ट्रप्रेम एवं सामाजिक कर्तव्यों की जागृति करने में सहाय होते हैं। महान व्यक्तियों के जन्मदिवस का आयोजन कर छात्रों में उनके आदर्श पिरौने का काम किया जाता है। वास्तव में महाविद्यालयीन समारोहों की सफलता इसीमें ही विहित होती हैं।

4.3.2.2 महाविद्यालयीन समारोह का प्रारूप लेखन :

लोकमान्य तिलक महाविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिन सांगली दि. 06 लोकमान्य तिलक महाविद्यालय, सांगली में दि. 5 जून 2020 में सुबह 11.00 बजे 'विश्व पर्यावरण दिन' समारोह का आयोजन किया था। इस अवसर पर वन प्रमंडल पदाधिकारी आर. के. थोरात प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. प्रशांत भोसले थे। महाविद्यालय के भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ. अरुण कामंत ने समारोह का प्रास्ताविक किया।

समारोह की शुरूआत दीप-प्रज्वलन से हुई। तत्पश्चात भूगोल विभाग के सहयोगी प्राध्यान डॉ. अभिजीत पवार ने अतिथि परिचय की जिम्मेदारी निभाई। भूगोल विभाग के अध्यक्ष कामं तजी ने प्रमुख अतिथि एवं समारोह के अध्यक्ष का स्वागत फुलों का गुलदस्ता देकर किया।

स्वागत के पश्चात छात्र-छात्राओं ने पर्यावरण संवर्धन के संबंध में अपने मंतव्य प्रकट किए। इसके बाद प्रमुख अतिथि आर. के. थोरात जी ने अपना मंतव्य रखते हुए कहा कि, ''आनेवाले समय में मनुष्य जाति को बचाए रखने के लिए वनों का सुरक्षित होना जरूरी है।'' पर्यावरण संवर्धन संबंधी उन्होंने अनेक मौलिक विचार प्रस्तुत किए।

समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. प्रशांत भोसले जी ने मानव जीवन में प्रकृति की महत्ता को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण में ज्यादा दखलअंदाजी मनुष्य जीवन को तबाह कर सकती है। विभाग की छात्रा भाग्यश्री मोहिते ने आभार व्यक्त किया। समारोह का सूत्र संचालन प्रतिक चव्हाण ने किया। राष्ट्रगीत के साथ यह समारोह समाप्त हुआ।

4.3.2.3 महाविद्यालयीन समारोह : समाचार लेखन की विशेषताएँ :

महाविद्यालयीन समारोह के माध्यम से विविध प्रकार की जानकारी प्रापत होती है। जैसे–

- महाविद्यालय में होनेवाली गतिधियों की विस्तृत जानकारी मिलती है।
- छात्रों के व्यक्तित्व विकास में महाविद्यालयीन समारोह उपयुक्त साबित होते हैं।
- महाविद्यालयीन समारोह के समाचार लेखन में सत्यता और प्रामाणिकता होती है।
- महाविद्यालयीन समारोह का समाचार लेखन एक निश्चित पद्धति के अनुसार होता है।
- इस समाचार लेखन में प्रमुख अतिथी के महत्त्वपूर्ण विचारों को प्रस्तुत करना जरूरी होता है।
- शीर्षक में आकर्षकता होनी जरूरी है।
- महाविद्यालयीन समारोह के समाचार लेखन में सजीवता और आकर्षकता के गुण होना जरूरी है।
- पाठकों की जिज्ञासा जागृत करनेवाला समाचार लेखन हो।
- छात्रों को विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभागी होने की प्रेरणा मिलती है।

4.3.2.4 महाविद्यालयीन समारोह : समाचार लेखन की समस्याएँ :

महाविद्यालयीन समारोह का समाचार लेखन करते समय निम्नांकित समस्याएँ आती हैं –

- समाचार लेखन करते समय समारोह का वर्णन लंबा चौडा किया जाता है।
- समाचार लेखन करते समय अतिशयोक्ति पूर्ण कथन किया जाता है।
- समाचार लेखन में कभी–कभी दीपप्रज्वलन करनेवालों की लंबी सूची दी जाती है।
- आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया जाता है।
- समाचार लेखन में क्रमबद्धता की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।
- नाट्यपूर्ण बाते लिखी जाने की संभावना होती है।

4.3.2.5 महाविद्यालयीन समारोह : समाचार लेखन :

1) हिंदी दिवस समारोह :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह कराड दि. 15 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय, कराड में 14 सितंबर 2020 को सुबह ठीक 11.00 बजे हिंदी दिवस बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया। शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर के हिंदी विभाग के प्रोफेसर डॉ. अर्जुन

चव्हाण जी समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एस. पी. सामंत जी ने समारोह की अध्यक्षता निभाई।

समारोह के प्रारंभ में प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष आदि विद्वाजनों ने दीपप्रज्वलन किया। इस अवसर पर हिंदी विभाग के छात्राओं ने स्वागतगीत पेश किया। समारोह का प्रास्ताविक हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉ. सुधीर कांबळे जी ने किया। उसके बाद अतिथि परिचय डॉ. संदेश पाठक ने करवाया।

समारोह के प्रमुख अतिथि डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का स्वागत हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुधीर कांबळे जी ने गुलदस्ता देकर किया। समारोह के अध्यक्ष का स्वागत डॉ. संदेश पाठक जी ने किया तथा हिंदी विभाग के छात्र सागर मोहिते ने सभी अध्यापकों का गुलाब पुष्प देकर स्वागत किया। प्रमुख अतिथि के करकमलों से निबंध प्रतियोगिता में अव्वल आए छात्रों का सम्मान किया।

हिंदी दिवस के सुअवसर पर छात्र-छात्राओं ने मंतव्य प्रकट करते हिंदी भाषा की महत्ता के प्रस्तुत किया। इसमें सागर पाटील, प्रतिभा कांबळे, रेश्मा सावंत, मानसी देशपांडे आदि शामिल थे। तत्पश्चात प्रमुख अतिथि डॉ. अर्जुन चव्हाण जी ने अपना मंतव्य रखते हुए कहा कि, ''हिंदी आज केवल किताओं तक सीमित नहीं है तो वह इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की प्रमुख भाषा के रूप में उभरती हुई नजर आ रही है।'' साथ ही हिंदी के प्रचार-प्रचार में संचार माध्यमों की उपयुक्तता को भी स्पष्ट किया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. एस. पी. कामंत जी ने विश्व में हिंदी भाषा के बढत महत्त्व को स्पष्ट किया। विभाग के छात्र सुनील माने ने आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगीत के साथ यह समारोह समाप्त हुआ। समारोह का सूत्रसंचालन निलेश चव्हाण ने किया।

2) विश्व जनसंख्या दिवस का समाचार लेखन :

एस. के. पाटील महाविद्यालय में विश्व जनसंख्या दिवस समारोह कोल्हापूर दि. 12 : एस. के. पाटील महाविद्यालय, कोल्हापूर में 11 जुलै 2020 को सुबह 10.00 बजे 'विश्व जनसंख्या दिवस' समारोह का आयोजन किया था। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्राध्यापक, प्रशासकीय कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएँ बडी संख्या में उपस्थित थे। समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर डॉ. पी. एस. कांबळे जी उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष के रूप में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. पी. एस. पाटील उपस्थित थे।

प्रास्ताविक अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. सुशांत भोसले ने किया। तत्पश्चात सहयोगी प्राध्यापक डॉ. अरुण चौगले ने अतिथि परिचय की जिम्मेदारी निभाई। प्रमुख अतिथि का स्वागत प्रधानाचार्य डॉ. पाटील जी ने किया। उनका स्वागत डॉ. सुशांत भोसले ने किया। प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष के ने मिलकर महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्पमाला चढाई।

स्वागत के पश्चात छात्र-छात्राओं ने अपने मंतव्य में 'विश्व जनसंख्या दिवस' मनाने के पीछे के कारणों को विशद किया। इसके पश्चात प्रमुख अतिथि डॉ. पी. एस. कांबळे जी ने कहा कि, ''यदि हमने बढती जनसंख्या पर रोक नहीं लगाई तो भविष्य में मनुष्य को भूखमरी, बेरोजगारी और गरीबी का सामना

करना पडेगा।'' साथ ही उन्होंने बढती आबादी पर रोक लगाने के कुछ कारगर उपाय भी बताए। समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. पी. एस. पाटील जी ने भारत में बढती जनसंख्या के पीछे के कारणों को प्रस्तुत किया। अर्थशास्त्र विभाग की छात्रा संजना डकरे ने आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ। समारोह का सूत्रसंचालन मनिष कुलकर्णी ने किया।

3) 'शिक्षक दिन' समारोह का समाचार लेखन :

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय में 'शिक्षक दिन' -

कडेपूर दि. 04 : यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, कडेपूर में 05 सितंबर 2020 को 'शिक्षक दिन' समारोह का आयोजन किया था। इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ बडी संख्या में उपस्थित थे। समारोह के अतिथि के रूप में महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर के अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष के रूप में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. बी. एस. जाधव उपस्थित थे।

प्रास्ताविक सांस्कृतिक विभाग प्रमुख डॉ. राजेश देसाईने किया। तत्पश्चात सहायक प्राध्यापक डॉ. रमेश पाटील ने अतिथि परिचय की जिम्मेदारी निभाई। प्रमुख अतिथि का स्वागत प्रधानाचार्य डॉ. बी. एस. जाधव जी ने किया। प्रधानाचार्य जी का स्वागत डॉ. राजेश देसाई ने किया। प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा पर पुष्पमाला चढाई।

स्वागत के पश्चात महाविद्यालय के छात्र सुनील कदम और युवराज खोत ने अपने मंतव्य प्रकट किए। जिसमें उन्होंने छात्रजीवन में शिक्षकों के महत्त्व को विशद किया। महाविद्यालय के मराठी विभाग प्रमुख डॉ. सरदार नवले जी ने आधुनिक युग में शिक्षकों की बदली भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किए। समारोह के प्रमुख अतिथि डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी ने कहा कि, ''सामाजिक जीवन को स्वस्थ एवं सुंदर बनाने के लिए शिक्षकों को हर समय जागरूक रहना बेहत जरूरी है।'' समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. बी. एस. जाधव ने कहा कि, ''छात्रों को संस्कारशील एवं कर्तव्यदक्ष बनाने में शिक्षक अहम् भूमिका निभाते हैं।'' समारोह का आभार प्रदर्शन प्राध्यापक रमेश बनसोडे ने किया। राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ। सूत्रसंचालन की भूमिका प्रा. डॉ. वंदना देसाई ने निभाई।

4) काव्य गोष्ठी समारोह : समाचार लेखन :

एस. डी. चौगले महाविद्यालय में काव्य गोष्ठी समारोह वाशी दि. 19 अगस्त 2020 को काव्यगोष्ठी समारोह का आयोजन किया था। समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में हिंदी की प्रख्यात महिला रचानाकार सुशीला टाकाभौरे जी उपस्थित थी। समारोह के अध्यक्ष महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. पी. जी. सावंत उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर दीप प्रज्वलन किया। महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. नवनाथ जाधव जी ने प्रास्ताविक किया। तत्पश्चात सहयोगी प्राध्यापक डॉ. उमेश पवार ने

प्रमुख अतिथि का परिचय करवाया। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. पी. जी. सावंत जी ने प्रमुख अतिथि सुशील टाकभौरे जी का स्वागत फुलों का गुलदस्ता देकर किया।

समारोह के इस सुअवसर पर छात्र-छात्राओं ने काव्य रचनाएँ प्रस्तुत की। इसमें सामाजिक समस्याओं को लेकर कविताओं का प्रस्तुतीकरण अधिक हुआ था। हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक सतिशय पाटील ने अपने मंतव्य को रखते हुए काव्य और जीवन के अटूट संबंध को प्रस्तुत किया। इसके बाद प्रमुख अतिथि सुशीला टाकभौरे जी ने अपनी काव्य रचनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि, ''सामाजिक समस्याओं, परिस्थितियों और उलझनों को वाणी देने का सशक्त माध्यम काव्य है।'' साथ ही उन्होंने काव्य-लेखन संबंधी कुछ मौलिक तथ्यों को भी प्रस्तुत किया।

समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. पी. जी. सावंत जी ने मनुष्य जीवन में काव्य के महत्त्व के संबंध में छात्रों को अवगत कराया। समारोह का आभार प्रदर्शन विभाग की छात्रा सुरेखा देशपांडे ने किया। राष्ट्रगीत से समारोह का समापन हुआ। सूत्रधार की भूमिका प्रतिक्षा पाटील और मनीषा कांबळे ने निभाई।

4.3.3 सामाजिक समारोह का स्वरूप :

मनुष्य और समाज दोनों एक दूसरे के पूरक है। मनुष्य है तो समाज है और समाज है तो मनुष्य है। समाज में पारस्पारिक सहानुभूति, उदारता, त्याग और सेवा भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए समाज में पास्पारिक साहचर्य बढानेवाले समारोहों का आयोजन होना आवश्यक है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए विविध सामाजिक संस्थाओं द्वारा अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसके साथ नगर निगम, ग्राम पंचायत, जिला परिषद, नगर परिषद, विभिन्न प्रकार के क्लब, आश्रम, मंदिर, धर्मशाला आदि संस्थाओं द्वारा सामाजिक सुधार संबंधी समारोहों का आयोजन किया जाता है। जिसमें समाज सुधारकों के जन्मदिन, स्मृतिदिन जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

युवा मंडलों की ओर से विभिन्न सामाजिक समारोह संपन्न किए जाते हैं। छत्रपती शिवाजी महाराज, शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, महात्मा गांधी आदि महान व्यक्तियों के स्मरण में विभिन्न समारोहों का आयोजन किया जाता है। जिससे व्यक्ति इन महान विभुतियों के आदर्श जीवन में धारण कर सके। साथ ही रंगोली, भाषण, नृत्य एवं गायन आदि प्रतियोगिताओं का गठन भी किया जाता है।

साहित्य सम्मेलन क्रीडा प्रतियोगिता, सांस्कृतिक समारोह, धार्मिक समारोह आदि से संबंधित विविध समारोह सामाजिक समारोह के हिस्सा बन चुके हैं। समाज में घटित होनेवोली विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों को सामाजिक समारोह कहा जाता है।

4.3.3.1 सामाजिक समारोह की विवरण शैली :

महाविद्य युग में अनेक सामाजिक समारोहों का आयोजन होता रहता है। विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही विभिन्न सामाजिक उपक्रमों का गठन भी इसके माध्यम से किया

जाता है। इन उपक्रमों का समापन विशिष्ट कार्यक्रम के माध्यम से संपन्न होता है। सामाजिक जीवन में हो रहे बदलावों का चित्रण सामाजिक समारोह में किया जाता है।

समाचार लेखन में सामाजिक समारोहों के प्रस्तुतीकरण एवं उद्‌देश्य का समावेश किया जाता हैं सामाजिक समारोह के समाचार लेखन में समारोह का स्थल, स्थान, समय, समारोह शामिल हुए व्यक्तियों के नाम, महत्त्वपूर्ण विचार, प्रयोजन, आदि बातों के साथ प्रसिद्‌ध व्यक्तियों के विचारों का समावेश होना चाहिए। समारोह के आयोजन के अनुसार प्रस्तुतीकरण होना चाहिए।

समारोह की प्रत्येक गतिविधि का क्रमबद्‌धता से समाचार लेखन में वर्णन आना चाहिए। समाचार में सभी महत्त्वपूर्ण बातों और घटनाओं का यथार्थ वर्णन होना चाहिए। अगर किसी सांस्कृतिक समारोह का समाचार लेखन करना हो तो समारोह कहाँ संपन्न हुआ, प्रमुख अतिथि कौन थे, कार्यपद्‌धति किस प्रकार कि थी आदि बातों का वस्तुनिष्ठ एवं उचित ढंग से वर्णन करना चाहिए। जिससे पाठक समाचार को तन्मयता से पढ सके।

4.3.3.2 सामाजिक समारोह – महत्त्वपूर्ण बिंदू :

सामाजिक समारोह संबंधी समाचार लेखन करते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

1) समारोह के विषय में योग्य जानकारी लेकर समाचार लेखन करना चाहिए।
2) समाचार लेखन में महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन होना चाहिए।
3) क्रमबद्‌धता का होना अनिवार्य है।
4) दिनांक, स्थान, समय तथा महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का स्पष्ट उल्लेख हो।
5) समाचार लेखन में स्पष्टता होना चाहिए।
6) अनुच्छेद का योग्य संयोजन होना चाहिए।
7) सार्थक एवं सारगर्भित शीर्षक होना चाहिए।
8) प्रमुख अतिथि एवं समारोह के अध्यक्ष का मंतव्य संक्षेप में देना चाहिए।

4.3.3.3 सामाजिक समारोह का प्रारूप लेखन :

'राही सरनोबत का सत्कार'

कोल्हापूर दि. 21 : अभिनव सामाजिक संस्था, कोल्हापूर की ओर से राही सरनोबत को 20 अक्तूबर 2020 को सम्मानपूर्वक गौरवान्वित किया गया।

कोल्हापूर के अभिनव सामाजिक संस्था द्‌वारा हर साल विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा शक्ती एवं हुनर का परिचय देनेवाले लोगों को गौरवान्वित किया जाता है। कोल्हापुर की राही सरनोबत ने निशानेबाजी में

अनेक विश्वविक्रम किए है। वह विश्व कप में स्वर्णपदक जीतनेवाली पहली भारतीय पिस्टल निशाणेबाज है। हाल ही में उन्हें भारत सरकार की ओर 'अर्जुन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय निशाणेबाजी के क्षेत्र में उन्होंने किए हुए अनेक विश्वविक्रमों को ध्यान में रखते हुए अभिनव सामाजिक संस्था की ओर से उसे गौरवान्वित किया गया।

इस अवसरपर राही सरनोबत ने बचपन से लेकर आंतरराष्ट्रीय खिलाडी बनने के सफर में किन संघर्षों का सामना करना पडा, उसका वर्णन किया। साथ ही साहस और निडरता के साथ महिलाओं को अपने जीवन स्तर में सुधार लाने का संदेश भी दिया। उनके साहस, श्रमप्रवृत्ति और नीडरता जैसे गुणों से श्रोतागण भावविभोर हो गए।

अभिनव सामाजिक संस्था के अध्यक्ष सुशांत जाधव ने कहा कि, ''जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए श्रम और साहस के सिवा दूसरा पर्याय नहीं है।'' साथ ही इन्होंने राही सरनोबत के आदर्श को सामने रखकर कार्य करने के लिए कहा। आभार प्रदर्शन का कार्य सुमित म्हेत्तर ने किया। सूत्रसंचालन तेजल चौधरी ने किया।

4.3.3.4 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन की भाषा :

सामाजिक समारोह के समाचार लेखन की भाषा में निम्नांकित विशेषताएँ होनी चाहिए -

1) सकारात्मक भाषा का प्रयोग होना चाहिए।
2) भाषा में सरलता और सजीवता होनी चाहिए।
3) भाषा में व्याकरणिक नियमों को ध्यान में रखना चाहिए।
4) भाषा में वर्तनी दोष बिलकुल न हो।
5) सभी वर्ग के लोगों को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग होना चाहिए।
6) कृत्रिम और निरस भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
7) पाठकों की जिज्ञासा बढानेवाली भाषा हो।
8) लोकरूचि से पूर्ण शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।
9) भाषा में रोचकता एवं नयापन होना चहिए।
10) आलंकारिक भाषा का प्रयोग न हो।
11) अनावश्यक बातों का वर्णन नहीं करना चाहिए।
12) भाषा अतिशयोक्तिपूर्ण न हो।
13) महत्त्वपूर्ण वाक्यों का योग्य प्रस्तुतिकरण होना चाहिए।

4.3.3.5 सामाजिक समारोह : समाचारलेखन की विशेषताएँ :

समाज में एकता, समता और बंधुता को ध्यान में रखते हुए सामाजिक समारोहों का आयोजन किया जाता है। इन समारोहों के विषयों को पाठक वर्ग तक पहुँचाना समाचार लेखन का उद्देश्य होता है।

1) समाज के बौद्धिक विकास में ऐसे समारोह महत्त्वपूर्ण होते हैं।
2) विभिन्न सामाजिक समस्याओं को वाणी प्रदान करने का काम ऐसे समारोह के समाचार लेखन में किया जाता है।
3) विभिन्न सामाजिक समस्याओं की वाणी प्रदान करने का काम ऐसे समारोह के समाचार लेखन में किया जाता है।
4) समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ऐसे समारोहों का आयोजन होता है।
5) महान व्यक्तियों के आदर्शों को समाज में पिरौने के लिए ऐसे समारोह आयोजित होते हैं।
6) लोगों के अंदर की प्रतिभा और कुशलता को मंच प्रदान करने का काम सामाजिक समारोह करते हैं।
7) वैचारिक दृष्टि में संपन्नता लाने के लिए सामाजिक समारोहों का आयोजन होता है।
8) विभिन्न क्षेत्रों में कुशलता प्राप्त करने की ऊर्जा ऐसे समारोह देते हैं।
9) व्यक्ति के विविध कलाओं और गुणों का विकास इन गतिविधियों के माध्यम से होता है।
10) निरोगी जीवन के सूत्र समाज के सामने रखने के उद्देश्य से सामाजिक समारोह गठित किए जाते हैं।
11) सामाजिक चेतना को जागृत करने के लिए इस प्रकार के समारोह आयोजित होते हैं।
12) समाज में विवेकशील एवं विज्ञानवादी दृष्टिकोण निर्माण करने में ऐसे सामाजिक समारोह सहायक होते हैं।

4.3.3.6 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन की समस्याएँ :

सामाजिक समारोह के समाचार लेखन में निम्न समस्याएँ आती है –

1) समाचार लेखन में सत्य जानकारी का अभाव होता है।
2) कभी-कभी समाचार लेखन बढा-चढाकर पेश किया जाता है।
3) दीपप्रज्वलन एवं प्रतिमापूजन करनेवाले अतिथियों की लंबी सूची दी जाती है।
4) जानबूझकर नाट्यपूर्ण बातें लिखी जाती है।
5) समाचार लेखन में कभी-कभी काल्पनिक घटनाओं का वर्णन भी किया जाता है।
6) समाचार लेखन में घटनाओं का सिलसिलेवार वर्णन हर हाल में होना चाहिए।
7) कभी-कभी व्यक्तियों के नाम भी बदल दिए जाते हैं।
8) घटनाओं का वर्णन कभी-कभी निकृष्ट भाषा में होता है।

4.3.3.7 सामाजिक समारोह : समाचार लेखन :

1) शिवजयंती समारोह का समाचार लेखन :

''कोल्हापुर में धूमधाम से मनाई गई शिवजयंती''

कोल्हापुर दि. 20 : कोल्हापुर के शिवप्रेमी युवा मंडल की ओर से 19 फरवरी 2020 के शाम ठीक 4.00 बजे छ. शिवाजी महाराज जयंती समारोह उत्साह के साथ मनाई गई। इस समारोह के लिए शिवसेना के विधायक प्रकाश आबिटकर प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष कोल्हापुर जिला शिवसेना प्रमुख विजय देवणे उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष और शिवप्रेमी युवा मंडल के अध्यक्ष ने मिलकर दीपप्रज्वलन किया। साथ ही छत्रपती शिवाजी महाराज की प्रतिमा को पुष्पमाला अर्पण कर पूजन किया गया। समारोह का प्रारंभ कन्या विद्यालय, कोल्हापूर की छात्राओं के स्वागत गीत से हुआ। शिवप्रेमी युवा मंडल के अध्यक्ष प्रकाश पाटील ने प्रास्ताविक प्रस्तुत किया। समारोह के अध्यक्ष विजय देवणे जी ने प्रमुख अतिथि प्रकाश आबिटकर जी का स्वागत फुलों का गुलदस्ता देकर किया। विजय देवणे जी का स्वागत युवा मंडल के उपाध्यक्ष राहुल देसाई ने किया। युवा मंडल के सदस्य राज मोहिते ने अतिथि परिचय करवाया।

समारोह के अवसर पर शिवचरित्र के ऊपर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गा था। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त युवाओं को प्रमुख अतिथियों के हाथों प्रशस्तिपत्र देकर गौरवान्वित किया गया।

समारोह के प्रमुख अतिथि प्रकाश आबिटकर जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''शिवाजी महाराज सबके हृदय में बसे हुए हैं, इनके आदर्शों और विचारों का पालन कर समाज जीवन को बेहतर बनाना चाहिए।'' साथ ही इन्होंने शिवाजी महाराज के संघर्षशील जीवन के बहुत सारे उदाहरण भी प्रस्तुत किए। शिवसेना के जिला प्रमुख विजय देवणे ने कहा कि, ''शिवाजी महाराज के गड, किल्लों की सुरक्षा करना युवा पीढी का परमकर्तव्य है।'' सागर निंबालकर ने आभार प्रदर्शन किया। राष्ट्रगीत से समारोह समाप्त हुआ। समारोह का सूत्रसंचालन निलेश भालेकर ने किया।

2) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती समारोह :

''सातारा में आंबेडकर जयंती समारोह संपन्न''

सातारा दि. 15 : सातारा के शाहु मैदान में 14 अप्रेल 2020 को सुबह 10.00 बजे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती बडी धूमधाम से मनाई गई। आंबेडकर विचार मंच, सातारा की ओर से यह समारोह आयोजित किया गया था। इस समारोह के लिए रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रामदास आठवले जी उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष डॉ. तुषार जाधव जी उपस्थित थे। आंबेडकर विचार मंच के सभी पदाधिकारी सदस्य उपस्थित थे।

प्रारंभ में प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की प्रतिमा का पूजन किया। प्रास्ताविक अवनिश कांबळे ने किया। अतिथि परिचय का दायित्व सुजय भोसले ने निभाया। प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष का स्वागत आंबेडकर विचार मंच के सदस्य संजय सावंत ने किया।

समारोह के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्रप्त युवाओं को प्रमुख अतिथियों के हाथों प्रशस्तिपत्र देकर गौरवान्वित किया गया।

प्रमुख अतिथि रामदास आठवले जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''सदियों से दलित पीडित जनता के पैरों में क्रांति की ताबद भरने का काम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने किया है।'' आज भी उनके विचार हमारे लिए दिशा दर्शक के रूप में कार्य करते हैं। समारोह के अध्यक्ष डॉ. तुषार जाधव ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''समाज में समता और बंधुता के बीज बोने के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचार अनुकरणीय है।'' सुरेश कांबळे ने धन्यवाद ज्ञापित किया। राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ।

3) महात्मा गांधी जयंती समारोह :

''कोल्हापुर में गांधी जयंती समारोह संपन्न''

कोल्हापुर दि. 3 : कोल्हापुर के गांधी मैदान में महात्मा गांधी जयंती शानदार तरीके से संपन्न हुई। सवेदिय सामाजिक संस्था कोल्हापुर की ओर से यह समारोह आयोजित किया गया था। इस समारोह के लिए प्रमुख अतिथि शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के राज्यशास्त्र विभाग के डॉ. रविंद्र भणगे जी उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष के रूप में डॉ. सुजय सरदेसाई उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने महात्मा गांधीजी की प्रतिमा को पुष्पमाला पहनाकर पूजन किया। सर्वोदय सामाजिक संस्था के सदस्य संताजी चव्हाण ने प्रास्ताविक तथा अतिथि परिचय करवाया। प्रमुख अतिथि के हाथों विभिन्न प्रतयोगिताओं में अव्वल विजेताओं को गौरवान्वित किया गया।

डॉ. रविंद्र भणगे जी ने महात्मा गांधीजी के विचारों की महत्ता को प्रस्तुत करते हुए कहा कि, ''महात्मा गांधीजी के सत्य और अहिंसा के मार्गपर चलकर ही हम अपने जीवन में सुख, शांति ला सकते है।'' साथ ही इन्होंने गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता को भी स्पष्ट किया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. सुयश सरदेसाई ने कहा कि, ''राष्ट्र निर्माण में महात्मा गांधीजी का योगदान अतुलनीय है।'' सचिन पाटील ने आभार व्यक्त किया। राष्ट्र गीत से समारोह का समापन हुआ। समारोह की सूत्रधार जया भोसले थी।

4) महात्मा फुले जयंती समारोह :

''सांगली में महात्मा फुले जयंती समारोह संपन्न''

सांगली दि. 12 : सांली के शिवाजी सांस्कृतिक भवन में 11 अप्रैल 2020 को सुबह 10.00 बजे महात्मा फुले जयंती बडे धूमधाम से मनाई गई। समारोह का आयोजन फुले, शाहू, प्रतिष्ठान, सांगली की ओर से किया गया था।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के कुलसचिव डॉ. विलास नांदवडेकर जी इस समारोह के प्रमुख अतिथि थे। समारोह के अध्यक्ष रोटरी क्लब ऑफ सांगली के अध्यक्ष प्रमोद पाटील उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि और समारोह के अध्यक्ष ने मिलकर दीपप्रज्वलन करके महात्मा फुले की प्रतिमा को पुष्पमाला अर्पण कर पूजन किया। इसके पश्चात एस. डी. पाटील विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत पेश किया। समारोह का प्रास्ताविक एवं अतिथि परिचय फुले, शाहू प्रतिष्ठान के अध्यक्ष संजीव मोहिते ने किया। प्रतिष्ठान के सदस्य सुधीर पाटील और सचिन कांमत ने अपने मंतव्य व्यक्त किए।

डॉ. विलास नांदवडेकर जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''महात्मा फुले जी ने अपना सारा जीवन महिलाओं और दलितों के उत्थान में लगाया।'' साथ ही उन्होंने महात्मा फुले जी के जीवन चरित्रपर भी प्रकाश डाला। समारोह के अध्यक्ष प्रमोद पाटील ने कहा कि, ''आज सभी वर्गों के लोगों को जो शिक्षा का अधिकार मिला है उसके पीछे महात्मा फुले जी का योगदान अतुलनीय है।'' समारोह का आभार प्रदर्शन सरदार देसाई ने किया। राष्ट्रगीत के पश्चात समारोह संपन्न हुआ। प्रा. प्रविण पाटील ने सूत्रसंचालन किया।

4.3.4 प्राकृतिक आपदाएँ : स्वरूप और प्रकार :

मानव जीवन के विकास में प्रकृति का अहम् योगदान रहा है। प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा संबंध है। प्रकृति मनुष्य की विभिन्न गतिविधियों में सहायक होती है। प्रकृति अपने पास के चीजों का स्वयं उपयोग नहीं करती तो वह मानव के बेहतर जीवन में सहायता करती है। प्रकृति से अलग मानव जीवन की कल्पना करना असंभव है।

मनुष्य अपने ज्ञान और बुद्धि के बलबूते पर प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की कोशिशि करता है। लेकिन आज भी प्रकृति के विभिन्न घटनाओं और स्थितियों से वह अंजान ही है। कुछ बांते उसके वैचारिकता से भी परे हैं। मनुष्य जीवन में सहायक प्रकृति कभी-कभी रौद्र रूप भी धारण कर लेती है। जिससे अनेक प्राकृतिक आपदाओं का मनुष्य को सामना करना पडता है।

जैसे - बाढ, भूचाल, पर्वतों का रस्खलन, त्सुनामी, अकाल, ज्वालामुखी का उद्रेक और समंदर में होनेवाली विभिन्न हलचलों से निर्मित आपत्तियाँ आदि अनेक प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य जीवन को तहस-नहस कर देती है।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार :

प्राकृतिक आपदाओ के निम्न प्रकार किए जा सकते हैं -

1) प्राकृतिक आपदाएँ :

प्रकृति कभी-कभी विनाशकारी रूप धारण कर तांडव करती हुई नजर आती है। जिसपर मनुष्य का चित्रण नहीं होता। भूकंप, बाढ, त्सुनामी, तूफान आदि मनुष्य जीवन की गतिविधियों को काफी प्रभावित करते हैं।

2) मानवनिर्मित प्राकृतिक आपदाएँ :

मनुष्य अपनी विभिन्न लालसाओं की पूर्ति के लिए प्रकृति से खिलवाड करता रहता है। जिसका परिणाम उसे भुगतना ही पडता है। जैसे पेठों के काटने से अकाल और तापमान में बढोत्तरी का सामना मनुष्य को करना पड रहा है।

4.3.4.1 प्राकृतिक आपदाएँ : प्रारूप लेखन :

''इंडोनेशिया में भूकंप, 800 लोगों की मौत''

जकार्ता, दि 25 : इंडोनेशिया के सुंबा द्वीप के दक्षिणी तट पर मंगलवार सुबह 6.5 रिश्टर स्केल तीव्रता का भूकंप आया। इस भूचाल के कारण इंडोनेशिया में बहुत सारा नुकसान हो चुका है। इसके साथ 800 लोगों की मौत भी हो गई है। इस तीव्र भूचाल से कई इमारते मलबे में तबदील हो चुकी है। मलबे के नीचे कई लोगों के दबे होने की आशंका है। कितने सारे घायाल लोग इधर-उधर पडे हुए हैं। जिन्हें अस्पताल में पहुँचाने का कार्य जारी है। मलबे के नीचे दबे हुए लोगों की निकालने का राहत कार्य भी जारी है। मलबे में दबने के बाद भी कुछ लोगों को सही सलामत बाहर निकाल दिया गया है।

इंडोनेशिया में पिछले 50 सालों में हुए भूचाल में से यह घटना सबसे बडी है। अमेरिकी भूगर्भीय सर्वेक्षण के अनुसार भूकंप का केंद्र सुंबा से करीब 40 किलोमीटर की दूरीपर जमीन से 10 किलोमीटर नीचे गहराई में केंद्रित है। इंडोनेशिया में आए इस भूचाल के झटकों से पूर्वी तिमोर, मलेशिया, सिंगापुर और फिलीपींस में 15 लोगों की मौत हुई, तो 50 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए है। अंदमान और निकोबार द्वीप समूह पर भी अनेक लोग मारे जाने की आशंका है। इंडोनेशिया के सिगी बिरोमारू जिले में भूकंप के झटकों से अनेक मकान दह गए हैं। मकानों को मलबे के नीचे 50 लोग फँसे हुए हैं। साथ ही बचावकर्मियों द्वारा उनको बाहर निकालने का कार्य शुरू है।

भूकंप का पहला झटका लगाने पर इंडोनेशिया प्रशासन ने रेडिओ द्वारा लोगों को घर से बाहर निकलने की सूचना दी थी। कुल मिलाकर 10 झटके लगे हुए थे। मरनेवालों की संख्या में बढोत्तरी होती जा रही है। इंडोनेशिया का भारी आर्थिक नुकसान हो चुका है। इंडोनेशिया की सेना बचाव-कार्य में जुटी हुई है। देश के राष्ट्रपति ने अंतरराष्ट्रीय मदद की गुहार भी लगाई है। कई ऐसे क्षेत्र अब भी हैं जो सरकार के बचाव

प्रयासों के केंद्र में नहीं है। भूचाल के बाद हवाई जहाज और रेल सुविधा पर भी रोक लगाई गई है। कई रास्तों में दरारे भी पड चुकी है। इस आपत्ती को राष्ट्रीय आपत्ती घोषित किया गया है।

4.3.4.2 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन की भाषा :

प्राकृतिक आपदाओं के समाचार लेखन की भाषा आपदाओं के गंभीरता को स्पष्ट करनेवाली होनी चाहिए। इसमें सरलता, सहजता एवं वस्तुनिष्ठता के गुण होने चाहिए। भाषा में अतिशयोक्ति का प्रयोग नहीं होना चाहिए। भाषा बोधवाक्य, सुबोध और आकर्षक होनी चाहिए।

समाचार लेखन की भाषा में प्रवाहमयीता होनी चाहिए। व्याकरण की दृष्टि से भाषा का उचित प्रयोग होना चाहिए। नहीं तो गलत अर्थ निकलने की संभावना रहती है। वर्तनी दोषों से भी बचना चाहिए। सभी वर्ग के लोगों की समचार में दिलचस्पी बढानेवाली भाषा का प्रयोग होना चाहिए। भाषा में सूत्रबद्धता और मार्मिकता होनी चाहिए। मखौल उडानेवाली भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। घटना के परिदृश्य एवं प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

4.3.4.3 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन की विशेषताएँ :

प्राकृतिक आपदाओं से मनुष्य जीवन में तबाही मच जाती है। मनुष्य को कई दिनों तक इसके परिणाम भुगतने पडते हैं। उसका दैनंदिन जीवन भी प्रभावित हो जाता है।

1) समाचार लेखन रोचक एवं जिज्ञासा बढानेवाला होना चाहिए।

2) इसमें काल्पनिक बातों का वर्णन नहीं करना चाहिए।

3) मुख्य घटना से संबंधित अन्य घटनाओं का वर्णन आवश्यक है।

4) समाचार लेखन से संवेदनात्मक जागृति होना आवश्यक है।

5) समाचार लेखन हृदयस्पर्शी होना चाहिए।

6) घटना का पूरा विवरण आना आवश्यक है।

7) प्रसंगानुरूप भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

8) घटना के वर्णन में सत्यता और प्रामाणिकता होनी चाहिए।

9) समाचार लेखन में एकसूत्रता और क्रमिकता होनी चाहिए।

10) प्रभावित या पीडित व्यक्तियों का उल्लेख होना आवश्यक है।

11) प्राकृतिक आपदाओं से होनेवाले दूरगामी परिणामों का वर्णन आवश्यक है।

4.3.4.4 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन की समस्याएँ :

1) समाचार लेखन में अस्पष्टता नहीं होनी चाहिए।

2) अनावश्यक विवरण नहीं करना चाहिए।

3) व्याकरणिक नियमों की तोड मरोड नहीं होनी चाहिए।

4) सुनी-सुनाई घटनाओं का उल्लेख नहीं आना चाहिए।

5) समाचार से गलतफहमियाँ पैदा होनी गुंजाइश न हो।

6) व्यक्तिगत विचारों का वर्णन आवश्यक नहीं है।

7) घटना का वर्णन पढकर पाठक को ऊबाउपन महसूस न हो।

8) अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन नहीं आना चाहिए।

9) तथ्यों में जोड-तोड की कोई गुंजाइश नहीं है।

10) घटना को जानकर ही वर्णन करना चाहिए।

4.3.4.5 प्राकृतिक आपदाएँ : समाचार लेखन :

1) कोल्हापूर में बाढ से भीषण तबाही :

कोल्हापुर दि. 20 : कोल्हापुर में 15 अगस्त 2019 से हो रही लगातार बारिश के चलते बाढ की भीषण समस्या निर्माण हो चुकी थी। पूरा कोल्हापुर शहर बाढ की चपेट में आ चुका था। मूसलधार बारिश के कारण पंचगंगा नदी ने विकराल रूप धारण कर लिया था। नदी का जलस्तर 45 फुट तक पहुँच चुका था। इसके साथ राधानगरी नहर से 75,000 क्युसेक्स पानी प्रति सेकंड छोडा जाने के कारण जलस्तर में बढोत्तरी ही हो रही थी। चारों ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। शहर के आसपास के गाँव भी बाढ की चपेट में आ चुके थे। बहुत सारे सरकारी दफ्तरों, मॉल, दुकानों में पानी घूसने की वजह से लोगों का भारी मात्रा में नुकसान हो चुका था। कई लोग पानी में बह गए थे। कुछ लोगों के शव भी नहीं मिल पा रहे थे। लोग अपने घरों की छतों पर बडी संख्या में फँस चुके थे। पानी के तेज बहाव के चलते घरों का कुछ सामान पानी के ऊपर तैरने लगा था।

कोल्हापुर शहर के रास्तों को नदी-नालों का स्वरूप आ चुका था। बारिश भी थमने का नाम नहीं ले रही थी। कोल्हापुर शहर से अन्य गाँवों और जिलों का संपर्क टूट चुका था। एनडीआरएफ के जवान लोगों को घरों से सुरक्षित बाहर निकालने का कार्य पूरी मेहनत से कर रहे थे। मनुष्य एवं पशुओं को बाहर निकालने में जवानों को सफलता मिल रही थी। बहुत सारे युवा मंडल और स्थानीय लोग बचाव कार्य में

जवानों की मदद कर रहे थे। प्रशासन ने 2000 से ज्यादा परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित कर दिया था। बचाव कार्य के दौरान भ्रम या अफवाहों से बचने के लिए जिला मॅजिस्ट्रेट द्वारा पूरे जिले में धारा 144 लगाई गई थी। कोल्हापुर में आनेवाली सभी ट्रेनों पर भी रो लगाई थी। बाढ पीडित इलाकों का जायजा लेते हुए सरकार ने लोगों को आर्थिक सहायता करने का आश्वासन भी दिया था। बाढ का प्रकोप कम होने के बाद गंदगी के कारण अनेक बिमारियाँ सिर उठाने लगी थी।

2) लातूर में विनाशकारी भूकंप :

लातूर, दि. 02 : लातूर में बुधवार की सुबह 6.4 रिश्टर स्केल का विनाशकारी भूकंप आया था। इस भुचाल के कारण पुरे लातूर जिले में बहुत बडा नुकसान हो गया था। लोग घबराकर इधर-उधर भागने लगे थे। इस भूकंप से लगभग 10,000 लोगों की मौत हो चुकी थी। लातूर जिले के कई इलाकों में 20,000 से ज्यादा मकान गिर गए थे। मलबे के नीचे बहुत सारे लोग दबे हुए थे। चारों ओर भय का माहौल बना हुआ था। भूचाल सुबह 4.00 बजे आने के कारण कई लोगों की नींद में ही मौत हो चुकी थी। 6.4 रिश्टर स्केल के इस भूकंप ने पूरे लातूर में तबाही मचा दी थी। इस भूकंप में 52 गाँव पूरी तरह तहस-नहस हो गए थे। लातूर के आसपास के कई जिलों में भी भूकंप से भारी नुकसान हो चुका था। भूकंप का केंद्र किल्लारी नामक स्थान मे जमीन से 12 किलोमीटर नीचे था। राहत एवं बचाव कार्य के दौरान सेना के जवानों ने हजारों लोगों को मलबे के नीचे से सही सलामत बाहर निकाला दिया था। इस दौरान कुछ स्थानीय लोग भी इस कार्य में सहायता कर रहे थे। घायल हुए व्यक्तियों को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाने का कार्य किया जा रहा था। खेतों और रास्तों में बडी-बडी दरारे पडी हुई थी। इसमें कई हजारों जानवर भी मर चुके थे। बचाव कार्य के लिए विश्व की विभिन्न एजेंसियोंद्वारा दान दिया जा रहा था। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एवं विधायकों के दल ने घटनस्थल पर पहुँचते हुए लातूर को बडे आर्थिक सहायता की घोषणा भी कर दी थी।

3) तामिलनाडू में त्सुनामी का कहर :

चेन्नई दि 25 : तामिलनाडू के तटीय क्षेत्रों एवं पडोसी प्रदेशों में समंदर में उठे सुनामी के कहर से 4 हजार लोगों की मौत हो गई। हिंदी महासागर में चट्टानों सी ऊंची उत्पन्न लहरों ने तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश और पांडेचरी में भारी तबाही मचाई। उसमें तमिलनाडु राज्य को ज्यादा नुकसान उठाना पडा। चेन्नई, नागपट्टिनम और कडालोर के तटीय इलाकों में लाशों के ढेल लगे हुए थे। त्सुनामी आने के पहले ही सागर की लहरें जोर-शोर के साथ तटवर्ती इलाके में टकराने लगी थी। आसपास रहनेवाले लोगों के लिए लहरों का टकराना कुछ नया नहीं था। मछुआरा समुदाय और अन्य लोग दिनभर के काम के बाद सोए हुए थे। समंदर की लहरे भयानक रूप धारण करने लगी थी। जिससे बहुत बडी आँधी आने की संभावना दिखाई दे रही थी। सभी लोग तूफान से अंजान थे। किसी ने भी लहरों के इस विकराल रूप को बाहर आकर देखने की कोशिश नहीं की। आधी रात को लहरों ने चट्टानों का रूप धारण कई तटवर्ती इलाकों को अपनी चपेट में ले लिया था। लोगों के कुछ समझ में आने से पहले ही हजारों फीट ऊँची लहरों ने सकबुछ बर्बाद कर दिया था।

सुबह होते होते तटवर्ती इलाके मलबे में तबदील हो चुके थे। मछुआरा समुदाय की बस्तियाँ तहस-नहस हो चुकी थी। कितने ही लोग मलबे के नीचे दबकर मर चुके थे। सरकार को इस तबाही का पता चलते ही प्रशासन ने बचाव कार्य के लिए जवानों के दो टुकडियों को भेज दिया था। उन्होंने गंभीर रूप से घायल लोगों को अस्पताल भेजने की व्यवस्था तुरंत कर दी। साथ ही मलबे के नीचे दबे हुए लोगों को बाहर निकालने का काम भी जारी किया। तमिलनाडु सरकार की ओर से मृत व्यक्तियों के परिवारवालों को दो लाख रुपये देने की घोषणा की गई। इस आपत्ति में देश की जनता को मदद के लिए आवाहन किया था।

4.3.5 दुर्घटनाओं का समाचार लेखन : स्वरूप :

आधुनिक युग में मनुष्य बेहतर जीवन के उद्‌देश्य से भागदौड करता हुआ नजर आने लगा है। वह कम समय में ज्याद से ज्यादा काम निपटाने की कोशिश करने लगा है। इसके लिए मनुष्य ने तेज रफ्तार वाली गाडियें, रेल और हवाई जहाज का अविष्कार किया है। जिसके चलते आए दिन किसी न किसी दुर्घटना का सामना उसे करना पड रहा है।

बहुत सारे युवक युवतियाँ मोटारसाइकल तेज रफ्तार से चलाकर अनेक दुर्घटनाओं को आमंत्रित कर लेते हैं। कभी-कभी इनके कारनामों से दुर्घटना में बेकसूर लोग मारे जाते हैं। कितनों के तो परिवार भी उजड जाते हैं।

रेल दुर्घटनाओं के मामले भी निरंतर बढते ही जा रहे है। इंजिन में खराबी होने से, सिग्नल न मिलने से और ड्राइव्हर की लापरवाही से रेल दुर्घटनाएँ घटित्त हो जाती है। इसमें कई लोगों को अपनी जान गवानी पडती हैं। बस, कार और ट्रक से होनेवाली दुर्घटनाएँ सामान्य बन चुके हैं। इससे संबंधित अनेक समाचार हमें हर दिन पढने को मिलते हैं। हवाई जहाज से संबंधित दुर्घटनाओं की संख्या भी काफी बढ चुकी है। जिसमें कंट्रोल युनिट से संपर्क न होनेपर या पायलट की गलती से विमान दुर्घटना ग्रस्त हो जाते हैं।

बडी-बडी कंपनियों, मीलों और कारखानों में आग लगेने से भीषण दुर्घटनाएँ हो जाती है। इसमें आग लगने के कई कारण हो सकते है। जिसमें सबकुछ जलकर राख हो जाता है। कई मजदूरों और कर्मचारियों का जीवन भी इसमें समाप्त हो जाता है।

4.3.5.1 दुर्घटनाओं का प्रारूप लेखन :

''आगजनी से चार मकान जलकर राख''

सांगली दि 20 : कल रात 12.00 बजे सांगली के भवानी रोड पर नृसिंह कॉलनी में भीषण आगजनी से चार मकान जलकर राख हो गए। अचानक आग लगने से अफरातफरी मची हुई थी। मकान में फँसे हुए लोग मदद के लिए जोर जोर से चिल्लाने लगे थे। कॉलोनी के सब लोग इकहट्ठा हो गए थे। चार मकानों को

जलते देखकर लोग भयभीत हो चुके थे। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। आसमान में आग की ऊँची लपटे उड रही थी।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और फायब्रिगेड के दल ने आकर आग बुझाने का काम किया। फायब्रिगेड के पाँच लोगों ने सीढियों की सहाय्यता से मकानों में घुसकर बचावकार्य शुरू किया था। आग की लपटों में से गुजरकर मकानों में रहनेवाले लोगों को बाहर निकाला था। अपनी जान की परवाह किए बिना वे लागों को की जान बचा रहे थे। उसी समय दो मकानों में गॅस सिलेंडर फटने से जोरदार धमाका हुआ। जिसके बाद एक मकान का ऊपरी हिस्सा गिर पडा। बचाव कार्य लगभग पाँच घंटों तक चल रहा था। आसपास के अन्य मकानों में आग न लगे इसलिए पानी के जोरदार फवारों का इस्तेमाल किया जा रहा था। अंत में उन्हें आग पर काबू पाने में सफलता प्राप्त हो गई थी।

सूत्रों के मुतालिक आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी हुई थी। आग ने मकानों को पूरी तरह जलाकर राख कर दिया था। इस आगजनी में 4 लोग झुलसकर मर गए। घायल हुए लोगों को तुरंग अस्तताल पहुँचाया गया था। इन सभी घरों में रखा हुआ अनाज, कागजात, बिस्तर और किंमती सामान आदि जलकर राख हो गए।

4.3.5.2 दुर्घटनाओं के समाचार लेखन की विशेषताएँ :

1) दुर्घटना के पीछे के कारणों का विवरण आना चाहिए।

2) दुर्घटना के समाचार लेखन में क्रमबद्धता होनी चाहिए।

3) समाचार का शीर्षक संक्षिप्त और सारगर्भित होना चाहिए।

4) दुर्घटना के स्थल, समय वर्णन के साथ प्रभावित व्यक्तियों के नामों का उल्लेख किया जाता है।

5) समाचार लेखक में साहसिकता और निडरता होनी चाहिए।

6) दुर्घटनाओं का समाचार लेखन रोचकता एवं बोधगम्यता से परिपूर्ण होता है।

7) अपने मन मुताबिक घटना का वर्णन करने से बचना चाहिए।

8) विशषणों का प्रयोग न के बराबर होता है।

9) दुर्घटना की भयावहता को व्यवस्थित रूप में वर्णित करना चाहिए।

10) दुर्घटना से प्रभावित घटकों की जानकारी विस्तार से देनी चाहिए।

11) उसी प्रकार से घटित अन्य दुर्घटना का वर्णन संक्षेप में होना चाहिए।

12) घटनाओं के वर्णन में सत्यता और प्रामाणिकताा होनी चाहिए।

4.3.5.3 दुर्घटनाओं के समाचार लेखन की समस्याएँ :

1) दुर्घटना के समाचार लेखन में अतिशयोक्ति वर्णन करने से बचना चाहिए।

2) समाचार लेखनकर्ता अपने मतों एवं विचारों को लेखन में घुसडे देने की संभावना रहती है।

3) समाचार लेखन में नकारात्मक भाषा का प्रयोग करके की संभावना रहती है।

4) समाचार लेखन में कृत्रिम भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

5) पदक्रम का ध्यान रखना आवश्यक है।

6) दुर्घटना के समाचार लेखन में पाठकों में भ्रम पैदा करनेवाले तथ्यों से बचना चाहिए।

7) दुर्घटनाओं के समाचार लेखन में स्थल, दिनांक एवं व्यक्तियों के नाम आदि में एकसूत्रता होनी चाहिए।

8) शीर्षक के विस्तारित रूप से बचना चाहिए।

9) दुर्घटना से संबंधित सभी तथ्यों का वर्णन होना जरूरी है।

10) दुर्घटना के समाचार लेखन में बीभत्स वर्णन न हो।

4.3.5.4 दुर्घटना का समाचार लेखन :

1) हायवे पर दो बसों के बीच टक्कर में 7 लोगों की मौत :

सातारा, दि 15 : पुणे-बेंगलोर हायवे पर सातारा के खंबाटकी घात में कल शाम 6.00 बजे दो बसों के बीच हुई भीषण टक्कर में एक बस 40 फिट गहरी खाई में गिरी। बस नं. 06-5055 पुणे से कोल्हापूर की ओर जा रही थी। बस के पीछे अन्य गाडियें की लंबी कतार लगी हुई थी। उसी समय दुसरी ओर से भी गाडियाँ तेज रफ्तार से दौड रही थी। बेलगाँव से निकली बस नं. 12-4748 ने इन गाडियों को ओवरटेक करने के प्रयास में सामने से आनेवाली बस से जाकर जोरदार टक्कर मारी। जिससे पुणे से कोल्हापुर जानेवाली बस नं. 06-5055 खाई में जाकर गिरी। बेलगाँव से आई हुई बस का ड्रायव्हर लोगों के भय से भाग चुका था। इस हादसे में 7 लोगों की घटनास्थलपरही मौत हो गई तथा 40 यात्री गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। जीवित व्यक्ति भय से काँपने लगे थे। इतने जोरदार हादसे के बावजूद दोनों बसों में मौजूद बच्चों को खरोच तक नहीं आई थी। स्थानीय लोगों ने पुलिस से तुरंग संपर्क करने से पुलिस घटनास्थल पर जल्दी ही पहुँच गई थी। उन्होंने स्थानीय लोगों की सहायता से खाई में गिरे बस के यात्रियों को बाहर निकालने का काम किया। घायल यात्रियों को तुरंग नजदीक के अस्तपाल में पहुँचाया गया। क्रेन की सहाय्यता से बस को बाहर निकाला गया था। इस घटना से यातायात पूरी तरह से ठप्प हो चुकी थी। दुर्घटना का समाचार मिलते ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने घटनास्थल पर पहुँचकर जाँच पडताल करते हुए अस्पताल में जाकर मरे हुए यात्रियों

के परिवारवालों को दो लाख रुपये देने का वचन दिया। साथ ही गंभीर रूप से घायला यात्रियों को 30,000 रुपये देने की घोषणा भी कर दी।

2) कार खाई में गिरने से चार लोगों की मौत :

सातारा, दि. 20 : सातारा शहर से कुछ ही दूरी पर कार खाई में गिरने से चार लोगों की मौत हो चुकी है। सूत्रों के मुतालिक मुंबई से कार नं. 04-8557 कागल में शादी समारोह के लिए निकली हुई थी। जिसमें एक ही परिवार के सारे सदस्य बैठे हुए थे। सातारा शहर के नजदीक आते ही कार का ब्रेक न लगने की वजह से कार अनियंत्रित हो गई। कार में बैठे हुए लोग जोर-जोर से चिल्लाने लगे। कार के ड्रायव्हर ने कार को नियंत्रित करने की पूरी कोशिश की, लेकिन उसको उसमें सफलता नहीं मिली। कार बेकाबू होकर तेज रफ्तार से खाई में जाकर गिरी।

सूत्रों के अनुसार, कार में ड्रायव्हर सहित आठ लोग बैठे हुए थे। कार खाई में गिरनेवाली घटना अत्यंत दर्दनाक थी। आसपास के गाँववालों को जैसी ही दुर्घटना का पता चला तो लोग भागते हुए आ रहे थे। लोगों की बहुत सारी भीड जमा हुई थी। दुर्घटना का समाचार मिलते ही बचाव कार्य करनेवाले लोग और पुलिस घटनास्थल पर पहुँच चुकी थी। उन्होंने स्थानीय लोगों की सहायता से बचाव कार्य शुरू किया था। कार में से सभी को बाहर निकालने का कार्य जल्द ही किया गया था। लेकिन हादसे में पहले ही सात लोगों की मौत हो चुकी थी। उसमें भी एक आश्चर्य की बात यही थी कि कार में मौजूद पाँच साल के छोटे बच्चे को केवल खरोंच के सिवाय कुछ भी नहीं हुआ था। बच्चा काफी डरा हुआ था। उसे नजदीक के सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। खाई में गिरने से कार चकनाचूर हो गई थी। जिसे क्रेन की सहायता से बाहर निकाला गया।

3) रेल हादसे में 120 लोगों की दर्दनाक मौत :

पटना, दि. 16 : पूर्वांचल एक्सप्रेस पटरी से उतरने के कारण 120 यात्रियों की मृत्यु एवं 85 व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए। मुजफ्फरपुर से सुबह 7.00 बजे निकलनेवाली पूर्वांचल एक्सप्रेस यात्रियों को लेकर समस्तीपुर जा रही थी। सूत्रों के अनुसार पूर्वांचल एक्सप्रेस सिलौत स्टेशन की ओर आने लगी थी, सुबह के समय चारों ओर कोहरा जमा हुआ था। सिलौत स्टेशन पर आने से पहले रेल को रोकने के लिए लाल बत्ती का सिग्नल दिया था। पर घने कोहरे की वजह से सिग्नल दिखाई नहीं दिया। गाडी की रफ्तार बढी और ड्रायव्हर का रेल पर से नियंत्रण छूटने से रेल पटरी से उतर गई। जिससे रेल के कुछ डिब्बे पलटने एक भयंकर हादसा हुआ। मदद के लिए यात्रियों के चीखने चिल्लाने और रोने की आवाजे आने लगी थी। जिससे रेल की तरफ लोग भागने लगे। घटनास्थल पर लाशों के ढेर लग चुके थे। गंभीर रूप से घायल लोग इधर-उधर पडे हुए थे। दुर्घटना का समाचार मिलते ही घटनास्थल पर पहुँचकर पुलिस और रेल प्रशासन ने बचाव एवं राहत कार्य जारी किया। स्टेशन पर खडे हुए लोग भी इनकी सहायता कर रहे थे। घायल पडे हुए यात्रियों

को निकालकर तुरंत अस्पताल में पहुँचाया गया था। हादसे में 120 लोगों की मौत हो चुकी थी। परिवारवालों की लाशों को देखकर औरते-बच्चे जोर-जोर से चिल्लाने लगे थे।

पुलिस और रेल प्रशासन का बचाव एवं राहत कार्य पाँच घंटों तक चल रहा था। स्थानीय सांसद अस्पताल पहुँचकर लोगों की सेहत का हालचाल पूँछ रहे थे। साथ ही सरकार की ओर से मदद करने का आश्वासन भी दिया था।

4) कोविड अस्पताल में भीषण आग, 13 मरीजों की मौत :

मुंबई, दि. 23 : मुंबई के विरार स्थित विजय वल्लभ कोविड अस्पताल में आग लगने से 13 मरीजों की दर्दनाक मौत हो गई है। अस्पताल में पहले से ही कोरोना संक्रमित मरीजों का इलाज चल रहा था। उसमें से कुछ मरीजों को अगले दिन डिस्चार्ज भी मिलनेवाला था। लेकिन सुबह 3.30 बजे अस्पताल के आईसीयू वॉर्ड में आग लगने से भीषण हादसा हुआ। आग लगने से अस्पताल में अफरा तफरी का माहौल बना हुआ था। मरीज अस्पताल से बाहर निकलने का प्रयास कर रहे थे। चिखने-चिल्लाने की आवाजों को सुनकर स्थानीय लोग वहाँपर इकट्टा हो चुके थे। अचानक हुई इस घटना से किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आईसीयू वॉर्ड में आग ने भयंकर रूप धारण कर लिया था। आग की ऊँची लपटें और उसका उठता धुआं काफी दूर से दिखाई दे रहा था।

घटना की जानकारी मिलते ही अग्निशमन दल की गाडियाँ आग बुझाने के लिए घटनास्थल पर पहुँच चुकी थी। अस्पताल पर पानी के जोरदार प्रवाह छोटे जा रहे थे। मरीजों को बचाने का काम भी शुरू किया गया। लेकिन तबतक 13 मरीजों की जलकर मौत हो चुकी थी। गंभीर रूप से घायल मरीजों समेत 30 मरीजों को दुसरे अस्पताल में पहुँचाया गया। अग्निशमन दल का बचाव एवं राहत कार्य लगभग चार घंटों तक चलता रहा। सूत्रों के मुतालिक अस्पताल के आईसीयू वॉर्ड में शॉर्ट सर्किट की वजह से लाग लग चुकी थी। दुर्घटना की खबर मिलते ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने घटनास्थल पर पहुँचकर मरे हुए मरीजों के परिवारवालों को दो-दो लाख देने का वचन दिया। गंभीर रूप से घायल मरीजों को एक-एक लाख देने का ऐलान किया। साथ ही घटना की जाँच करने के आदेश भी दिए गए।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है, ऐसा .... ने कहा है।

   क) स्पेन्सर ख) हापवुड ग) जॉर्ज. एच. मौरिस घ) लेदरवुड

2. समाचार लेखन .... क्षेत्र में आता है।

   क) पत्रकारिता ख) विज्ञान ग) वाणिज्य घ) कला

3. समाचार की सफलता .... पर निर्भर होती है।

क) विवरण ख) शीर्षक ग) मुद्रण तंत्र घ) आमुख

4. रूडयार्ड किपलिंग ने मीडिया के .... ककार स्पष्ट किए हैं।

क) छह ख) पाँच ग) आठ घ) दो

5. समाचार लेखन विधि के .... तत्त्व हैं।

क) चार ख) तीन ग) दो घ) पाँच

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–एक वाक्य में लिखिए।

1. शब्दकोशों में समाचार के लिए कौन से शब्द मिलते हैं?
2. 'समाचार' शब्द अंग्रेजी के किस शब्द का अनुवाद है?
3. प्राकृतिक आपदा के दो प्रकार कौन से है?
4. जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन के कितने तत्त्व निर्धारित किए हैं?
5. समाचार की पृष्ठभूमिक किसे कहा जाता है।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1. आमुख – प्रस्तावना
2. मलबा – टूटी इमारत के अवशेष
3. संप्रेषणीय – संदेश पहुँचाने लायक
4. मुद्रण – छापना
5. इन्ट्रो – आमुख, भूमिका
6. अभिरूचि – इच्छा, अभिलाषा

4.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ)

1) जॉर्ज एच. मोरिस 2) कसा 3) शीर्षक 4) छह

5) तीन

आ)

1. शब्दकोशों में समाचार के लिए वृत्तांत, संवाद, विवरण, सूचना और खबर शब्द मिलते हैं।
2. समाचार शब्द अंग्रेजी के NEWS शब्द का अनुवाद है।
3. प्राकृतिक आपदा के प्राकृतिक एवं मानवनिर्मित दो प्रकार है।
4. जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन के तीन तत्त्व निर्धारित किए हैं।
5. समाचार की पृष्ठभूमि 'आमुख' को कहा जाता है।

4.7 सारांश :

1. समाचार को वृत्तांत, खबर और सूचना आदि नामों से भी जाना जाता है। समाचार लेखन वास्तव में एक कला है। विभिन्न घटनाओं, परिस्थितियों और सूचनाओं को प्रभावशाली ढंग से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना समाचार लेखन का मूल प्रयोजन है।
2. समाचार शब्द अंग्रेजी के NEWS शब्द का पर्यायवाची है। NEWS शब्द के चारों अक्षर चार दिशाओं के सूचक है।
3. रूड्यार्ड किपलिंग ने समाचार लेखन में छह ककाते का समावेश अनिवार्य माना है। जैसे (क्या), (कहाँ), (कब), (क्यों), और (कैसे),। समाचार लेखन में मुख्यत: इन छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है।
4. समाचार लेखन की प्रक्रिया में शीर्षक, आमुख और विवरण महत्त्वपूर्ण होते है।
5. समाचार का शीर्षक संक्षिप्त और सागरभिते होना चाहिए।
6. अमरिकी पत्रकार जोसेफ पुलिजर ने समाचार लेखन में यथार्थता, संक्षिप्तता एवं रोचकता इन तीन तत्त्वों को अनिवार्य माना है।
7. समाचार लेखन विविध प्रकार का हो सकता है। जैसे – महाविद्यालयीन विविध समारोहों का समाचार लेखन, विविध सामाजिक समारोहों का समाचार लेखन, दुर्घटनाओं का समाचार लेखन, प्राकृतिक आपदाओं का समाचारलेखन आदि।

4.8 स्वाध्याय :

1. समाचार लेखन के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. समाचार लेखन के तत्त्वों का विवेचन कीजिए।

3. आप के महाविद्यालय में आयोजित 'क्रांतिदिन समारोह' का समाचार लेखन कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. किसी प्राकृतिक आपदा का समाचार लेखन कीजिए।
2. किसी सामाजिक समारोह के समाचार लेखन का संकलन कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए संदर्भ ग्रंथ :

1. समाचार लेखन - पी. के. आर्य, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.
2. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता - डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. प्रोजनमूलक हिंदी - डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, आशिष प्रकाशन, कानपूर.
4. पत्रकारिता के. एन. आयाम - एस. के दुबे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
5. मीडिया कालीन हिंदी : स्वरूप एवं संभावनाएँ - डॉ. अर्जुन चव्हाण, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. मीडिया लेखन (सिद्धांत और व्यवहार) - डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य - डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल : अलका प्रकाशन, कानपूर.

❑❑❑

इकाई –1
पारिभाषिक वाक्यांश, एवं संक्षेपण।

दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त अंग्रेजी वाक्यांश के हिंदी पर्यायवाची रूप एवं संक्षेपण (परिशिष्ट में दिए हुए 'क' तथा 'ड' विभाग पर)

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

  1.3.1 अंग्रेजी हिंदी वाक्यांश

  1.3.2 संक्षेपण संबंधी शब्द

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1.6 स्वाध्याय

1.7 क्षेत्रीय कार्य

1.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त किए जानेवाले अंग्रेजी–हिंदी वाक्याशों से परिचित हो जाएँगे।
- हिंदी वाक्य खंडों के संक्षेपण से अवगत हो जाएँगे।
- दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी–हिंदी वाक्यांश और हिंदी वाक्य खंडों के संक्षेपण का प्रयोग करना सीख जाएँगे।

1.2 प्रस्तावना

राजभाषा का उत्तरदायित्त्व ग्रहण करते ही हिंदी भाषा साहित्य से इतर, न्याय, विज्ञान, वाणिज्य, प्रशासन, जनसंचार, विज्ञापन, अनुवाद एवं रोजगार की भाषा बन गई। कार्यालयीन, कामकाजी और व्यावहारिक भाषा के रूप में हिंदी की नयी पहचान बनी। इसे हिंदी का प्रयोजनीय पक्ष कहा गया। तब से आज तक हिंदी की प्रयोजनीयता पर कार्य हो रहे हैं। अथक प्रयासों से हिंदी अपने सभी पक्षों, सभी क्षेत्रों में सफल हो रही है। सबसे पहले तो उसे ऐसी शब्दावली एवं वाक्यांशो को विकसित करना पडा जो न्याय,

जनसंचार, पत्रकारिता, मीडिया, विज्ञान और विज्ञापन की आवश्यकता को पूर्ण कर सके। हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली एवं वाक्यांश प्रयोजनमूलक हिंदी का महत्वपूर्ण अंग है।

1.3 विषय विवरण:

1.3.1 अंग्रेजी हिंदी वाक्यांश:

वाक्यांश दो या दो से अधिक शब्दों का एक समूह है जो एक वाक्य या खंड के भीतर एक सार्थक इकाई के रूप में कार्य करता है। एक वाक्यांश को आमतौर पर एक शब्द और एक उपवाक्य के बीच के स्तर पर एक व्याकरणिक इकाई के रूप में जाना जाता है। हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाने में पारिभाषिक अंग्रेजी हिंदी वाक्यांशों का महत्व पूर्ण योगदान है। ये वाक्यांश एकार्थी, सुनिश्चित, सरल और प्रभावी होते हैं। इनकी सहायता से व्यावहारिक, कामकाजी और प्रशासनिक क्षेत्र में प्रगति हुई है तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी में कार्य करना संभव बन गया है। कृत्रिम निर्माण, अनुकूलन, एकरूपता स्पष्ट अर्थवत्ता तथा स्वीकरण के द्वारा ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं के लिए लगभग 08 लाख शब्द गढ़े गए हैं। विधि शब्दावली, मीडिया शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, अंतरिक्ष शब्दावली, मानविकी एवं समाज विज्ञान की पारिभाषिक, शब्दावली एवं वाक्यांश प्रकाशित एवं प्रचलित हो चुके हैं। अतः दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी वाक्यांश के हिंदी पर्यायवाची रूप निम्नानुसार हैं-

परिशिष्ट (क)

अंग्रेजी के हिंदी वाक्यांश

अ.क्र.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी वाक्यांश
1	Above given	ऊपर दिया हुआ
2	Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
3	Bill has been paid	बिल का भुगतान हो गया है
4	Carry out	पालन करना
5	Dispense With	अलग करना
6	Ex parte judgment	एकपक्षीय निर्णय
7	For comments	टिप्पणी के लिए
8	Funds not available	निधि उपलब्ध नहीं है
9	His request be acceded to	उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाए
10	In course of discussion	चर्चा के दौरान
11	Joining Report	कार्यारंभ रिपोर्ट

12	Keep pending	इसे रोके रखें
13	Leave on medical ground	चिकित्सा आधार पर छुट्टी
14	May be permitted	अनुमति दी जाए
15	Needs no comments	टिप्पणी की आवश्यकता नहीं
16	Not satisfactory	संतोषजनक नहीं है
17	On medical grounds	अस्वस्थ होने के कारण
18	Proposal was welcomed	प्रस्ताव का स्वागत किया गया
19	Put up for verification	सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें
20	Respectfully beg to say	सादर निवेदन है
21	Selection has taken place	चयन हो गया है
22	Steps may be taken	कार्रवाई की जाए
23	This is to certify	प्रमाणित किया जाता है
24	Under consideration	विचाराधीन
25	With immediate effect	तुरंत, तत्काल

1.3.2 संक्षेपण संबंधी शब्द:

संक्षेपण अथवा सार-लेखन से तात्पर्य है किसी अनुच्छेद परिच्छेद, विस्तृत टिप्पणी या प्रतिवेदन आदि को संक्षिप्त कर देना। संक्षेपण को अग्रेजी में Abbreviation कहा जाता है। किसी विस्तार से लिखे गए विषय, मामले अथवा प्रतिवेदन आदि को संक्षेप में लिखकर प्रस्तुत कर देना सार लेखन या संक्षेपण कहलाता है। सार लेखन में मूल विषय-वस्तु या कथ्य संबधित मुख्य विचारों वा तथ्यों को ही प्रथामिकता एवं महत्ता दी जाती है। इसमें अनावश्यक बाते, संदर्भ, तर्क-वितर्क आदि को हटा दिया जाता है और मूल विचार, तथ्य और भावों को ही रखा जाता है। संक्षेपण अर्थात सार-लेखन भी एक कला है और अध्ययन, अनुशीलन से उसे प्राप्त किया जा सकता है। कार्यालयीन कामकाज ही नहीं अपितु दैनंदिन जीवन में भी संक्षेपण कला का अत्यधिक उपयोग है। संक्षेपण को मानसिक प्रशिक्षण भी कहा गया है जिससे लेखन में स्पष्टता, सरलता एवं प्रभावशीलता पैदा होती है। मंत्रालयों, सरकारी कार्यालयों, विभागों तथा सरकार के अधीन प्रतिष्ठानों आदि में संक्षेपण या सार लेखन का प्रयोग यथास्थिति समयानुसार किया जाता है। अत: दैनंदिन व्यवहार में प्रचलित हिंदी के कुछ वाक्याखंडों का संक्षेपण निम्नानुसार है।

परिशिष्ट (ड)

संक्षेपण लेखन

अ.क्र.	वाक्य खंड	शब्द
1	जिसके आने की तिथि मालूम नहीं है	अतिथि
2	जिसके समान कोई दूसरा नहीं है	अद्वितीय
3	हृदय को फाडनेवाला	हृदयविदारक
4	दूसरों के काम में दखल देना	हस्तक्षेप
5	स्वेच्छा से सेवा करनेवाला	स्वयंसेवक
6	जिसका कोई शत्रु नहीं जनमा है	अजातशत्रु
7	जो बिना वेतन के काम करता है	अवैतनिक
8	बिना बुलाए आनेवाला	अनाहूत
9	किसी देश का मूल निवासी	आदिवासी
10	लक्षणों के आधार पर रोग की पहचान	निदान
11	जो कहा न जा सके	अकथनीय
12	जो बहुत व्यर्थ बोलता है	वाचाल
13	जो दिन में एक बार भोजन करता है	एकाहारी
14	जो आग्रह सत्य पर आधारित हो	सत्याग्रह
15	जो देखने में प्रिय लगे	प्रियदर्शी
16	बहुत सी भाषाओं को बोलनेवाला	बहुभाषाभाषी
17	जो लोक में संभव न हो	अलौकिक
18	शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
19	क्षण भर में नष्ट होनेवाला	क्षणभंगुर
20	कम बोलनेवाला	मितभाषी
21	ऐसे स्थान पर रहना जहाँ कोई पता न पा सके	अज्ञातवास
22	दूसरे के सहारे पर गुजारा करनेवाला	उपजीवी
23	एक ही पर श्रद्धा रखनेवाला	एकनिष्ठ
24	प्राचीन काल से संबंधी	पुरातत्त्व
25	जिससे हानि की आशंका न हो	निरापद

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न:

निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिएख

1. Above given वाक्यांश का हिंदी विकल्प .... है ।

   अ) उपरोक्त ब) ऊपर जैसा क) के जैसा ड) ऊपर दिया हुआ

2. Carry out वाक्यांश का हिंदी विकल्प .... है ।

   अ) बहार निकालना ब) पालन करना क) आगे लेना ड) वहन करना

3. For comments वाक्यांश का हिंदी विकल्प .... है ।

   अ) टिप्पणी के लिए ब) आलोचना के लिए

   क) समीक्षा के लिए ड) सुधार के लिए

4. His request be acceded to वाक्यांश का हिंदी विकल्प .... है ।

   अ) असकी प्रार्थना स्वीकार की जाए ब) असकी प्रार्थना अस्वीकार की जाए

   क) असकी प्रार्थना भेजी जाए ड) असकी प्रार्थना में सुधार किया जाए

5. Leave on medical ground वाक्यांश का हिंदी विकल्प .... है ।

   अ) अवैतनिक छुट्टी ब) आकस्मिक छुट्टी

   क) चिकित्सा आधार पर छुट्टी ड) सुधार के लिए छुट्टी

6. Bill has been paid वाक्यांश का हिंदी विकल्प .... है ।

   अ) बिल हो गाय है ब) बिल का भुगतान हो गाय है

   क) बिल भेजा गाय है ड) बिल किया गाय है

7. Under consideration वाक्यांश का हिंदी विकल्प .... है ।

   अ) कार्याधीन ब) स्वीकृत क) विचाराधीन ड) मंजूर किया गया

8. जिसके आने की तिथि मालूम नहीं है वह .... कहलाता है ।

   अ) तारीख ब) अनाहूत क) कार्यकर्ता ड) अतिथि

9. ह्दय को फाडनेवाला वाक्य खंड के लिए .... शब्द प्रचलित है ।

   अ) चिकित्सक ब) डॉक्टर क) ह्दयविदारक ड) खूनी

10. स्वेच्छा से सेवा करनेवाला .... कहलाता है ।

    अ) सेवक ब) स्वयंसेवक क) कारसेवक ड) मिशनरी

11. जो देखने में प्रिय लगे उसे .... कहते है ।

    अ) प्रियदर्शी ब) समाजसेवक क) प्रेमी ड) दिग्दर्शक

12. जो लोक में संभव न हो उसे .... कहते है ।

अ) लौकिक ब) पारलौकिक क) दैवलौकिक ड) अलौकिक

13. कम बोलनेवाला .... कहलाता है ।

अ) अबोल ब) अभाषी क) मितभाषी ड) गूँगा

14. जिससे हानि की आशंका न हो वह .... कहलाता है ।

अ) निर्विकार ब) निरापद क) निरामय ड) साधू

1.5 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1) ऊपर दिया हुआ 2) पालन करना 3) टिप्पणी के लिए

4) असकी प्रार्थना स्वीकार की जाए 5) चिकित्सा आधार पर छुट्टी

6) बिल का भुगतान हो गाय है 7) विचाराधीन 8) अतिथि

9) हृदयविदारक 10) स्वयंसेवक 11) प्रियदर्शी 12) अलौकिक

13) मितभाषी 14) निरापद

1.6 स्वाध्याय:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

1. पारिभाषिक अंग्रेजी वाक्यांश के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. पारिभाषिक हिंदी वाक्यांश के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
3. हिंदी वाक्य खंडों का संक्षेपण लेखन कीजिए ।
4. हिंदी के संक्षेपण शब्दों की सूची बनाइए।

1.7 क्षेत्रीय कार्य:

सरकारी, गैर सरकारी, निजी कार्यालयों में प्रयुक्त अंग्रेजी-हिंदी वाक्यांशों को खोजकर उनके पर्यायवाची रूपों के साथ सूची तैयार कीजिए।

हिंदी वाक्य खंडो के संक्षेपण शब्दों की सूची तैयार कीजिए।

1.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए संदर्भ ग्रंथ:

1. पारिभाषिक शब्दावली- डॉ. भीमराव पाटिल, कुलसचिव, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नासिक, मार्च 2002
2. अंग्रेजी-हिंदी पारिभाषिक शब्दकोश डॉ. हरदेव बाहरी।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी व्याकरण एवं रचना- प्रा. उमा पाटील,चंद्रलोक प्रकाशन,कानपुर-21, प्र.सं. 2005

❑❑❑

इकाई –2
माध्यम लेखन

अनुक्रम –

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

    2.3.1 दूरदर्शन धारावाहिक लेखन

    2.3.2 पटकथा लेखन

    2.3.3 डॉक्युमेंटरी

    2.3.4 वेब सीरीज

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द एवं शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्न के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य

इस ईकाई को पढ़ने के बाद आप–

1. दूरदर्शन की संकल्पना से परिचित हो जाएंगे।
2. दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक लेखन के स्वरूप से अवगत हो जाएंगे।
3. दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के तत्त्वों से परिचित हो जाएंगे।
4. दृश्य–श्रव्य माध्यम से परिचित होंगे।
5. पटकथा लेखन के स्वरूप से अवगत हो जाएंगे।
6. पटकथा लेखन के तत्व से अवगत हो जाएंगे।
7. डॉक्युमेंटरी क्या है? कैसी होती है? इससे अवगत होंगे।
8. डॉक्युमेंटरी लेखन प्रक्रिया से परिचित हो जाएंगे।

9. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दृश्य-श्रव्य माध्यम वेब सिरी से परिचित हो जाएंगे।

10. वेब सीरीज के स्वरूप से परिचित हो जाएंगे।

2.2 प्रस्तावना :

माध्यम लेखन अर्थात् संचार माध्यम का महत्व वर्तमान समय में काफी बढ़ चुका है। साथ ही तकनीकी अविष्कार के कारण संचार माध्यम के साधनों का विकास काफी बढ़ चुका है। ऐसी स्थिति में दृश्य श्रव्य माध्यम से जुड़े साधनो में भी दिन-ब-दिन बढ़ोत्तरी हो रही है। आज दृश्य-श्रव्य माध्यम लोगों का मनोरंजन करने के साथ-साथ ज्ञान सीमा की परिधि को भी बढ़ा रहे है। आज डॉक्युमेंटरी, पटकथा, दूरदर्शन धारावाहिक, वेब सीरीज जैसे दृश्य-श्रव्य माध्यम का महत्व दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। बहुतांश माध्यम लेखन के इन प्रकारों में लेखन के लिए रोजगार के अनेक अवसर निर्माण हो रहे हैं। ऐसे में हिंदी में पटकथा लेखक, डॉक्युमेंटरी लेखक, वेब सिरीज लेखक और दूरदर्शन धारावाहिक लेखक की माँग बढ़ रही है। इसलिए इस क्षेत्र में रोजगार के कईं अवसर सामने आने लगे हैं। इसीलिए हिंदी भाषा का अध्ययन करने के साथ-साथ इन माध्यमों के लेखन की कला अवगत करने से आज युवकों को अच्छा-खाँसा रोजगार प्राप्त हो सकता है। अतः इस इकाई में दूरदर्शन, धारावाहिक, डॉक्युमेंटरी, पटकथा और वेब सीरीज इन माध्यम लेखनों का समग्र अध्ययन किया जाएगा।

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 दूरदर्शन धारावाहिक लेखन :

प्रस्तावना :

दूरदर्शन जनसंचार का महत्वपूर्ण दृश्य-श्रव्य माध्यम है। जिसने लगभग पूरे भारत को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को आकर्षित एवं प्रभावित किया है। आज टेलीविजन मनुष्य के जीवन का एक अंग बन चुका है। आज बहुतांश लोग किसी न किसी रूप में टेलीविजन के साथ जुडे हुए हैं। इसलिए 21 वीं शताब्दी में इसका महत्व अबाधित रूप से बढ़ रहा है। टेलीविजन पर प्रसारित होनेवाले विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की संख्या काफी बढ़ चुकी है। टेलीविजन के प्रारंभ में अर्थात् 1965 से 1995 के आस-पास इस पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रम समाचार, खेल प्रसारण, धारावाहिक, मनोरंजन पूरक कार्यक्रम, शिक्षा एवं सरकारी कार्यक्रम, आदि का समय निश्चित था। परंतु आज टेलीविजन चौबीसों घंटे कुछ न कुछ प्रसारित करता रहता है। इन प्रसारणों में समाचार ज्ञान से अधिक मनोरंजन पूर्ण धारावाहिक संख्या में ज्यादा हैं और इसे देखनेवाला दर्शक वर्ग भी काफी बडा है। टेलीविजन अर्थात् दूरदर्शन पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रम में दूरदर्शन धारावाहिक की संख्या ज्यादा है। हमें दूरदर्शन धारावाहिक लेखन क्या है? इसका प्रसारण कैसे होता है? इसे कैसे लिखा जाता है? इसके तत्व कौन से हैं? इस बात की जानकारी लेने से पहले दूरदर्शन के शाब्दिक अर्थ को देखना भी आवश्यक होगा।

दूरदर्शन : अर्थ और संकल्पना :

दूरदर्शन शब्द tele + vision (टेलीविजन) का पर्याय है। टेलीविज़न शब्द ग्रीक तथा लैटिन भाषा के शब्दों के मेल से बना है। जैसे - टेली + विजन । टेली ग्रीक शब्द है। जिसका अर्थ है - दूरी पर और विजन लैटिन शब्द है, जिसका अर्थ है - देखना। इस तरह दूरदर्शन का सामान्य अर्थ है - दूर से देखना या दूर के दर्शन करना भारत में टेलीविजन की शुरुवात 15 सितंबर 1959 में हुई और सन् 1965 में जनता की माँग और अनुकूल परिणाम को देखते हुए टी.वी. पर शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन तथा सूचना कार्यक्रम शुरू हुए अर्थात् शिक्षा एवं सामुदायिक विकास के आरंभिक उद्देश्य में बढोत्तरी होकर मनोरंजन एवं सूचना का उद्देश्य भी जुड गया। परंतु आज टेलीविजन मनुष्य जीवन के सभी क्षेत्रों से जुड़ गया है।

धारावाहिक – संकल्पना :

धारावाहिक को अंग्रेजी में सीरीयल कहा जाता है। धारावाहिक का शाब्दिक अर्थ है - वाहिक या साप्ताहिक। धारावाहिक अर्थात् एक सूत्र में धारा के रूप में बिना किसी अवरोध के चलनेवाला या धाराप्रवाह। यह भी कह सकते हैं कि जो लेख, कहानी, उपन्यास, नाटक क्रमशः खंडों के रूप में कई अंशों में बराबर प्रकाशित एवं प्रसारित होता रहे। टेलीविज़न धारावाहिक अर्थात् टेलीविजन पर प्रसारित होनेवाला धारावाहिक। धारावाहिक ऐसी नाटकीय कथा को कहते है, जिसे किश्तों में विभाजित करके उन कीश्तों को टेलीविजन या रेडिओ पर एक-एक करके दैनिक, साप्ताहिक, मासिक या किसी अन्य क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है।

कुमुद नागर 'टेलीविजन लेखन : सिद्धांत और प्रयोग' इस किताब में दूरदर्शन धारावाहिक के संदर्भ में बात करते हुए लिखते हैं कि, मूलता: धारावाहिक वह लंबा नाटक है जो किश्तों में इस प्रकार सुनाया अथवा दिखाया जाए, जिसकी एक किस्त सुनने या देखने के बाद हम उसकी अगली कड़ी देखने के लिए उत्सुक हो जाए। साथ ही वे आगे लिखते हैं कि, धारावाहिक प्रतिदिन या सप्ताह के किसी एक निश्चित दिन, निश्चित समय पर तथा निश्चित शीर्षक के अंतर्गत प्रसारित होनेवाला नियमित कार्यक्रम, जिसकी सभी कडियाँ या एपिसोड किसी-न-किसी रूप में एक दूसरे से जुडे रहते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि दूरदर्शन धारावाहिक एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। जिसमें लंबी कथा प्रभावशाली और जिज्ञासापूर्ण शैली में प्रस्तुत की जाती है। जिससे दर्शक को अगले दृश्य या बिंब की उत्सुकता बनी रहती है। साथ ही दूरदर्शन धारावाहिक निश्चित समय पर शीर्षक के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इसकी दो कडियों के बीच में तादात्म्य रहता है। अत: धारावाहिक प्रतिदिनया सप्ताह में एक बार इस प्रकार से प्रसारित होते हैं।

दूरदर्शन धारावाहिक लेखन :

दूरदर्शन धारावाहिक टी. व्ही. पर चलने वाला एक लोकप्रिय एवं लोकप्रसिद्ध कार्यक्रम है। इसके दर्शक मानवीय समाज के सभी वर्ग से आते हैं। जैसे - बच्चें, युवा, प्रौढ़, वृद्ध, महिलाएँ, पुरुष आदि। हर एक वर्ग की अपनी-अपनी रुची होती है। उसी के अनुसार वे दूरदर्शन पर अपने रूची पूर्ण धारावाहिक देखना

पसंत करते हैं। ये दूरदर्शन धारावाहिक सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, तिलिस्मी अय्यारी, खेल, अध्यात्म,दर्शन आदि विषयों से संबंधित होते हैं। आज दूरदर्शन पर अनेक प्रकार के धारावाहिक चौबीसों घंटे शुरू रहते हैं। भाग-दौड़ के इस युग में मनुष्य अपने-अपने समय और रुचि के अनुसार उसे देखता है। अत: आज दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के क्षेत्र में काफी अवसर दिखाई देते हैं। आत: दूरदर्शन धारावाहिक लेखन कर्ता को उसे लिखने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है। आतः लेखक को धारावाहिक लेखन करते समय दूरदर्शन से संबंधित अनेक संकल्पनाओं से परिचित होकर उसका ध्यान रखना आवश्यक बनता है। सफल दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के लिए प्रतिभाशाली लेखक को निर्माता, निर्देशक, निर्माता सहाय्यक, तल प्रबंधक, अभिनेता, अभिनय, कैमरामैन, दृश्यबंध, कला पर्यवेक्षक, सामग्री पर्यवेक्षक, लायब्ररीयन, चित्रकार आदि बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

दूरदर्शन धारावाहिक लेखन एक चुनौती पूर्ण कार्य है। यह साधारण कहानी,उपन्यास, नाटक, या काव्य लेखन से अलग होता है। क्योंकि दूरदर्शन धारावाहिक लेखन का मूल गुण बिंबधर्मिता है। लेखक को हर स्थिति में बिंबों और दृशों के बारे में बारकाई से सोचना पड़ता है। इसके साथ-साथ दूरदर्शन की भाषा, दूरदर्शन की प्रकृति, धारावाहिक में अभिनय, दृश्य, उत्सुकता, संवाद आदि पर विशेष रूप से ध्यास देना जरुरी है। इन सभी बातों को ध्यान में रख कर दूरदर्शन धारावाहिक लेखन कर्ता सफल धारावाहिक का लेखन कर सकता है। दूरदर्शन धारावाहिक लेखन उपन्यासों पर भी आधारित होते हैं, जिसकी कडियाँ निश्चित होती है। परंतु स्वतंत्र रूप से धारावाहिक लेखन में कडियों की संख्या निश्चित नहीं रहती। जिसकी कडियाँ निश्चित और अनिश्चित दोनों होती है। दर्शकों की माँग, तत्कालीन परिस्थिति, संस्कृति, धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति आदी को ध्यान में रखकर इसकी कडियाँ बढाई जा सकती है। धारावाहिक कई वर्षो तक भी चल सकते हैं। (जैसे - प्रेमचंद के उपन्यास कर्मभूमी के धारावाहिक की संख्या निश्चित रहती है)

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' इस धारावाहीक की एक हजार कडियाँ (एपिसोड) पूरे हुए थे। जो लगभग आठ वर्ष तक चली। 'बालिका वधू' बारा वर्ष तक चली। जिसकी 2245 कडियाँ हुई। दूरदर्शन धारावाहिक लेखन कई विषयों को लेकर लिखे जाते हैं। पारिवारिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, मिथकीय, जासूसी, तिलिस्मी आदि प्रकार के धारावाहिक होते हैं। जिनका राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकार भी होता है।

दूरदर्शन धारावाहिक के तत्व :

किसी भी प्रतिभाशाली लेखक के सामने दूरदर्शन धारावाहिक लेखन एक चुनौती पूर्ण कार्य है। आमतौर पर कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्य लिखना और दूरदर्शन के लिए धारावाहिक लिखना काफी अलग है, क्योंकि दूरदर्शन एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। जिसनमें कॅमेरे की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए दूरदर्शन धारावाहिक लेखन कर्ता को दूरदर्शन की भाषा, अभिनेता, कैमरामैन, निर्माता, निर्देशक, दृश्यबंद आदि का ज्ञान होना काफी आवश्यक है। सफल दूरदर्शन धारावाहिक के लिए लेखक को धारावाहिक लेखन के तत्त्वों से अवगत होना भी जरूरी है। दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के कुछ तत्त्व निम्नानुसार हैं-

1. विषयवस्तु या कथानक :

दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के लिए प्रभावी कथानक होना जरुरी है, क्योंकि कथानक प्रभावशाली होने से वह दर्शकों को आकर्षित कर उसे उस धारावाहिक से बांधकर रखता है और दर्शकों की जिज्ञासा को अंत तक बनाये रखता है। दूरदर्शन धारावाहिक लेखन की विषयवस्तु पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी, अय्यारी, पौराणिक आदि से संबंधित हो सकती है। कथानक का चुनाव करते समय धारावाहिक लेखक को दर्शक वर्ग जैसे – बच्चें, युवा, बुढ़े, प्रौढ, महिला, पुरुष आदि की रुचि को ध्यान में रखना पड़ता है। साथ ही वर्तमान परिस्थिति से कथानक का औचित्य होना आवश्यक है। दर्शक वर्ग, वर्तमान स्थिति और टेलीविजन आदी को ध्यान में रखकर ही प्रभावी कथानका का निर्माण संभाव है। साथ ही प्रभावी कथानक अक्सर धारावाहिक की सफलता का द्योतक है। इसलिए कथानक या विषयवस्तु दूरदर्शन धारावाहिक लेखन का महत्वपूर्ण तत्व कहा जाता है।

2. आयडिया या विचार तत्व :

दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के के लिए जिस कथानक की आवश्यकता होती है। उस कथानक को संतुलित रखने का काम विचार तत्व का होता है। भावना और विचार का औचित्य होगा तो दूरदर्शन धारावाहिक आकर्षक और प्रभावशाली बनेगा। इसलिए दूरदर्शन धारावाहिक में विचार बहुत ही महत्त्वपूर्ण तत्व है। दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के लिए विचारों का होना काफी जरुरी है। धारावाहिक निर्माता धारावाहिक लेखन के विचारों से प्रभावित होकर धारावाहिक निर्माण में रुची दिखलाते हैं। क्योंकि विचारों की पृष्ठभूमि, उसकी मौलिकता, विचारों का वर्ग, मनोरंजन आदि के आधार पर ही दूरदर्शन धारावाहिक की सफलता निर्भर होती है। अत: विचारतत्व आदर्शात्मक, मनोरंजनात्मक, हास्यात्मक, दार्शनिकता आदि को उजागर करनेवाला होना चाहिए।

3. दृश्य संयोजन :

दूरदर्शन धारावाहिक लेखन में लेखक को उसकी पटकथा के दृश्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है। धारावाहिक लेखन में कहानी को कितने दृश्य में विभाजित करें यह देखना पड़ता है। धारावाहिक के कथानक दृशों को उचित संयोजन होना आवश्यक है। एक दृश्य और दूसरे दृश्य के बीच तादात्म्य स्थापित होना आवश्यक है। धारावाहिक की एक कड़ी में अनेक दृश्य रहते हैं। उसके उचित क्रम से दर्शक प्रभावित होकर उनकी धारावाहिक के प्रति जिज्ञासा बनी रहती है। इसलिए दूरदर्शन धारावाहिक लेखन में दृश्य संयोजन तत्व महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

4. चरित्र:

दूरदर्शन धारावाहिक में पात्र महत्वपूर्ण होते हैं। दूरदर्शन धारावाहिक में चित्रित व्यक्ति पात्र होते हैं। दूरदर्शन धारावाहिक में पात्रों के चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला जाता है। विशेष रूप से दूरदर्शन धारावाहिक के प्रमुख पात्र। दूरदर्शन धारावाहिक में प्रमुख पात्रों के साथ-साथ गौण पात्र भी होते हैं। धारावाहिक की मूल कहानी प्रमुख पात्रों से ही जुडी रहती है। अन्य पात्र मूल कथानक को गती देने के लिए

आवश्यक होते हैं। दूरदर्शन धारावाहिक में पात्रों का चुनाव कहानी के अनुसार दर्शकों की रुचि के अनुसार होने चाहिए। धारावाहिक में नायक-नायिका ही मुख्य पात्र के रूप में होते हैं। तो खलनायक की भूमिका भी धारावाहिक में संघर्ष पैदा करती है। इसलिए मुख्य पात्र की कथा के अनुसार ऐतिहासिक, राजनीतिक, ग्रामीण, नगरीय हो सकते हैं। साथ ही मुख्य पात्र युवक या प्रौढ़ भी हो सकता है। मुख्य पात्र का संघर्ष दर्शकों में उत्सुकता एवं जिज्ञासा को बनाये रखता है। इसलिए पात्रों के द्वंद्व को उभारना आवश्यक होता है। दर्शक मुख्य नायक और नायिका से काफी प्रभावित रहते हैं। इसलिए मुख्य पात्र के चरित्र का विकास इसमें प्रमुख बन जाता है। अतः चरित्र दूरदर्शन धारावाहिक का महत्वपूर्ण तत्व है।

5. संवाद लेखन :

दूरदर्शन धारावाहिक में संवाद लेखन बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। असल में संवाद ही धारावाहिक के प्राण कहे जा सकते हैं। दूरदर्शन धारावाहिक में संवाद पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल होने चाहिए, क्योंकि अगर संवाद पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल होंगे तो वह यथार्थ स्थितियों को उजागर करने में सफल होंगे। ऐसा करने से संवादो में जान आती है और सजीवता का समावेश हो जाता है। संवाद धारावाहिक के कथानक को गति प्रदान करते हैं। साथ ही संवाद पात्रों के चरित्र को भी उजागर करते हैं। इसलिए पात्रों के संवाद पात्रानुकूल होने चाहिए। दूरदर्शन धारावाहिक के संवादों में सहजता और सरलता होनी आवश्यक है, क्योंकि धारावाहिक देखनेवाले दर्शक हर एक वर्ग के होते हैं। इसलिए संवाद सहज, सरल, संप्रेषक एवं आकर्षक होने चाहिए, जो दर्शकों पर अपना प्रभाव छोड़ सके। अतः संवाद दूरदर्शन धारावाहिक का महत्वपूर्ण तत्व है।

6. भाषा :

दूरदर्शन धारावाहिक लेखन में भाषा यह तत्व भी सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। भाषा के बिना लिखना असंभव है। परंतु दूरदर्शन धारावाहिक की अपनी अलग भाषा होती है। जैसे हर माध्यम की अपनी-अपनी अलग भाषा होती है। दूरदर्शन धारावाहिक की भाषा के शब्द भी बोलते हैं, दृश्य भी बोलते हैं, साथही रंग भी, चेहरे भी, मौन भी और संगीत भी बोलता है। दूरदर्शन की भाषा की अपनी एक प्रकृति होती है। उसे आत्मसात किए बिना दूरदर्शन धारावाहिक लेखन असंभव है। दूरदर्शन धारावाहिक की भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, भावानुकूल होनी चाहिए। जिसमें व्यंग्यात्मकता, हस्यात्मकता, मार्मिकता, गंभीरता, सहजता आदि विशेषताएँ होनी चाहिए क्योंकि सहज, सरल, संप्रेषणीय एवं प्रभावपूर्ण भाषा ही दर्शकों को आकर्षित एवं प्रभावित करती है। अतः दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के लिए भाषा तत्व अनिवार्य है।

समग्र रूप से कह सकते हैं कि दूरदर्शन धारावाहिक के लेखन के लिए लेखक को उपयुक्त तत्वों का गहराई से ज्ञान होना चाहिए तभी सफल दूरदर्शन धारावाहिक का निर्माण संभाव है।

2.3.2 पटकथा लेखन :

प्रस्तावना

'पटकथा लेखन' लेखन विधि की एक पद्धति है। किसी कहानी को दृश्य-श्रव्य माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए पटकथा लिखि जाती है। वस्तुतः पटकथा किसी भी कार्यक्रम की पहली आवश्यकता होती है। किसी भी कार्यक्रम, धारावाहिक या फिल्म की सफलता-असफलता पटकथा पर ही निर्भर होती है। कथा या कहानी को पटकथा में परिवर्तित किए बिना उसका दृश्य-श्रव्य रूपांतरण संभव नहीं होता। वस्तुतः पटकथा कॅमेरे से शूट कर पर्दे पर दिखाने के लिए लिखित कथा है। सिनेमा, शॉर्ट फिल्म अथवा टेलीविजन पर दिखाए धारावाहिक पटकथा के माध्यम से ही शूट किए जाते हैं। पटकथा में दिए गए निर्देशों के आधार पर ही अभिनय और फिल्मांकन किया जाता है। आधुनिक तकनीक और अनुसंधान के बल पर संचार माध्यमों का विकास बढ़ा है। फलस्वरूप फिल्म, दूरदर्शन का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है। इस कारण आज पटकथा लेखन का महत्व दिन-ब-दिन बढ़ने लगा है। इसलिए पटकथा लेखन को समझना और उसके लेखन की प्रविधि से अवगत होना काफी आवश्यक बन गया है।

पटकथा का स्वरूप :

'पटकथा' शब्द का अर्थ क्या है? पटकथा किसे कहते है? पटकथा के तत्व कोनसे है? पटकथा के प्रकार कोनसे है? पटकथा लिखने की प्रविधि क्या है? यह जानना पटकथा के स्वरूप को जानना है।

'पटकथा' शब्द का अर्थ एवं परिभाषा :

'पटकथा' यह शब्द पट+कथा के संयोग से बना है। पटकथा इस शब्द पर विस्तार से विचार करते हुए प्रसिद्ध पटकथा लेखक मनोहर श्याम जोशी ने अपने पुस्तक 'पटकथा लेखन' में लिखा- ''पटकथा शब्द कथा और पट इन दो शब्दों के मेल से बना है। पट और कथा। कथा का मतलब आप सभी जानते हैं- कहानी। और पट का अर्थ होता है- परदा।'' अर्थात् ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए।

डॉ. महेंद्र मित्तल अपनी पुस्तक 'भारतीय चलचित्र' में पटकथा को परिभाषित करते हुए लिखते हैं- ''दृश्य बिंबो के माध्यम से रचित कथा पटकथा कहलाती है और पटकथा लेखन को ही चित्र लेखन कहा जाता है।''

इस तरह से कह सकते है कि जो कथा परदे पर दिखाने के लिए जो ढाँचा (आलेख) तैयार किया जाता है। उसे पटकथा कहा जाता है। जैसे एक इमारत बनाने से पहले इंजिनियर उसकी ड्रॉईंग बनाता है और फिर वह इमारत बन जाती है। उसी प्रकार फिल्म रुपी बंगला बनाने के लिए पटकथा रुपी ड्रॉईंग बनानी पड़ती है।

अतः प्रसिद्ध पटकथा लेखक मनोहर श्याम जोशी के शब्दों में कह सकते हैं कि पटकथा के लिए एक अच्छी कथा होनी जरुरी है। पटकथा कुछ और नहीं कैमेरे से फिल्माकर परदे पर दिखाई जाने के लिए लिखी हुई कथा है।

पटकथा लेखन के लिए महत्वपूर्ण बाते :

- पटकथा के लिये एक अच्छी कथा होनी जरुरी है। जिसमें नाटकीय तत्वों का समावेश हो और कथा में नाटकीय तत्त्वों का समावेश तब होता है जब कथा के पात्रों को समस्या हो। पटकथा के लिए कथा घटनाप्रधान एवं तणावपूर्ण होनी चाहिए।
- डॉ. अशोक चक्रधर पटकथा को भी थ्री टियर सिस्टम मानते हैं। जैसे- 1. लेखक को रिश्तों के मध्य होनेवाली संवेदना के अदान-प्रदान की प्रक्रिया का ज्ञान हो। 2. व्यक्ति मन के अंदर होनेवाले अदृश्य द्वंद्व को पकड पाने की क्षमता। 3. संवेदना और अंतर द्वंद्व को समाज के विभिन्न उपादानों के साथ विजुलाईज कर सकने की क्षमता हो।
- पटकथा लेखन एक जटिल प्रक्रिया है।

  पटकथा लेखन में सावधानी बरतनी आवश्यक होती है। संपूर्ण पटकथा लेखन 60 से 80 दृशों के अंतर्गत होता है। कुशल पटकथा लेखक का निर्माता, निर्देशक के साथ समन्वय एवं संप्रेषण होना चाहिए। साथ ही सिनेमा या धारावाहिक की पूरी जानकारी उसे होनी चाहिए।
- पटकथा लेखक को पटकथा लेखक की तकनीक आत्मसात करनी पड़ती है। तभी पटकथाकार एक सफल पटकथा का निर्माण कर सकता है। पटकथा लेखक के अच्छे प्रारंभ में तीन तत्त्व- उत्सुकता, परिवर्तन, परिणाम समाहित होते हैं। जिससे धारावाहिक या सिनेमा के दर्शकों में रुची बनी रहती है।
- पटकथा में आयडिया महत्वपूर्ण होती है। पटकथा का संक्षिप्त रूप उसका आयडिया या केंद्रीय विचार ही होता है। उसके साथ पटकथा में प्रीमाइज अर्थात् नसीहत या शिक्षा भी महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि प्रेमाइज (आधारिका) बता देती है कि पटकथा की थीम क्या है? देखनेवालों को क्या नसीहते मिलेगी? तो आयडिया से विषयवस्तु का पता चलता है।
- पटकथा का एक कंकाल होता है। अर्थात् स्टेप आऊटलाईन। यह पटकथा का ढाँचा प्रस्तुत करती है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि सिनेमा में कितने दृश्य हैं और वे किस क्रम से आएंगे। महत्वपूर्ण संवाद कौन-कौनसे होंगे। इससे फिर शूट करने में आसानी होती है।
- पटकथा लेखन के दृश्यों को विशिष्ट प्रकारों के द्वारा लिखा जाता है। क्रमबद्ध तरीका और स्थापित तरीका इन दो प्रकारों के द्वारा पटकथा के दृश्य को लिखा जाता है।

पटकथा के लिए आवश्यक तत्त्व :

- **कहानी या कथा :**

किसी भी सिनेमा या धारावाहिक की पटकथा के लिए सबसे आवश्यक इकाई 'कहानी' है। कहानी के बिना पटकथा लेखन करना असंभव है। कहानी पर ही पटकथा और पटकथा पर ही सिनेमा की सफलता-असफलता निर्भर होती है। अतः पटकथा लेखन के लिए बेहतरीन कथा या कहानी का होना अनिवार्य है।

पटकथा के लिए चयनित कहानी में कथा एवं पात्र प्रभावी एवं संघर्षशील होने चाहिए। साथ ही दर्शकों में जिज्ञासा जगानेवाली एवं प्रभावशाली होनी चाहिए।

- **पात्र या चरित्र :**

पटकथा के लिए चुनी कहानी के पात्र महत्वपूर्ण होते हैं। पटकथा में पात्रों को निर्देशन की दृष्टि से देखकर उसका चरित्र उभारा जाता है। पात्र के द्वारा ही पटकथा की कथा गतिशील होती है। सिनेमा के पात्रही दर्शकों को आकर्षित कर पाठकों को प्रभावित करते हैं। इसलिए पटकथा लेखक को पात्रों के आंतरिक और बाह्य चरित्र पर विशेष सोच समझकर काम करना पड़ता है। अतः पटकथा लेखन में पात्र या चरित्र विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं।

- **संवाद**

पटकथा दृश्य-श्रव्य माध्यम के लिए लिखि जाती है। इसमें परदे पर पात्र किसी तरह से उभरेंगे और कौन से संवाद से स्वयं को या दूसरों को प्रस्तुत करेंगे यह महत्वपूर्ण बात पटकथाकार को देखनी पड़ती है। इसलिए पटकथाकार लिखित कहानी, पात्र एवं घटना को ध्यान में रखकर संवादों की योजना बनाता है। संवाद पटकथा के प्राण होते हैं। पटकथा के संवाद पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, संप्रेषणीय, प्रभावशाली होते हैं। जो सिनेमा में जान डाल देते हैं। आतः संवाद पटकथा के लिए अनिवार्य इकाई है।

- **देश काल वातावरण**

पटकथा लिखते समय पटकथाकार को दृश्य बनाते समय स्थान, समय, माहौल और घटना का ध्यान रखना अनिवार्य होता है। क्योंकि वातावरण या परिवेश के कारण कथा एवं पात्र प्रभावशाली बनते हैं। सिनेमा के परिवेश को उभारते समय पटकथाकार समय एवं स्थान का विशेष रूप से ध्यान रखता है। अत: कथा और पात्रों की प्रभावशाली प्रस्तुति के लिए देश-काल-वातावरण का ध्यान पटकथाकार को प्रमुखता से रखना पडता है।

- **दृश्य संयोजन :**

पटकथा की ईकाई दृश्य होती है। पटकथा कथानक को दृश्य में तोड़कर प्रस्तुत करती है। पटकथा लिखते समय दो दृशों के बीच कट टू लिखा जाता है। कट टू का मतलब होता है इस दृश्य को यही काटकर हम एक अन्य घटनास्थल वाले दृश्य में जोड़ रहे हैं। जब फिल्म या कार्यक्रम को शूट कर लिया जाता है तो ऐसे दृश्यों को संपादन के समय एक सुसंगत क्रम में जोड लिया जाता है। यही दृश्य संयोजन है। कहानी या कथा को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए जीन दृश्यों का चयन किया जाता है। उन दृश्यों में उचित क्रम होना जरुरी है। जिससे दर्शकों की रुचि, उत्सुकता, जिज्ञासा अंत तक बनी रहे। पटकथा के दृश्यों का क्रम अगर उचित है, तो दर्शकों को निहित समस्याओं का समाधान मिलता है और वह सिनेमा या कार्यक्रम सफल बनाता है। इसलिए पटकथाकार को पटकथा लेखन में दृश्य संयोजन काफी आवश्यक बनता है।

2.3.3 डॉक्युमेंटरी : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

वस्तुतः डॉक्युमेंटरी दृश्य-श्रव्य संचार माध्यम है। जिसके माध्यम से किसी सूचना या तथ्य को दृश्य-श्रव्य रूप में दूसरों तक पहुँचाया जाता है। सूचना या तथ्य को दृश्य श्रव्य रूप में दूसरों तक पहुँचाते समय उसमें सृजनात्मकता एवं कलात्मकता का समावेश किया जाता है। जिससे दर्शक उससे प्रभावित हो कर सच्चे जीवन की कहानी को आत्मसात करता है।

'डॉक्युमेंटरी' मूलतः अंग्रेजी शब्द है। जिसे हिंदी भाषा में वृत्तचित्र कहा जाता है। आतः डॉक्युमेंटरी वस्तुतः एक वृत्तचित्र है जो टेलीविजन की विभिन्न विधाओं में प्रमुख है। इसका अविर्भाव फ्रेंच में यात्राचित्रों के पर्याय में हुआ। इस अर्थ में वृत्तचित्र एक कथात्मक फिल्म है। जिसमें वास्तविक जीवन को चित्रित किया जाता है। ए. आर. फुल्टन ने वृत्तचित्र को इस प्रकार परिभाषित किया है- ''एक वृत्तचित्र न केवल जीवन के यथार्थ प्रतिपादन के ऊपर है बल्कि वह उसकी शुद्ध व्याख्या भी करता है। एक वृत्तचित्र उस समय तक कथात्मक चित्र की भाँति होती है, जब तक वह मानव जीवन की व्याख्या करता है। यह उस समय यात्रा-सूचकांक के सदृश्य है जब वह किसी स्थान विशेष का चित्रण करता है। वास्तव में वृत्तचित्र किसी विषय का एक समन्वित स्वरूप है।''

अतः 'डॉक्युमेंटरी' शब्द Document इस अंग्रेजी शब्द से बना है। जिसका अर्थ होता है दस्तावेज अर्थात् वह दृश्य श्रव्य सामग्री है जो सच के प्रमाण के लिए दस्तावेज बनने की योग्यता रखती है। डॉक्युमेंटरी अर्थात् वृत्तचित्र यह शब्द वृत्त + चित्र के योग से बना है। वक्त का अर्थ होता है- रिपोर्ट या समाचार और चित्र का अर्थ होता है दृश्य रूप। अर्थात् सच्चे तथ्य एवं घटनाओं तथा सूचनाओं पर आधारित दृश्य-श्रव्य सामग्री को वृत्तचित्र कहते हैं। वृत्तचित्र किसी न किसी घटना, तथ्य, सूचना, विषय पर आधारित होता है। उस घटना या विषयों से संबंधित सभी प्रकार की दृश्य (फोटो या व्हिडिओ) सामग्री को एक श्रृंखलाबद्ध क्रम से सुनियोजित कर लेते हैं और उसमें पीछे से पार्श्व वाचन या कमेंट्री के द्वारा आवाज (ध्वनि) भर दी जाती है। इस प्रकार किसी भी विषय पर कमेंट्री के साथ प्रदर्शित की गई फिल्म को वृत्तचित्र कहते हैं।

समग्र रूप से कह सकते है कि डॉक्युमेंटरी का निर्माण वृत्तचित्र पर आधारित होता है। डॉक्युमेंटरी फिल्म का उद्देश्य सूचना देना या प्रशिक्षित करना भी होता है। वृत्तचित्र यह विधा किसी सत्य घटना, प्रसंग, सूचना, व्यक्तिविशेष, प्रसंग विशेष पर आधारित होती है। हर विधा की तरह इसका भी कुछ न कुछ उद्देश्य जरूर होता है। वृत्तचित्र का उद्देश सूचना तथा घटना को तथ्यों के माध्यम से श्रोता या दर्शकों तक पहुँचाना होता है। अतः वृत्तचित्र दृश्य-श्रव्य संचार माध्यम की एक महत्त्वपूर्ण विधा कही जा सकती है, जो एक तथ्य से भरी फिल्म या ड्रामा भी कही जा सकती है।

डॉक्युमेंटरी की विशेषताएँ ।

1. वास्तविकता या यथार्थता :

वृत्तचित्र यथार्थता के साथ जुड़े होते हैं। वृत्तचित्र वास्तविक चरित्र और वास्तविक प्रसंग या घटना पर केंद्रित होते हैं। किसी भी डॉक्युमेंटरी का उद्देश्य सच्चाई तक पहुँचना होता है और सच्चाई यथार्थता से जुडी

होती है। वृत्तचित्र में काल्पनिकता को कोई जगह नहीं होती। वृत्तचित्र के विषय यथार्थ चरित्र, यथार्थ प्रसंग या घटनाओं को ही चित्रित करते हैं। वृत्तचित्र के पात्र भी यथार्थता से जुड़े होते हैं। जो जीवन की वास्तविकता का चित्रण करते हैं।

2. सृजनात्मकता :

वृत्तचित्र मूलतः सत्य घटना या प्रसंग या पात्र की धरातल पर खड़े होते हैं। सत्य या सच्चाई का उद्घाटन वृत्तचित्र के मूल में होता है। वृत्तचित्र में व्हिडिओ-ऑडिओ का समावेश होता है। वृत्तचित्र में पहले फोटो या घटनाओं का संकलन किया जाता है और बाद में ऑडिओ रूप में पीछे से आवाज दी जाती है। इस प्रक्रिया से गुजरते समय वृत्तचित्रकार को चित्र, व्हिडिओ और ऑडिओ को नए तरीके से प्रस्तुत करना पड़ता है। जिसमें एक सृजनात्मकता का समावेश दिखाई देता है। अतः सुजनात्मकता के कारण दर्शक तक सच्चाई कलात्मक ढंग से पहुँचाई जाती है। जिससे दर्शक डॉक्युमेंटरी से प्रभावित होता है। अतः सृजनात्मकता डॉक्युमेंटरी की एक विशेषता कहीं जा सकती है।

3. संकलन एवं क्रमबद्धता :

डॉक्युमेंटरी अर्थात् वृत्तचित्र में संकलन और क्रमबद्धता पायी जाती है। वृत्तचित्र में इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वृत्तचित्र के लिए सामग्री का संकलन करना महत्वपूर्ण होता है। संकलित की गई सामग्री को उचित क्रम में रखने से वृत्तचित्र में सृजनात्मकता का निर्माण होता है और वृत्तचित्र प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत होते हैं। संकलित सामग्री की क्रमबद्धता के कारण वृत्तचित्र की विषयवस्तु दर्शकों तक सहज रूप से पहुँच पाती है। इसलिए वृत्तचित्र में संकलन और क्रमबद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। अतः प्रभावशाली वृत्तचित्र के निर्माण के लिए संकलन एवं क्रमबद्धता का होना अनिवार्य है। इस तरह से कह सकते हैं कि प्रभावशाली वृत्तचित्र के लिए संकलन एवं क्रमबद्धता का होना अनिवार्य है। इस तरह से कह सकते है कि एक प्रभावशाली वृत्तचित्र के लिए अनुसंधान, आलेख, उचित योजना, सृजनात्मकता, सच्चाई आदी की आवश्यकता होती है।

5. सारगर्भित भाषा या मार्मिक भाषा :

वृत्तचित्र में भाषा का भी विशेष महत्त्व होता है। वृत्तचित्र की भाषा प्रसंगानुकूल, पात्रानुकूल होनी चाहिए। वृत्तचित्र की भाषा से कम से कम शब्दों में जादा से ज्यादा अर्थ की अभिव्यक्ती होनी चाहिए। अर्थात् वृत्तचित्र की भाषा में गागर में सागर भरने की कला होनी चाहिए। वृत्तचित्र की भाषा दृश्य की सहवर्ती होनी चाहिए क्योंकि वृत्तचित्र में दृश्य काफी महत्वपूर्ण होते हैं। अतः वृत्तचित्र की भाषा सहज, सरल, प्रभावशाली एवं सहज संप्रेषनीय होनी चाहिए।

2.3.4 वेब सीरीज :

प्रस्तावना

आज मनुष्य भाग-दौड़ के युग में काफी व्यस्त हो गया है। वह दिनभर, सप्ताहभर काम कर थक जाता है। आज के मनुष्य के पास समय की कमी है। क्योंकि वह अपने जीवन को अधिक बेहतर बनाने के लिए

निरंतर नौकरी-व्यवसाय में लग गया है। वह अपने जीवन को सुख- सुविधाओं के साधनों से भर देना चाहता है। इसलिए वह पैसों के पीछे पडा हुआ है। भाग-दौड भरी जिंदगी ने उसे घेर रखा है। इसी बीच वह हर रोज अपने नियमित समय पर घर लौटने पर मन को बहलाने के लिए अपने निजी कामों से टी.व्ही. या मोबाईल देखता रहता है। समय की कमी के कारण वह सीमित अवधि के कार्यक्रम देखना अधिक पसंत करता है। कभी वह गीत सुनता है, फिल्म देखता है, मनोरंजनपरक हास्य कार्यक्रम, तो कभी वह वेब सिरीज देखता है और अपने मन को बहलता है। वर्तमान समय में टी.वी. या मोबाईल पर वह जब समय मिलता है तब रूचि के अनुसार जादा से ज्यादा वेब सिरीज देखता है। इसलिए आज आधुनिक मानव फिल्म, नाटक की अपेक्षा वेब सिरीज की ओर ज्यादा आकर्षित हो रहा है। इसलिए वर्तमान समय में वेब सिरीज का महत्व दिन-ब-दिन बढता हुआ नजर आ रहा है। भारत में हिंदी भाषा को सबसे ज्यादा लोग बोलते और समजते हैं इसलिए आज दर्शकों की मांग के अनुसार हिंदी वेब सिरीज का प्रचलन काफी बढ़ गया है। अतः वेब सीरीज लोकप्रिय बन गई है।

वेब सिरीजः अर्थ, संकल्पना एवं स्वरूप :

वेब सीरीज एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। जिसे देखा और सुना जा सकता है। वेब सिरीज की बढ़ती लोकप्रियता के कारण वेब सिरीज क्या है? कैसे होती है? इसके विषय कौन से हो सकते है? इसका प्रस्तुतीकरण कैसे होता है? इसका निर्माण कैसे किया जाता है? यह देखना भी आवश्यक है।

वेब सीरीज को वेब शृंखला या वेब शो भी कहा जाता है। वेब सिरीज इंटरनेट के माध्यम से वेब पेज पर दिखाई देनेवाला धारावाहिक या दृश्य-श्रव्य कडियों की एक श्रृंखला होती है। वेब सीरीज का प्रसारण केवल इंटरनेट के जरिए डिजिटल प्लॅटफॉर्म पर ही किया जाता है। इसलिए इसे वेब सिरीज कहा जाता है। वेब सिरीज के स्वरूप पर निम्न प्रकार से प्रकाश डाला जा सकता है-

- वेब सिरीज इंटरनेट के माध्यम से ही डिजिटल प्लॅटफॉर्म पर प्रसारित की जाती है।
- वेब सिरीज यूट्यूब, हॉटस्टार, अमेझॉंन आदि डिजिटल प्लॅटफॉर्म के माध्यम से ही देखी जा सकती है।
- वेब सिरीज के दर्शक वर्ग अपनी सुविधा एवं समय के अनुसार देख सकता है। टी.व्ही. सीरीयल की तरह वेब सिरीज का समय निश्चित नहीं रहता इसलिए उसे दर्शक कभी भी देख सकते हैं।
- वेब सिरीज मौटे तर पर दो मिनिट से पैतीस-चालीस मिनिट की एक कड़ी हो सकती है। जिसमें मोटे तौर पर दस से अधिक कडिया (एपिसोड) भी हो सकती हैं।
- वेब सीरीज को देखने के लिए इंटरनेट और इंटरनेट से जुडे साधनों की जानकारी आवश्यक होती है। तभी दर्शक इंटरनेट के माध्यम से उन साधनों (मोबाईल, संगणक, आदि) के जरीए वेब सीरीज देख सकता है। इसके लिए उसे वेब सीरीज के प्लैटफॉर्म को सबस्क्राईब करना पड़ता है।
- मौटे तौर पर वेब सीरीज युवा वर्ग को केंद्र में रखकर बनाई जाती है। युवा वर्ग की रुचि के अनुसार विविध विषयों के द्वारा वेब सिरीज को प्रभावशाली रूप से स्टुडिओ में रेकॉर्ड किया जाता है।

- वेब सीरीज को एक साथ या एक सप्ताह में किसी एक एपिसोड को डिजिटल प्लॅटफॉर्म पर अपलोड किया जाता है। जिसे दर्शक अपनी सुविधा के अनुसार देखता है।
- वेब सीरीज लेखन करते समय वेब सीरीज लेखक को समय, स्टुडिओ, कैमेरा, कथानक, संवाद, अभिनय, पात्र, भाषा, आदि बातों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है ।
- वेब सीरीज नाटकीय, कॉमेडी, हस्यात्मकता, सस्पेन्स, रोमांटिक, ॲक्शन, हॉरर, व्हायलेन्स, आदि प्रकार की हो सकती है।
- वेब सीरीज बनाने या लिखने के लिए वेब सिरीज लेखक को दृश्य-श्रव्य माध्यम की सारी जानकारी होनी आवश्यक होती है। जैसे-दृश्य माध्यम की भाषा, कॅमेरा, निर्माता, निर्देशक, पत्रों की वेशभूषा पात्रों का अभिनय, दृश्य संयोजन आदि।

अतः प्रभावशाली वेब सिरीज बनाते समय निर्माता और लेखक को दृश्य, कथानक, पात्र, संवाद और भाषा पर बारकाई से काम करना आवश्यक बनता है। समग्र रूप से कह सकते है कि वेब सिरीज वर्तमान युग का एक युवा प्रिय दृश्य-श्रव्य माध्यम है, जिसने आज के युवकों को अपनी ओर आकर्षित एवं प्रभावित किया है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्य के नीचे दिए गए विकल्प में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. भारत मे सबसे लोकप्रिय संचार माध्यम .... है।

   अ) रेडिओ आ) समाचार पत्र इ) दूरदर्शन ई) डॉक्युमेंटरी

2. दूरदर्शन शब्द .... का पर्याय है।

   अ) टेलिव्हिजन आ) रेडिओ इ) फिल्म ई) डॉक्युमेंटरी

3. संसार का पहला नियमित सार्वजनिक प्रसारण .... में आरंभ हुआ।

   अ) 1930 आ) 1940 इ) 1945 ई) 1950

4. दूरदर्शन .... माध्यम है।

   अ) दृश्य आ) श्रव्य इ) दृश्य-श्रव्य ई) मुद्रित

5. .... दृश्य-श्रव्य जनसंचार माध्यम है।

   अ) समाचार पत्र आ) नियतकालिका इ) डॉक्युमेंटरी ई) रेडिओ नाटक

6. डॉक्युमेंटरी को हिंदी में............ कहा जाता है है।

   अ) इतिवृत्त आ) लघु फिल्म इ) वृत्तचित्र ई) यात्रा साहित्य

7. किसी फिल्म की सफलता उसकी .... पर निर्भर करती है।

   अ) पटकथा आ) चरित्र इ) कहानी ई) उद्देश्य

8. डॉक्युमेंटरी मूल रूप से .... घटना पर आधारित होती है।

अ) सत्य आ) काल्पनिक इ) अर्धसत्य ई) अर्ध काल्पनिक

9. सामान्यतः पटकथा शब्द पट +............ के संयोग से बना है।

अ) कथा आ) कथ्य इ) कहानी ई) कथानक

10. वेब सिरीज इंटरनेट के माध्यम से............ प्लॅटफॉर्म पर ही होता है।

अ) डिजिटल आ) रेडिओ इ) टीव्ही ई) परदे

4.5 शब्दार्थ, संदर्भ, टिपण्णियाँ :

1) पट - परदा
2) टेलिव्हिजन - दूरदर्शन
3) डॉक्युमेंटरी - वृत्तचित्र
4) सृजन - नवनिर्माण
5) दृश्य संयोजन - दृश्यों का उचित क्रम
6) टेली विजन- दूर का देखना
7) सीरियल - धारावाहिक
8) एपिसोड - कडियाँ

4.6 स्वयंअध्ययन प्रश्न के उत्तर :

1. इ) दूरदर्शन 2. अ) टेलिव्हिजन 3. अ) 1930 4. इ) दृश्य-श्रव्य

5. इ) डॉक्युमेंटरी 6. इ) वृत्तचित्र 7. अ) पटकथा 8. अ) सत्य

9. अ) कथा 10. अ) डिजिटल

4.7 सारांश :

- दूरदर्शन धारावाहिक एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है।
  दूरदर्शन अर्थात् टेली विजन जिसका अर्थ है - दूर का दर्शन करना या दूर का देखना।
- दूरदर्शन धारावाहिक अर्थात् टेली विजन पर प्रसारित होनेवाले धारावाहिक। धारावाहिक ऐसी नाटकीय कथा को कहते हैं, जिसे किश्तों में विभाजित कर उन किश्तों को टेली विजन या रेडिओ पर एक-एक करके दैनिक, साप्ताहिक,मासिक या किसी अन्य क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है।
- दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के लिए कथानक या विषयवस्तु, विचार तत्व, दृश्य संयोजन, पात्र-चरित्र-चित्रण, संवाद, भाषा-शैली आदि तत्त्वों की आवश्यकता होती है।

- पटकथा एक कंकाल होता है। अर्थात् स्टेप आउटलाइन। यह पटकथा का ढाँचा प्रस्तुत करती है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि सिनेमा में कितने दृश्य हैं और वे किस क्रम में क्रम से आएंगे। महत्वपूर्ण संवाद कौन-कौन से होंगे।
- पटकथा के दृश्यों को क्रमबद्ध तरीका और स्थापित तरीका इन दो पद्धतियों से लिखा जाता है।
- पटकथा लेखन के लिए कहानी, पात्र, संवाद, देश-काल-वातावरण, दृश्य संयोजन आदि घटक महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- वस्तुतः डॉक्युमेंटरी दृश्य-श्रव्य माध्यम है। जिसके माध्यम से किसी सूचना या तथ्य को दृश्य-श्रव्य रूप में दूसरों तक पहुँचाया जाता है। सूचना या तथ्य को दृश्य-श्रव्य रूप में दूसरों तक पहुँचाते समय सूचनात्मकता एवं कलात्मकता का समावेश हो जाता है।
- डॉक्युमेंटरी एक वृत्तचित्र है। जिसमें यथार्थता, सूचनात्मकता, संकलन एवं क्रमबद्धता एवं सारगर्भित भाषा आदि विशेषताएँ पायी जाती है।
- वेब सीरीज इंटरनेट के माध्यम से वेब पेज पर दिखाई देनेवाला धारावाहिक या दृश्य-श्रव्य कडियों की एक श्रृंखला होती है। इसे वेब शृंखला या वेब शो भी कहा जाता है।

4.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. दूरदर्शन धारावाहिक लेखन पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
2. पटकथा लेखन का स्वरूप बताकर पटकथा लेखन के तत्व बताए।
3. डॉक्युमेंटरी का स्वरूप बता कर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. वेब सिरीज के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

ब) लघुत्तरी प्रश्न

1. दूरदर्शन धारावाहिक लेखन के तत्व स्पष्ट कीजिए।
2. पटकथा के स्वरूप को संक्षेप में लिखिए।
3. डॉक्युमेंटरी की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
4. वेब सिरीज का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

4.9 क्षेत्रिय कार्य :

- दूरदर्शन धारावाहिक, डॉक्युमेंटरी और वेब सीरीज को प्रत्यक्ष देखे और उसका अवलकोन करें।
- दूरदर्शन धारावाहिक, डॉक्युमेंटरी, वेब सीरीज जहाँ पर रेकॉर्ड की जाती है, उसे भेट दें। रेकॉर्डिंग की तकनीकी प्रविधि से अवगत हो।
- छात्र प्रत्यक्ष रूप से छोटे समयवाली डॉक्युमेंटरी बनाने का प्रयास करें।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

- हैदराबाद फिल्म इंडस्ट्रीज को भेंट दें और वहा पटकथा के रेकॉर्डिंग को प्रत्यक्ष देखे और समझे।
- प्रसिद्ध पटकथा लेखक को मिले और उनका साक्षात्कार लेने का प्रयास करें।
- छात्र प्रत्यक्ष रूप से पटकथा लेखन, दूरदर्शन धारावाहिक लेखन, वेब सीरीज लेखन तथा डॉक्युमेंटरी लेखन करने का प्रयास करें।

❑❑❑

इकाई –3
संभाषण कला

अनुक्रम –

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

3.3.1 संभाषण का अर्थ एवं स्वरूप

3.3.2 संभाषण कला के प्रमुख तत्त्व

3.3.2.1 भाषा ज्ञान

3.3.2.2 मानक उच्चारण

3.3.2.3 सटीक प्रस्तुति

3.3.2.4 अंतराल

3.3.2.5 ध्वनि वेग

3.3.2.6 लहजा

3.3.3 संभाषणकला के विविध रूप

3.3.3.1 उद्घोषणा

3.3.3.2 समालोचना

3.3.3.3 सूत्रसंचालन

3.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.5 सारांश

3.7 स्वाध्याय

3.8 क्षेत्रीय कार्य

3.9 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1. संभाषण के अर्थ और स्वरूप को जान सकेंगे।
2. संभाषण कला के प्रमुख तत्वों से परिचित होंगे।
3. संभाषण के विविध रूपों से परिचित हो सकेंगे।
4. संभाषण की आवश्यकता को पहचान सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना:

अपने मनोभावों को प्रकट करने तथा विचारों के परस्पर आदान-प्रदान के लिए हम भाषा का उपयोग करते हैं। परस्पर वार्तालाप द्वारा ही हमारे जीवन के विभिन्न कार्य हो पाते हैं। वार्तालाप में कम-से-कम दो व्यक्ति (1) बोलेनेवाला अर्थात वक्ता तथा (2) सुननेवाला अर्थात श्रोता का होना जरूरी होता है। विचारों के संप्रेषण और अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। आमने-सामने की बातचीत में संप्रेषण केवल भाषा से ही नहीं होता, अपितु विभिन्न चेष्टाओं से भी होता है।

मनुष्य अपनी इच्छाओं और भावनाओं को व्यक्त करना चाहता है। संभाषण के द्वारा उसके व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार संचालित होते रहते हैं। कभी वह दूसरों को सलाह देने के लिए तो कभी अपने कार्य की सिद्धि के लिए अथवा कभी अपने मन की बातों को अभिव्यक्त करने के लिए संभाषण का प्रयोग करता है। यह भी कहा जा सकता है कि संभाषण के माध्यम से व्यक्ति का समाजीकरण होता है। अर्थात व्यष्टि से समष्टि की ओर मनुष्य संभाषण के द्वारा अग्रसर होता है।

3.3 विषय- विवरण

3.3.1 संभाषण का अर्थ एवं स्वरूप:

संस्कृत के 'भाष' धातु में 'ल्युट' प्रत्यय (अन) लगाने से भाषण शब्द की व्युत्पत्ति होती है। इससे पहले सम' उपसर्ग जोड़ने से 'संभाषण' शब्द बनता है। संभाषण का सामान्य अर्थ है बातचीत अथवा वार्तालाप। 'सम' उपसर्ग के साथ-साथ अव्यय भी है। इसका अर्थ है समान, तुल्य, बराबर और सारा। 'संभाष' में ल्युट प्रत्यय (अत) जोड़ने से इसका अर्थ अभिवादन, कथन और वार्तालाप भी होता है। वार्तालाप के अंतर्गत अनुभाषण, आलाप, भाषण, उक्ति, कथोपकथन, गुफ्तगू, चर्चा, बतकही, वार्ता, संलाप, संवाद और संभाषण शामिल हैं।

संभाषण अकेले में संभव नहीं होता। इसके लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जब दो व्यक्ति आपस में प्रथम बार मिलते हैं तो अभिवादन के साथ बातचीत एवं संभाषण शुरू करते हैं। व्यक्ति आपस में जब परस्पर संभाषण करता है तब एक व्यक्ति मन की बात बताता है तो दूसरा ध्यान से सुनता है। दूसरा व्यक्ति तभी बात करेगा जब पहले व्यक्ति का कथन पूरा हो जाता है। जब ऐसा प्रतीत हो कि

कोई वार्ता इच्छा के अनुरूप नहीं है या समझ से बाहर है, तो संभाषण को बंद कर देना चाहिए क्योंकि बातचीत की प्रक्रिया 'सुनना-समझना' तथा बोलना से होकर गुजरती है। सरसता संभाषण का एक अनिवार्य तत्व है। वार्तालाप तभी आगे चल सकता है जब तक वह सरल और रोचक हो। संभाषण के लिए व्यक्ति का विवेकशील होना भी आवश्यक है। संभाषण करते समय श्रोता के सामाजिक और बौद्धिक स्तर का ध्यान रखना वक्ता के लिए अनिवार्य है। प्रभावी और स्पष्ट कथन तथा वक्ता-श्रोता का प्रत्यक्ष संवाद संभाषण की प्रमुख कसौटियाँ हैं।

3.3.2 संभाषण कला के प्रमुख तत्त्व:

संभाषण के लिए वक्ता और श्रोता के भाषण में समानता की अपेक्षा होती है। अर्थात वक्ता और श्रोता के बीच संदेशों का आदान-प्रदान समान रूप में होना चाहिए। अतएव संभाषण कला के प्रमुख तत्त्व निम्नानुसार हैं-

3.3.2.1 भाषा ज्ञान:

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा, मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा अभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे अभ्यंतर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है।

हम व्यवहार में देखते हैं कि भाषा का संबंध एक व्यक्ति से लेकर संपूर्ण विश्व तक है। व्यक्ति और समाज के बीच व्यवहार में आने वाली इस परंपरा से अर्जित संपत्ति के अनेक रूप हैं । समाज सापेक्षता के साथ व्यक्ति सापेक्षता भाषा के लिए अनिवार्य तत्त्व हैं। भाषा संकेतात्मक होती है अर्थात् वह एक 'प्रतीक स्थिति है। इसकी प्रतीकात्मक गतिविधि के चार प्रमुख संयोजक हैं- एक वह जो संबोधित करता है, दूसरा वह जिसे संबोधित किया जाता है, तीसरी संकेतित वस्तु और चौथी-प्रतीकात्मक संवाहक जो संकेतित वस्तु की ओर प्रतिनिधि भंगिमा के साथ संकेत करता है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सके और दूसरों के भावो को समझ सके उसे भाषा कहते है। सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते है। यह संकेत स्पष्ट होना चाहिए क्योंकि मनुष्य के जटिल मनोभावों को भाषा व्यक्त करती है।

संभाषण के लिए भाषा के सिवाय कोई और ऐसा साधन है ही नहीं, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों पर भलीभाँति प्रकट कर सके और दूसरों के विचारों को स्वयं स्पष्ट रूप से समझ सके। मनुष्य के संपूर्ण कार्य उसके विचारों से उत्पन्न होते हैं और इन कार्यों में दूसरों की सहायता अथवा सम्मति प्राप्त करने के लिए उसे उन विचारों को दूसरों पर प्रकट करने की आवश्यकता होती है। जगत् का अधिकांश व्यवहार

बोलचाल अथवा लिखा-पढ़ी से चलता है, इसलिए भाषा जगत् के व्यवहार का मूल है। भाषा के द्वारा हम केवल एक-दूसरे के विचारों को ही नहीं जान लेते, बल्कि उसकी सहायता से हमारे विचार भी उत्पन्न होते हैं। किसी विषय पर सोचते समय हम एक प्रकार का मानसिक संभाषण करते हैं, जिससे हमारे विचार आगे चलकर भाषा के रूप में प्रकट होते हैं। इसलिए मनुष्य को भाषा का मूलभूत ज्ञान आवशक है।

3.3.2.2 मानक उच्चारण:

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा, मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वर एक व्यवस्था में मिलकर एक संपूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं।

मानक का अर्थ होता है एक निश्चित पैमाने के अनुसार गठित। भाषा, सम्प्रेषण एवं संभाषण का माध्यम है अर्थात् हम भाषा के माध्यम से ही अपनी बातें दूसरों तक पहुँचाते हैं। सम्प्रेषण एवं संभाषण की प्रक्रिया की सफलता किसी व्यक्ति द्वारा किए जा रहे भाषा के उच्चारण पर निर्भर करती है। 'मानक उच्चारण' किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा, के माध्यम के रूप में यथासाध्य उसी का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है। हम संभाषण के लिए जिस भाषा का प्रयोग करते हैं उसके उच्चारण के नियम तथा अनुशासन का पालन करना पडता है।

मानक उच्चारण का मतलब है किसी भाषा में शब्दों का उच्चारण करने का एक ऐसा तरीका जिससे वह भाषा शुद्ध और एकरूप हो। मानक उच्चारण के ज़रिए, किसी भाषा में मौजूद अंग्रेज़ी, अरबी-फ़ारसी, या अन्य भाषाओं के शब्दों का उच्चारण सही तरीके से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हिंदी में अंग्रेज़ी के शब्दों 'ऑ', 'ज', 'फ' का उच्चारण बॉल, कॉफ़ी, ज़ू, फ़ाइल जैसे शब्दों में मानक माना जाता है। इसी तरह, अरबी-फ़ारसी शब्दों के लिए क, ख, रा, ज, फ़, का उच्चारण कैद, खाला, राम, ज़रूर, फालतू जैसे शब्दों में मानक माना जाता है।

अतः मानक उच्चारण से निर्मित भाषा सर्वमान्य भाषा होती है, वह व्याकरण सम्मत होती है और उसमें निश्चत अर्थ संप्रेषित करने की क्षमता होती है। गठन और संप्रेषण की एकरूपता उसका सबसे बड़ा लक्षण है। यह भाषा सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक बन जाती है। धीरे-धीरे इस मानक भाषा की शब्दावली, उसका व्याकरण, उसके उच्चारण का स्वरूप निश्चित और स्थिर हो जाता है और इसका प्रसार और विस्तार पूरे भाषा क्षेत्र में हो जाता है। मानक हिंदी भाषा में मानक शब्दों का प्रयोग होने तथा व्याकरण सम्मत भाषा होने से यह भाषा उच्चारण व लेखन दोनों में ही अशुद्धियों से मुक्त होती है तथा समस्त प्रतिष्ठित व औपचारिक अवसरों पर इसका प्रयोग किया जाता है। शासन की अधिकृत भाषा होने से संपूर्ण प्रशासन प्रक्रिया में इसी भाषा का प्रयोग किया जाता है। इसका गौरवशाली इतिहास होने से इसमें विपुल साहित्य उपलब्ध होता है।

भाषा का स्वरूप सुनिश्चित और सुनिर्धारित होने से इस भाषा को बोलने, सीखने व समझने में काफी सुविधा होती है। मानक भाषा का एक गुण है कि इसमें गतिशीलता बनी रहती है। शिक्षा, कानून, विज्ञान, चिकित्सा, अनुसंधान आदि के क्षेत्र में मानक भाषा का प्रयोग न केवल प्रक्रिया को सरस बनाता है, वरन उसे सीखने में भी सहायक होता है।

भाषा के मानक उच्चारण की विशेषताएँ :

1) सारे विश्व की अधिकांश समुन्नत भाषाओं का मानक रूप होता है।

2) मानकीकरण के कारण ही कोई भाषा अपने पूरे क्षेत्र में शब्दावली तथा व्याकरण की दृष्टि से समरुप होती है, इसीलिए वह सभी लोगों के लिए बोधगम्य भी होती है।

3) 'मानक भाषा' किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा, के माध्यम के रूप में यथासाध्य उसी का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है।

4) भाषा, संप्रेषण एवं संवाद का माध्यम है अर्थात् भाषा के प्रयोग में अशुद्धि होने से संप्रेषण प्रभावित होता है।

5) संप्रेषण एवं संवाद की प्रक्रिया की सफलता किसी व्यक्ति द्वारा किए जा रहे भाषा के प्रयोग पर निर्भर करती है ।

6) मानक उच्चारण से भाषा में अशुद्धियों से बचा जा सकता है।

7) मानक भाषा का इस्तेमाल औपचारिक अवसरों पर किया जाता है और यह शिक्षा, प्रशासन, वाणिज्य, समाचार-पत्र, कला और संस्कृति की विभिन्न विधाओं के लिए संप्रेषण का माध्यम है।

सारांश:

संप्रेषण को सफल बनाने के लिए मानक उच्चारण अनिवार्य है। संवाद की प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए भाषा का मानक यानी स्टैंडर्ड रूप होता है। हम किसी भी भूगोल में उस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं तो उसके प्रयोग में उस भाषा के लिए निर्धारित उच्चारण के नियमों का,अनुशासनों का पालन करना जरुरी होता है।

3.3.2.3 सटीक प्रस्तुति:

प्रस्तुतीकरण के माध्यम से वक्ता दर्शकों तथा श्रोताओं तक जानकारी पहुँचाता है। प्रस्तुतियाँ आम तौर पर प्रदर्शन, परिचय, व्याख्यान या भाषण के माध्यम से होती हैं। जिनका उद्देश्य सूचित करना, राजी करना, प्रेषित करना, प्रेरित करना, सद्भावना का निर्माण करना या एक नया विचार प्रस्तुत करना होता है। प्रेषक द्वारा प्राप्तकर्ता को संदेश मौखिक रूप से देना कोई नया नहीं है। व्यक्तिगत जीवन में, व्यावसायिक जगत में तथा सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में हम प्रतिदिन ग्राहकों, साथियों, मित्रों, कर्मचारियों, नियोक्ताओं,

जनता एवं अन्य लोगों के साथ संचार कार्य मौखिक रूप से करते रहते हैं। मौखिक प्रस्तुतीकरण में भाषा का बहुत महत्व है। भाषा मानव समूह में आचरण को समझने में एक मुख्य कुंजी है। भाषा सामाजिक परंपराओं का एक संस्थान एक प्रतीकों की श्रृंखला तथा एक प्रत्ययों (विचार) की श्रृंखला में विशिष्ट प्रकार के संबंधों का वर्णन करती है। शाब्दिक प्रतीक वाणी (मौखिक) तथा लेखन दोनों में व्यक्त होते हैं किंतु यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि अनेक प्रकार के प्रतीक जो कि शब्दों या संख्या से विभिन्न हैं, वह भी विचारों का संकेत देने का कार्य करते हैं। प्रभावशाली संचार के लिए यह आवश्यक है कि संहिताबद्ध तथा संकेत वाचन प्रक्रियाओं का एक-दूसरे के साथ तालमेल हो। सटीक प्रस्तुति के लिए आवश्यक है कि आप एक कुशल वक्ता बनें जिसके लिए आपके बोलने के कौशल में विकास की हमेशा आवश्यकता रहती है।

सटीक प्रस्तुति के समय आपको कुछ बिंदुओं का ध्यान अवश्य रखना चाहिए जैसे-

1) व्यवधान:

जब आप बोल रहें हो तो उस स्थान पर ऐसी गतिविधियाँ नहीं हो रही हों जिससे आपका या सुननें वालें का ध्यान टूटे। जैसे टी.वी.का चलना, मोबाइल फोन पर कॉल का आना, रेडियो आदि का चलना।

2) प्रभावी सम्प्रेषण:

सटीक प्रस्तुति में बोलने वाले की भूमिका सबसे अहम होती है। प्रस्तुतकर्ता अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करना है, किस प्रकार एवं किस क्रम में अपने विचारों को रखना है, बोलने की गति, सूर, समय सीमा, सामयिक प्रसंग, ठहराव आदि सबका ध्यान रखना आवश्यक है। गलत स्थान पर ठहराव से आपकी बात का संदेश बदल सकता है। आपकी भाषा ऐसी होनी चाहिए जो कि सरल एवं स्पष्ट हो और सरलता से आपका संदेश सुनने वाले तक पहुँच जाए। आप क्या बोल रहे हैं और क्या बोलना चाहते हैं दोनों में तालमेल होना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे शब्दों का प्रयोग करें जिनके अर्थ आपको स्पष्ट हो और दूसरों के लिए बोधगम्य हो।

3) उच्चारण शब्दों का सही प्रयोग:

उच्चारण बोलने वाले के संदेश को आसानी से श्रोता तक पहुँचाता है। यदि आपकी बोलने की गति आवश्यकता से धीमी या तेज है तो यह सुनने वाले के लिए व्यवधान पैदा कर सकती है।

4) शारीरिक भाषा:

आपके बोलने का संदेश एवं आपकी शारीरिक भाषा में तालमेल होना अत्यंत आवश्यक है। आपके चेहरे पर आए हाव-भाव, आपके बैठने या खड़े होने की मुद्रा, आपके हाथों का संचालन एवं आपके द्वारा दिए गए संकेत आपके संदेश को श्रोता तक पहुँचाने में उतने ही सक्षम हैं, जितनी की आपकी भाषा।

5) देखना:

बोलते समय बोलने वाले एवं सुनने वाले का एक-दूसरे की ओर देखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बोलते समय श्रोता की ओर अवश्य देखें परंतु इसका अर्थ घूरना नहीं है। यह आपको सुनने वाले की रूचि का पता करने में सहायक होता है।

6) आदर दर्शाना:

जब आप बोल रहे हों तो सुनने वाले के लिए आपके मन में आदर या प्रेम का भाव आपके बोलने के ढंग से अवश्य प्रदर्शित होना चाहिए। आपके बोलने का ढंग अपने विचारों की अभिव्यक्ति का होना चाहिए न कि दूसरों पर हावी होने का।

7) रूचि परखना:

बोलने वाले या वक्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह इस बात को अवश्य परखें कि क्या सुननें वाले उसकी बातों को सुन एवं समझ रहे हैं। सुनने वाले की रूचि एवं ध्यान बनाएँ रखने के लिए प्रतिपुष्टि अत्यंत आवश्यक है। बोलते समय विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण रोचक ढंग से करने से सुनने वाले की रूचि बराबर बनी रहेगी। बीच-बीच में उदाहरण आदि विषय वस्तु को रोचक बना सकते हैं।

8) मुखर होना:

अपनी बात को आप स्पष्ट एवं स्वतंत्र रूप से दूसरों के सामने बोलें। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि वो भी आपकी बातों से सहमत हो। अतः बोलते समय दूसरों को बोलने का अवसर भी अवश्य दें और उनकी बातों के आशय को अवश्य समझें। ऐसे में दूसरों के दृष्टिकोण को समझते हुए अपनी बातों को पूरा करें।

3.3.2.4 अंतराल:

अंतर और काल इन दो शब्दों से मिलकर बना है अंतराल। अंतर माने फ़र्क और काल माने समय। वक्त के दो बिंदुओं के बीच के हिस्से को 'अंतराल' कहते हैं। अंतराल भूत व भविष्य दोनों काल में संभव है। जैसे सुबह और शाम होने के बीच में जो समय गुज़रता है उस समय को अंतराल कह सकते हैं। अंतराल का ज्ञान हमेशा समय से होता है। बिना किसी 'अंतराल' के, संवाद करने का कोई मतलब नहीं है।

अंतराल की मुख्य बातें:

अंतराल बातचीत में एक मोड़ के अंत में एक मौन है। अंतराल तब होता है जब वर्तमान वक्ता अगले वक्ता का चयन नहीं करता है, या बातचीत में भाग लेने वालों में से किसी ने भी खुद को अगले वक्ता के रूप में नहीं चुना है।

बातचीत में अंतराल और विराम भी मौन हैं, लेकिन वे अंतराल से अलग हैं। एक अंतराल लंबे समय तक मौन रहने के बाद विषय का परिवर्तन है। विराम एक मौन है जो वक्ता की बातचीत के दौरान होता है। बातचीत में विभिन्न प्रकार के मौन को दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है- अंतर-मोड़ मौन अंतराल और चूक अंतर मोड़ मौन अंतराल जबकि विराम अंतर-मोड़ मौन हैं। विरामों को पुनः पूर्ण विराम (स्वरबद्ध) और मौन विराम (गैर स्वरबद्ध) में विभाजित किया जाता है।

3.3.2.5 ध्वनि वेग:

किसी माध्यम (जैसे हवा, जल, लोहा) में ध्वनि 1 सेकेण्ड में जितनी दूरी तय करती है उसे उस माध्यम को ध्वनि का वेग कहते हैं। ध्वनि तरंगों का कंपन है; जो तब उत्पन्न होता है जब ये तरंगें तरल, गैस या ठोस जैसे किसी भी माध्यम से प्रसारित होती हैं। उदाहरण के लिए जब हम तालाब या नदी में पत्थर के टुकड़े फेंकते हैं तो पानी में लहर कंपन करती है और हमें 'छपाक' जैसी आवाज सुनाई देती है। अन्य उदाहरण जब हम एक ड्रम बजाते हैं तो ठोस में तरंग की कंपन होती है और हमें 'धम- धम' जैसी आवाज सुनाई देती है। अंत में गैस का उदाहरण लें, जब गुब्बारा फटता होता है तो हमें फटाक की आवाज सुनाई देती है, यह गैस माध्यम में तरंग के कंपन के टकराव के साथ दबाव के कारण होता है।

ध्वनि की गति पर माध्यम का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। ध्वनि को किसी एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। पृथ्वी की सतह पर ध्वनि तरंगें वायुमंडल या हवा को माध्यम के रूप में प्रयोग करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तक गमन करती है। माध्यम की सघनता और विरलता का ध्वनि की गति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। माध्यम जितना अधिक सघन होता है ध्वनि की गति अपेक्षाकृत रूप से उतनी ही तीव्र होती है। इसी कारण ध्वनि हवा की बजाय पानी और लोहे जैसी अधिक सघन वस्तुओं में अधिक तेजी से गमन करती है। माध्यम की अनुपस्थिति में ध्वनि तरंगें एक स्थान से दूसरे स्थान तक गमन करने में असमर्थ होती है इसी कारण निर्वात या वैक्यूम में ध्वनि सुनाई नहीं देती क्योंकि वहां कोई माध्यम नहीं होता।

वायु में ध्वनि का संचरण वायु के कणों के कंपन के कारण उत्पन्न हुए संपीडन और विरलन के रूप में होता है। ध्वनि संचार का अर्थ होता है कि ध्वनि को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाए, जिससे दूरस्थ स्थानों के लोग उस ध्वनि को सुन सके। ध्वनि संचार के लिए विभिन्न प्रकार के माध्यम होते हैं। इनमें से प्रमुख माध्यम हैं:

1. वायुमार्ग: यह ध्वनि का सबसे पुराना माध्यम है। इसमें ध्वनि को वायु के माध्यम से संचारित किया जाता है। यह माध्यम आमतौर पर बोली जाने वाली भाषा या संगीत के लिए उपयोग किया जाता है।

2. तार मार्ग: इसमें ध्वनि को तारों के माध्यम से संचारित किया जाता है। यह माध्यम टेलीफोन, रेडियो, टीवी आदि उपकरणों के लिए उपयोग किया जाता है।

3. अंतरिक्ष मार्ग: इसमें ध्वनि को उपग्रहों के माध्यम से संचारित किया जाता है। इस माध्यम का उपयोग टेलीविजन, रेडियो, संचार उपकरणों और साइंटिफिक अनुसंधान के लिए किया जाता है।

3.3.2.6 लहजा:

लहजा का अर्थ है बात करने का ढंग, बोलने का अंदाज़ अथवा तरीक़ा। भाषाविज्ञान में लहजा बोलचाल में उच्चारण के उस तरीके को कहते हैं जिसका किसी व्यक्ति, स्थान, समुदाय या देश से विशेष संबंध हो। उदहारण के तौर पर पूर्वी हिंदी क्षेत्र के ग्रामीण स्थानों में लोग 'श' की जगह पर 'स' बोलते हैं,

जिसकी वजह से वह 'शहर' को 'सहर' और 'अशोक' को 'असोक' बोलतें हैं। इसे उस क्षेत्र का देहाती लहजा कहा जा सकता है।

संभाषण में आवाज़ का लहज़ा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उस तरीके को संदर्भित करता है जिस तरह से हम अर्थ, भावनाएँ और दृष्टिकोण व्यक्त करने के लिए अपनी आवाज़ का उपयोग करते हैं। हमारा लहज़ा हमारे संदेश की प्रभावशीलता को जैसे बढ़ा सकता है वैसे बाधित भी कर सकता है। प्रभावी संभाषण के लिए लहजे की निम्नांकित विशेषताएँ महत्वपूर्ण हैं–

1. आवाज़:

बोलते समय हमारी आवाज़ का आरोह अवरोह मन का उत्साह, गुस्सा या उदासी जैसी भावनाओं को व्यक्त कर सकता है। आवाज में बदलाव हमारे संभाषण में गहराई और बारीकियाँ जोड़ सकता है। आवाज को उचित रूप से समायोजित करने से हमें अपना संदेश प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने में मदद मिल सकती है।

2. बोलने की गति:

बोलने की गति से तात्पर्य उस गति से है जिस पर हम बोलते हैं। यह तत्परता, उत्साह या शांति का संदेश दे सकता है। उचित गति से बोलने से दूसरों को हमारा संदेश समझने और समझाने में मदद मिलती है।

3. स्वरशैली:

स्वरशैली से तात्पर्य भाषण के दौरान हमारी आवाज़ के उठने और गिरने से है। यह ज़ोर, व्यंग्य या अनिश्चितता को व्यक्त कर सकता है। स्वरशैली का उपयोग प्रभावी रूप से हमारे शब्दों में अर्थ और स्पष्टता जोड़ता है।

4. जोर देना:

ज़ोर देने से तात्पर्य कुछ शब्दों या वाक्यांशों पर वक्ता द्वारा दिया जाने वाला ज़ोर तथा बल है। ज़ोर तथा बल के उचित उपयोग से हमें मुख्य बिंदुओं को उजागर करने और अपना इच्छित संदेश व्यक्त करने में मदद मिलती है।

5. भावनाओं और दृष्टिकोणों को व्यक्त करना:

आवाज़ का लहजा हमें कई तरह की भावनाओं और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने की अनुमति देता है। यह खुशी, गुस्सा, उदासी, उत्साह, सहानुभूति और बहुत कुछ व्यक्त कर सकता है। अपने लहज़े का प्रभावी ढंग से उपयोग करके, हम अपनी भावनाओं को प्रामाणिक रूप से व्यक्त कर सकते हैं और दूसरों के साथ गहरे स्तर पर जुड़ सकते हैं।

6. अर्थ और आशय व्यक्त करना:

आवाज का लहजा हमारे शब्दों में अर्थ और इरादा जोड़ता है। यह वाक्य की व्याख्या को पूरी तरह से बदल सकता है। उदाहरण के लिए, व्यंग्यात्मक लहजे में यह बहुत बढ़िया है कहना वास्तविक उत्साह के

साथ कहने से अलग अर्थ व्यक्त करता है। अपने लहजे के प्रति सचेत रहना सुनिश्चित करता है कि हमारा इच्छित संदेश सटीक रूप से व्यक्त हो।

7. तालमेल और संबंध स्थापित करना:

दूसरों के साथ तालमेल और संबंध स्थापित करने में आवाज का लहजा अहम भूमिका निभाता है। गर्मजोशी और दोस्ताना लहजे का इस्तेमाल करके हम एक स्वागतयोग्य और समावेशी माहौल बना सकते हैं। इसके विपरीत, एक कठोर या खारिज करने वाला लहजा अवरोध पैदा कर सकता है और प्रभावी संचार में बाधा डाल सकता है।

सारांश:

प्रभावी संचार में आवाज़ का लहज़ा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमें भावनाओं को व्यक्त करने, अर्थ व्यक्त करने, संबंध स्थापित करने और दूसरों की धारणाओं को प्रभावित करने की अनुमति देता है। सकारात्मक और प्रभावी लहज़ा विकसित करके हम अपने संचार कौशल को बढ़ा सकते हैं और मजबूत संबंध बना सकते हैं।

3.3.3.1 उद्घोषणा:

उद्घोषणा का सामन्य अर्थ है ऐलान करना, घोषणा करना। उद्घोषणा को लैटिन में प्रोक्लेमेयर कहते हैं, जिसका मतलब है घोषणा द्वारा सार्वजनिक करना। उद्घोषणा का मतलब है सार्वजनिक रूप से निकली हुई राजाज्ञा, सूचना, या कोई कही हुई बात। यह घोषणा सार्वजनिक रूप से भी हो सकती है। किसी विषय पर आधिकारिक रूप से भी यह घोषणा की जा सकती है अथवा प्रकाशित अध्यादेश के रूप में भी हो सकती है। सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि सार्वजनिक जानकारी के लिए दी जाने वाली सूचना या सरकारी तौर पर की जाने वाली घोषणा उद्घोषणा कहलाती है। जनता तक बात पहुँचाने के लिए इसे तेज या ऊँची आवाज में प्रसारित किया जाता है।

किसी सूचना की घोषणा करने वाले को उद्घोषक (अनाउंसर) कहा जाता है। उद्घोषक अपनी निजी भाषा शैली के माध्यम से श्रोता का ध्यान आकर्षित करता है। पुराने जमाने में डुगडुगी या ढोल बजाकर गाँवों में घूम-घूम कर किसी बात की घोषणा की जाती थी। इसे मुनादी करना या ढिंडोरा पीटना कहा जाता है। धीरे-धीरे ढोल और डुगडुगी के स्थान पर माइक और लाउड स्पीकर का प्रयोग किया जाने लगा। पंचायत के निर्णय का प्रचार, चुनाव प्रचार, भारतीय रेल और हवाई अड्डे में आवागमन की सूचनाओं का प्रसारण, टीवी- रेडियो आदि में घोषणा मौखिक उद्घोषणा के उदाहरण हैं तो प्रिंट मीडिया में प्रकाशित विज्ञापन आदि लिखित उद्घोषणा के उदाहरण हैं। उद्घोषणा लेखन में मंच संचालन के दौरान अनिवार्य बातों का ध्यान रखना ज़रूरी होता है। उद्घोषणा में कही जाने वाली बातें संक्षिप्त होती हैं, इसलिए भाषा का विशेष ध्यान रखना चाहिए, उद्घोषणा को बहुत ही सधे हुए अंदाज़ में लिखा जाता है।

उद्घोषणा में इन बातों का भी ध्यान रखना चाहिए–

- ✻ उद्घोषणा को आधिकारिक घोषणा माना जाता है।
- ✻ यह किसी व्यक्ति द्वारा कुछ घोषणाओं को ज्ञात करने के लिए जारी की जाती है।
- ✻ यह आमतौर पर राज्य के प्रमुख के नाम पर जारी की जाती है।
- ✻ इसका इस्तेमाल कुछ देशों के शासी ढांचे में किया जाता है।

3.3.3.2 समालोचना:

संवाद कला में खेल जगत की समालोचना का स्थान महत्वपूर्ण है। खेल समालोचना में खेलों का सीधा–सीधा विवरण देने वालों को खेल समालोचक या कमेंटेटर कहा जाता है। कमेंटेटर दो प्रकार के होते हैं, एक रेडियो कमेंटेटर और दूसरा टेलिविज़न कमेंटेटर। खेल समालोचक को अंग्रेजी में (Commentator) कॉमेंटेटर तो हिंदी में टीकाकार, समीक्षक अथवा समीक्षाकर्ता भी कहते हैं। हिंदी खेल समालोचकों में सुशील दोषी, विनित गर्ग, संजय बॅनर्जी, गुरुमित सिंह, आकाश चोपडा, रमन भनोत, सुनील तनेजा, विवेक राजधान, दर्शन सुधाकर आदि प्रमुख हैं। खेल जगत की समालोचना आँखों देखा हाल या वर्तमान का विवरणात्मक प्रस्तुतीकरण है। इसमें प्रसारक या कमेंटेटर जैसे–जैसे देखता है, वैसे–वैसे उसे माइक्रोफोन पर अपने असंख्य श्रोताओं को सुनाता राहता है। इसमें श्रोताओं को, जो कुछ घट रहा है या हो रहा है, उसकी सिलसिलेवार जानकारी मिलती रहती है।

कमेंट्री को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है–

(1) सार्वजनिक महत्व की घटना:

सार्वजनिक महत्व की घटना की कमेंट्री में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, विदेश से आये अतिथि का नागरिक अभिनंदन और महान विभूति की मृत्यु की शोभा यात्रा आदि की कमेंट्री शामिल की जाती है।

(2) खेल संबंधी कमेंट्री:

खेल–कमेंट्री के अंतर्गत महत्वपूर्ण खेलों का आँखों देखा हाल प्रसारित किया जाता है, उदा. क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, टेनिस आदि। खेलकूद की समालोचना करनी है तो समालोचक को उस खेल के नियम, उसके कुछ कीर्तिमान, रिकार्ड, उस खेल में सिद्धहस्त भूतपूर्व खिलाडियों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त जो खिलाड़ी खेल रहे हैं, उनके बारे में भी जानकारी होनी चाहिए।

क्रीडा समालोचना में कमेंटेटर की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है तथा उनको निम्न प्रकारो में वर्गीकृत किया जा सकता है–

(1) मुख्य समीक्षक:

इस कमेंटेटर का काम है पूरे खेल का आंखों देखा हाल बताना। मोटे तोर पर इसका सबसे बड़ा काम होता है। चल रहे खेल की सारी जानकारी यही प्रदान करता है।

(2) विश्लेषक:

विश्लेषक मुकाबले से पहले दलों की रणनीति पर चर्चा करता है। और अंत में खूबियों की प्रशंसा और गलतियों की समीक्षा करता है। मुख्य रूप से खेल में क्या होगा उसका विश्लेषण करता है।

(3) साइडलाइन रिपोर्टर या संवाददता:

इसका काम होता है मैदान का जायज़ा लेना, खिलाड़ियों की सूची बनाना मुकाबला खेलने वाले खिलाड़ियों की जानकारी प्राप्त करना आदि।

किसी कमेंट्री की जीवंतता काफी हद तक कमेंटेटर पर निर्भर करती है। अत: कमेंटेटर की कुछ विशेषताएँ होती हैं–

(1) आवाज़:

सर्वप्रथम अपनी आवाज से ही कमेंटेटर श्रोताओं को आकर्षित करता है। कमेंटेटर का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए और उसमें एक प्रकार का अपनापन होना चाहिए जिससे लोग आकर्षित होकर बड़े चाव से उसके द्वारा वर्णित आँखों देखा हाल सुनने को लालायित रहें। उसकी आवाज में उतार-चढ़ाव, घटना के अनुसार गति भी होनी चाहिए।

(2) सम्यक ज्ञान:

कमेंटेटर को घटना विशेष की पूरी जानकारी होनी चाहिए। जैसे कि घटना या समारोह में क्या कुछ होने वाला है, उसकी पृष्ठभूमि क्या है आदि। यदि खेलकुद की कमेंट्री करनी है तो उस खेल के नियम, उसके कुछ कीर्तिमान, रिकार्ड, उस खेल में सिद्धहस्त भूतपूर्व खिलाडियों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त जो खिलाड़ी खेल रहे हैं, उनके बारे में भी जानकारी होनी चाहिए।

(3) प्रवाह:

एक कमेंटेटर में धारा प्रवाह बोलने की योग्यता होनी चाहिए। उसके पास शब्दों का इतना भंडार होना चाहिए कि वह अपनी भाषा में विविधता ला सके। ऐसे शब्दों का उपयोग करे जो सुनने वालों को अच्छे और बोधगम्य लगें। शब्दों की तलाश के लिए अटकना या हकलाना या उनके लिए जरूरत से ज्यादा खामोश रहना एक सफल समालोचक के गुण नहीं हैं।

(4) भाषा:

समालोचना संवाद की एक कला है इसलिए कमेंटेटर को बोलते वक्त इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भाषा सरल, सटीक, सुस्पष्ट एवं अर्थपूर्ण होनी चाहिए। च्यूँकि कमेंट्री सुननेवाला श्रोता विभिन्न वर्ग का होता है जिनके लिए अलग-अलग भाषाओं में एक साथ बोलना संभव एवं व्यावहारिक नहीं होता। इसलिए उसे ऐसी भाषा का उपयोग करना होगा जो बिना परेशानी, सहज भाव से सारे श्रोताओं को स्वागत योग्य लगे।

3.3.3.3 सूत्रसंचालन:

संचालक या एंकर किसी भी कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग होता है। किसी भी कार्यक्रम में सूत्र संचालक की बहुत अहम भूमिका होती है। वही सभा की शुरुआत करता है। आयोजकों को तथा अतिथियों को वही मंच पर आमंत्रित करता है, वही अपनी आवाज, सहज और हास्य प्रसंगों तथा काव्य पंक्तियों से कार्यक्रम की सफलता निर्धारित करता है।

सूत्र संचालन के मुख्यतः निम्न प्रकार हैं-

1. शासकीय कार्यक्रम का सूत्र संचालन
2. दूरदर्शन हेतु सूत्र संचालन
3. रेडियो हेतु सूत्र संचालन
4. राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सूत्र संचालन आदि।

यदि टीवी के संदर्भ में बात करें तो एंकर ही चैनल का चेहरा होता है। छोटे पर्दे का एंकर हो या किसी कार्यक्रम का एंकर, उसे अपनी संतुलित भाषा और अंदाज पर विशेष ध्यान रखना होता है। आवाज में निरंतर अभ्यास के माध्यम से निखार लाया जा सकता है। संचालक को विषय की जानकारी की भी आवश्यकता होती है। संचालक के पास 'प्रेजेंस ऑफ माइंड' (प्रत्युत्पन्न मति) का होना अनिवार्य है। कभी-कभी संचालक को अपने विवेक के आधार पर संचालन करना पड़ सकता है। कार्यक्रम संचालक चाहे कैमरे के सामने किसी टीवी स्टूडियो में उपस्थित हो या मंच पर, उसमें आत्मविश्वास का होना अत्यंत जरूरी है। कार्यक्रम शुरू करने से पहले वह पृष्ठभूमि की चर्चा कर सकता है। वह अपने हाव-भाव से तथा अपनी आवाज के उतार-चढ़ाव से श्रोताओं का ध्यान आकर्षित कर सकता है। यह भी स्मरणीय है कि संचालक को परिस्थिति के अनुरूप संचालन करना होता है। यही करण है कि नीरस कार्यक्रम को भी संचालक अपने 'सेंस ऑफ ह्यूमर' (हास-परिहास) से रोचक बना सकता है। किसी साहित्यिक कार्यक्रम का संचालन करते समय संचालक बीच-बीच में प्रासंगिक कविताओं के अंशों का प्रयोग करके कार्यक्रम को रोचक बना सकता है।

सूत्र संचालन, रोज़गार के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधना है। इसके ज़रिए लोग अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं और नौकरी के क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। सूत्र संचालन से कौशल और प्रशासनिक योग्यता का विकास होता है। साथ ही, यह आत्मनिर्भरता के लिए भी फायदेमंद हो सकता है। स्मरण रहे- सूत्र संचालक मंच और श्रोताओं के बीच सेतु का कार्य करता है। सूत्र संचालन करते समय रोचकता, रंजकता, विविध प्रसंगों का उल्लेख करना आवश्यक होता है।

किसी भी कार्यक्रम एवं समारोह में निखार लाना सूत्र संचालक का महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। कार्यक्रम के अनुसार सूत्र संचालक को अपनी भाषा और शैली में परिवर्तन करना चाहिए; जैसे गीतों अथवा मुशायरे का कार्यक्रम हो तो भावपूर्ण एवं सरल भाषा का प्रयोग अपेक्षित है तो व्याख्यान अथवा वैचारिक कार्यक्रम

में संदर्भ के साथ सटीक शब्दों का प्रयोग आवश्यक है। सूत्र संचालन करते समय उसके सामने सुनने वाले कौन हैं; इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

3.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ:

1. संभाषण- बातचीत अथवा वार्तालाप।
2. व्यवधान- किसी चीज अथवा गतिविधि को बाधित करने प्रक्रिया।
3. मुखर होना -दूसरों के साथ सीधे और इमानदार तरीके से संवाद करना।
4. लहजा - बात करने का ढंग, बोलने का अंदाज़ अथवा तरीक़ा।
5. उद्घोषणा - किसी आधिकारिक या औपचारिक तरीके से किसी बात की घोषणा करना।
6. मानक - एक निश्चित पैमाने के अनुसार गठित।
7. अंतराल- वक्त के दो बिंदुओं के बीच के हिस्से को अंतराल कहते है।

3.5 सारांश:

1. जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों पर भलीभाँति प्रकट कर सके और दूसरों के विचारों को स्वयं स्पष्ट रूप से समझ सके उस प्रक्रिया को संभाषण कहते है।
2. 'मानक उच्चारण' किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा, के माध्यम के रूप में यथासाध्य उसी का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है।
3. सटीक प्रस्तुति के लिए आवश्यक है कि आप एक कुशल वक्ता बनें जिसके लिए आपके बोलने के कौशल में विकास की हमेशा आवश्यकता रहती है।
4. वक्त के दो बिंदुओं के बीच के हिस्से को 'अंतराल' कहते हैं। अंतराल भूत व भविष्य दोनों काल में संभव है।
5. माध्यम की सघनता और विरलता का ध्वनि की गति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। माध्यम जितना अधिक सघन होता है ध्वनि की गति अपेक्षाकृत रूप से उतनी ही तीव्र होती है।
6. प्रभावी संचार में आवाज़ का लहज़ा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमें भावनाओं को व्यक्त करने, अर्थ व्यक्त करने, संबंध स्थापित करने और दूसरों की धारणाओं को प्रभावित करने की अनुमति देता है।
7. सामान्य रूप से सार्वजनिक जानकारी के लिए दी जाने वाली सूचना या सरकारी तौर पर की जाने वाली घोषणा उद्घोषणा कहलाती है।
8. खेल जगत की समालोचना आँखों देखा हाल या वर्तमान का विवरणात्मक प्रस्तुतीकरण है।

3.7 स्वाध्याय:

1. संभाषण के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
2. संभाषण कला के प्रमुख तत्वों का परिचय दीजिए।
3. संभाषण के विविध रूपों को स्पष्ट कीजिए।
4. उद्घोषणा के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
5. समालोचना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

3.8 क्षेत्रीय कार्य:

1. संभाषण कला को विकसित करने के लिए किसी कार्यशाळा का आयोजन कीजिए।
2. उद्धोषणा लेखन का प्रयास कीजिए।
3. किसी खेल प्रतियोगिता का समालोचन कीजिए।

3.9 अतिरिक्त अध्यायन के लिए:

1. मीडिया लेखनः सिद्धांत और व्यवहार डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन, दिल्ली।
2. जनसंचार माध्यम : भाषा और साहित्य डॉ. सुधीश पचौरी, नटराज प्रकाशन, दिल्ली।
3. जनसंचार और पत्रकारिता- विविध आयाम- डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, निराली प्रकाशन, पुणे।
4. मीडिया कालीन हिंदीः स्वरूप एवं संभावनाएँ- डॉ. अर्जुन चव्हाण, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. प्रयोजनमूलक हिंदी- डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. प्रयोजनामूलक हिंदी- विविध परिदृश्य- डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, अलका प्रकाशन, कानपुर।
7. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर प्रा. विकास पाटील, ए.बी.एस. पब्लिकेशन वाराणसी।
8. कामकाजी हिंदी - डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

❑❑❑

इकाई –4
अनुवाद

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय - विवेचन

4.3.1 अनुवाद का स्वरुप और परिभाषा

4.3.2 अनुवाद के क्षेत्र

4.3.3 अनुवादक के गुण

4.3.4 प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार

4.3.4.1 शब्दानुवाद

4.3.4.2 भावानुवाद

4.3.4.3 व्याख्यानुवाद

4.3.4.4 आदर्श अनुवाद

4.4 सारांश

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वाध्याय

4.7 क्षेत्रीय कार्य

4.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य –

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

1) अनुवाद शब्द के अर्थ और स्वरुप से परिचित होंगे।
2) अनुवाद की परिभाषा से परिचित होंगे।
3) अनुवाद के क्षेत्रों से अवगत होंगे।
4) अनुवादक के गुणों से परिचित होंगे।
5) अनुवाद के प्रकारों से अवगत होंगे।
6) मौलिक लेखन की ओर रूझाान बढ़ाना।

4.2 प्रस्तावना :

यह तो सभी स्वीकार करते हैं कि एक भाषा सामग्री दूसरी भाषा मे रूपांतर ही अनुवाद है।अनुवाद स्त्रोत भाषा की रचना के भाव, विचार लक्ष्य भाषा मे लाए जाते हैं। अनुवाद करना कष्ट साध्य बात है। संसार में ज्ञान असीम है। ऐसे में कोई मनुष्य ज्ञान से अनभिज्ञ नहीं रह सकता है। दूसरी भाषाओं में उपलब्ध ज्ञानराशि प्राप्त करने का महत्वपूर्ण कार्य अनवाद के द्वारा ही संभव होता है। असल में विभिन्न भाषाओं के बीच की खाई को पाटने के लिए अनुवाद कोल्ड सेतू माना गया है। संस्कृति, शिक्षा और समाज के विकास में अनुवाद का योगदान सराहनीय है।

4.3 विषय – विवेचन :

अब हम अनुवाद का स्वरुप और परिभाषा, अनुवाद के क्षेत्र, अनुवादक के गुण तथा अनुवाद के प्रकारों का विस्तार से अध्ययन करेगें। वर्तमान युग में अनुवाद के क्षेत्र विविध तथा विशाल हैं। हर क्षेत्र के अनुवाद का प्रयोजन अलग अलग है। बहुभाषा भाषी समाज में एक दूसरे को समझने के लिए अनुवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अनुवाद करना एक चुनौति भरा कार्य है कितुं उसकी उपयोगिता बहुआयामी है।

4.3.1 अनुवाद का स्वरुप और परिभाषा –

अनुवाद को अंग्रेजी में Translation कहा जाता है। इसकी व्युत्पत्ति लैटिन शब्द ट्रान्स तथा लेशन के योग से हुई है। ट्रान्स का अर्थ है 'पार' और 'लेशन का अर्थ ले जाना' अर्थात 'पार ले जाना'। ट्रान्सलेशन का शाब्दिक अर्थ है। किसी सामग्री को एक एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाना। अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है पुनः कथन, दूहराना, दूबारा कहना, ज्ञात को कहना।

एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में अंतरित करना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद में स्त्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा और अनुवादक इन तीनों का महत्व होता है। सामान्यत: अनुवाद के जरिए भावों का समान सवंहन होता है। अनुवाद का निश्चित लक्ष्य एवं प्रयोजन होता है। अनुवादक सर्जक बनता है। अनुवादक का व्यक्तित्व स्पष्ट होता है। अनुवाद वर्तमान दुनिया की अनिवार्यता है। प्रतिदिन किसी न किसी रूप में अनुवाद होते जा रहे हैं। मनुष्य ने अनुवाद का महत्व जाना है। अनुवाद अंशत: कला, विज्ञान और शिल्प है। मूल रचनाकार अपने भावो को कला में उतरता है किंतु अनुवादक किसी और मूल के आधार पर सृजन करता हैं। वर्तमान युग में अनुवाद का क्षेत्र बडा व्यापक एवं महत्वपूर्ण है। साहित्य की समृध्दि में भी अनुवाद का योगदान अपना महत्व रखता है। वैश्विकरण के युग मैं मनुष्य के जीवन में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है।

अनुवाद की परिभाषा :

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अनुवाद को परिभाषित करने का प्रयास किया है–

संस्कृत ग्रंथों में प्राप्त परिभाषा :

1) 'न्यायसूत्र' में 'विधि विहित स्थानु वचन अनुवाद' कहा गया है।

   अर्थात विधि तथा विहित का पुन:कथन अनुवाद है।

2) 'भर्तृहरि' में ''आवृत्तिरनुवादो वा''।

   अर्थात अनुवाद का अर्थ दूहराना या पुन:कथन है।

3) 'जैमिनीय न्यायमाला' के अनुसार, ''ज्ञातस्य कथन मनुवाद''।

   अर्थात ज्ञान का कथन अनुवाद है।

4) 'वात्स्यायन भाष्य' में अनुवाद की व्याख्या है, ''प्रयोजनवान पुन:कथन'' अनुवाद होता है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा :

1) कैटफोर्ड ''एक भाषा की पाठय सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठय सामग्री में प्रतिस्थापित करता अनुवाद कहलाता है।''

2) न्यूमार्क ''अनुवाद एक शिल्प है जिसमें एक भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।''

3) रोमन जैकबसन ''एक भाषा के शाब्दिक प्रतीकों की अन्य भाषा के शाब्दिक प्रतीकों द्वारा व्याख्या अनुवाद है।''

4) नाईडा तथा टेबर ''मूल भाषा के संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते है। संदेशों की यह मूल्य समता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से तथा निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।''

5) हैलिडे ''अनुवाद एक संबंध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं, अर्थात दोनों पाठों का संदर्भ समान होता है और उनसे व्यंजित होनेवाला संदेश भी समान होता है।''

6) स्मिथ ''अनुवाद का तात्पर्य है यथासंभव अर्थ को, बनये रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना'

भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा :

1) भोलानाथ तिवारी ''एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ती द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।''

2) डॉ. विनोद गोदरे ''वास्तव में अनुवाद स्त्रोत भाषा में अभिव्यक्त विचारों को यथासंभव मूल भावना के समांतर बोध एवं संप्रेषण के धरातलपर लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।''

3) डॉ. रीतारानी पालीवाल ''किसी एक भाषा की ज्ञान विज्ञान संबंधी पाठसामग्री का दूसरी भाषा में भाषांतर या पुन:कथन अनुवाद है।''

4) डॉ. गार्गी गुप्त ''अनुवाद का मूल अर्थ एक भाषा में निहित विचारों को दूसरी भाषा में यथासंभव ज्यों का त्यों व्यक्त करना है।''

5) डॉ. जी. गोपीनाथन ''अनुवाद के संदर्भ में अर्थ ही पाठ की आत्मा है जिसका अंतरण होता है और शैली ही वह आवरण या शरीर है जिसमें अर्थ रूपी आत्मा निवास करती है।''

6) डॉ. परमानंद गुप्त ''एक भाषा की पाठय सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना अनुवाद कहलाता है।''

7) डॉ. आलोककुमार रस्तोगी ''वस्तुत: किसी एक भाषा में कहे गए कथन को दूसरी भाषा में रूपांतरित करने को अनुवाद की संज्ञा दी जाती है।''

8) डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ''अनुवाद की प्रविधि एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करने तक सीमित नहीं है। एक भाषा के एक रूप के कथ्य को दूसरे रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। उदाहरणार्थ छंद में बताई बात को गद्य में उतारना भी अनुवाद है।''

अनुवाद का स्वरुप और परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि बहुभाषी देश में अनुवाद की नितांत आवश्यकता होती है। विश्वबंधुत्व की भावना बढ़ते में अनुवाद का योगदान सराहनीय है। अनुवाद में स्रो एवं लक्ष्य भाषा यानी दो भाषाएँ होती हैं। अनुवाद कोई सहज और सरल कार्य नहीं है। अनुवाद के बारे में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं। सर्वमान्य ऐसी परिभाषा आज तक प्राप्त नहीं हो सकी।

4.3.2 अनुवाद के क्षेत्र

आधुनिक युग में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं निरंतर महत्वपूर्ण होता जा रहा है। यह सर्व विदीत है कि आज दुनिय का एक दूसरे को परिचय अनुवाद के परिचय पत्र के माध्यम से हो रहा है।

1) पत्राचार : पत्राचार अनुवाद का महत्वपूण क्षेत्र है। अपने ही प्रदेश में पत्राचार करते समय अनुवाद की बिल्कुल जरूरत नहीं पडती किंतु एक ही प्रदेश में बहुभाषी रहते हैं तो अनुवाद की जरूरत पडती है। पत्राचार देश के विभिन्न प्रांतो में साथ ही साथ दूसरे देशों में पत्राचार करते समय अनुवाद की आवश्यकता होती है। पत्राचार विभिन्न कार्यालय, न्यायालय और व्यापार आदि क्षेत्रों में होता है। विविध कंपनियाँ अपनी भाषा में पत्राचार करती है किंतु अनेक स्थानों पर उनकी भाषा भी गैर रहती है। ऐसे समय पर अनुवाद के सिवा कोई चारा नही रहता है। कंपनियो का पत्राचार के अलावा, तुलना पत्र, सर्वेक्षण, आयात-निर्यात शुल्क और सरकारी उत्पादन शुल्क आदि का अनुवाद अनुवादक को करना पडता है। विविध संस्थाओं को विज्ञापन करना पडता है। अनुवादक को विज्ञापन अनेक भाषाओं में अनुदित करना पडता है।

2) शिक्षा : वर्तमान युग में शिक्षा क्षेत्र को सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। शिक्षा का क्षेत्र तो अनुवाद के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। आज के परिप्रेक्ष्य में विज्ञान, समाज विज्ञान, तकनीकि और गणित आदि को महत्वपूर्ण स्थान है। अनेक उत्तम ग्रंथ अंग्रेजी भाषा में या अन्य विदेशी भाषाओं में लिखे गये हैं। ज्ञानवृध्दि के लिए अनुवाद होना आवश्यक होता है। कुशल व्यक्तियों को नई भाषा सिखाते समय अनुवाद अत्यंत उपयोगी सिध्द होता है। किसी जर्मनी या जापानी व्यक्ति को भारतीय साहित्य पाना है तो उन्हें भारतीय साहित्य का अनुवाद जर्मनी या जापानी में प्राप्त करना पडता है।

3) साहित्य : विश्व में अनेक देशों में अलग अलग भाषाएँ हैं इतना ही नहीं एक ही देश में अनेक भाषाएँ हैं। प्रतिभा किसी जाती, धर्म, प्रांत, देश और भाषा की दीवार नहीं मानती। अन्य भाषा की प्रतिभाओं को पहचाने के लिए अनुवाद की जरूरत पडती है। प्राचीन भाषाओं के साहित्य को वर्तमान युग के पाठक अनुवाद के सहारे ही समझ पाते हैं। यह सही है कि एक सीमित क्षेत्र की भाषा में लिखे हुए उत्तम ग्रंथ व्यापक क्षेत्रों की भाषाओं में जब अनुदित होते हैं उन साहित्यकारों का सम्मान भी बढ़ता है। साहित्यिक विधाओं के साथ-साथ समाज विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान का भी अनुवाद आज धडल्ले से हो रहा है।

4) धर्म : प्रत्येक धर्म अपनी विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यवहार करता हैं। भारतवर्ष में हिंदू धर्म की भाषा संस्कृत रही है। इस्लाम धर्म की अरबी उर्दू, बौध्दों के धर्म ग्रंथ की भाषा पालि रही है। प्रत्येक धर्म के अनुयायी होते हैं। प्रत्येक धर्म अपने विचार और मूल्यों का प्रचार और प्रसार कर रहे हैं। अनेक दार्शनिक उपदेश, धार्मिक, सिध्दांत, प्रार्थना की पद्धतियाँ आदि अनेक कारणों के लिए धार्मिक ग्रंथ जैसे पुस्तकों का पठन-पाठन आदि कार्या में अनुवाद की अनिवार्यता होती है।

5) अंतरराष्ट्रीय संबंध : अंतरराष्ट्रीय संबध अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विभिन्न देशो के प्रतिनिधी संगठनो का संवाद मौखिक अनुवादक की सहाय्यता से ही होता है।

वार्तालाप को सही दिशा देने का कार्य अनुवादक के माध्यम से होता है। प्रत्येक देश का राजदूत अपने देश की भाषा अथवा अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करता है। परस्पर संवादो से मित्रता बढ़ती है। आंतरराष्ट्रीय संबध स्थिर करणे के लिए दूभाषियां अथवा अनुवादक का योगदान महत्वपूर्ण होता है।

6) प्रशासन क्षेत्र: यह अनुवाद का बहुत बडा तथा व्यापक क्षेत्र है। प्रशासन व्यवस्था के अनेक अंग तथा विभाग होते हैं। इन विभागों के बीच समन्वय निर्माण करना पडता है। केंद्रीय स्तर से लेकर विभिन्न अधिनस्थ विभागों से संपर्क स्थापित करना पड़ता है। कार्य का विवरण दूसरे प्रांतों को या केंद्र को पहुँचाना होता है तो वहाँ अनुवादकों की सहाय्यता लेनी पडती है।

7) सांस्कृतिक क्षेत्र : राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में संबंध स्थापित करने हेतु अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह तो संभव नहीं हैं कि हर व्यक्ति विभिन्न प्रांत और देश की भाषा समझे। सांस्कृतिक एकता स्थापित करने में अनुवाद की जरुरत होती हैं।

8) पर्यटन क्षेत्र : अनुवादक का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र पर्यटन क्षेत्र है। पर्यटन क्षेत्र कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रत्येक देश में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन करानेवाली एजेंन्सियाँ होती हैं। इन एजेंन्सियों में स्थानीय भूगोल, संस्कृति, सभ्यता और इतिहास की जानकारी रखनेवाले अनुवादक होते हैं। असल में पर्यटन क्षेत्र का सही विकास भिन्न भाषि यात्रियों के अवागमन से होता है और इन भाषियों के बीच अनुवादक सेतु का काम करता है।

9) जनसंचारीय क्षेत्र : जनसंचार माध्यम अनुवाद का सबसे बडा कार्यक्षेत्र है। समाचार पत्र-पत्रिकाएँ पुस्तके, पोस्ट और पैम्पलेट आदि मुद्रित माध्यम हैं। टेलिविजन, रेडियो फिल्म और नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में इंटरनेट प्रणाली, फॅक्स, ई-मेल, सेल्युलर फोन, पेजर और मोबाईल आदि माध्यम कार्यरत होते हैं। विभिन्न भाषाओं में निकलनेवाली खबरे अनूदित होकर छपती हैं या प्रसारित होती हैं।

10) कार्यालयीन क्षेत्र : हमारे देश में अनेक कार्यालय हैं। एक कार्यालय का संबंध दूसरे कार्यालय से आता रहता है। भारत में कार्यालयीन कामकाज हिंदी के साथ साथ अंग्रेजी में चलता है। अहिंदी भाषी तथा हिंदी भाषी प्रांतो के मध्य कार्यालयीन पत्राचार करते समय अनुवाद करना अनिवार्य है। अनेक विभागों में निचले स्तर, पर प्रादेशिक भाषा काम आती है। पंचायत और गाँवो के स्तर प्रादेशिक व्यवहार किया जाता है।

11) न्यायालय : प्रार्थी लोग, न्यायालय के कर्मचारी और वकील आदि न्यायालय के अंग होते हैं। आज़ादी के बाद न्यायालयों में प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया जाने लगा है। दस्तावेज भिन्न-भिन्न भाषाओं में होते हैं। उच्चतम न्यायालय में प्रादेशिक भाषा के कागज़ात का अनुवाद अंग्रेजी में करना पड़ता है।

12) संसदीय क्षेत्र : संसद में विभिन्न प्रांतों के सांसद सदस्य आते हैं। संसद में भारत के भाषा-भाषी सांसद होते हैं। जिन सांसदो को हिंदी ठीक ढंग से नही आती वे अपने विचार मातृभाषा में रख सकते हैं। कुछ सांसदो को अंग्रेजी आती हैं कुछ को नही। ऐसी स्थिति में अनुवादकों के द्वारा उनके विचारों को अनुदित करता पडता है।

वर्तमान युग में विकसित देशों की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक और प्रोद्योगिकीपरक प्रगति में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कृषि और चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में लिए नए-नए आविष्कारों और अनुसंधानों से जुडे रहने के लिए अनुवाद बहुत महत्वपूर्ण है। मार्केटिंग के क्षेत्र में अनुवादक को सदैव सजग एवं अपडेट रहना पडता है। जब दो भिन्न भाषा-भाषी आपसे में मिलते हैं तब उनको मिलाने का काम द्विभाषी ही कर सकता है। आज फिल्मों को हिंदीं में या अन्य भाषा में डबिंज करने कार्य तेजी से बढ़ा है। डिस्कवरी और नेशनल जियोग्राफी इस तरह के अनेक चैनल हिंदी में या अन्य भाषा में कार्यक्रम लेकर आये हैं। आजकाल मशीनी अनुवाद का प्रचलन भी बढ़ा है। अनेक क्षेत्रों में अनुवाद को व्यवसाय के रूप में अपनाया जाता है।

4.3.3 अनुवादक के गुण :

अनुवाद अशंत: कला, विज्ञान और कौशल भी है। अनुवाद कार्य अत्यंत कष्ट साध्य है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की बारिकियाँ समझते हुए मूल जैसा पुन: सृजन करनेवाला अच्छा अनुवादक होता है। जिस अनुवादक के पास अनुवाद करने की योग्यता होती है वही अनुवाद परिपूर्ण होता है। आज अनुवाद को पेट भरने के साधन के रूप में प्रतिष्ठा मिली है। आज युवक अनुवादक की योग्यता प्राप्त का अध्ययन और अनुसंधान द्वारा अच्छे अनुवादक बन जाते हैं तो उनके लिए रोजगार की कतिपय संभावनाएँ हैं। अनुवादक के गुणों के संदर्भ में विदवानों के विचारों का विश्लेषण करने पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अच्छा अनुवादक होने के लिए निम्नलिखित गुण होने चाहिए–

1) विषय का समुचित ज्ञान :

अनुवादक जिस कृति का अनुवाद कर रहा हो उस कृति का विषयगत ज्ञान उसे होना ही चाहिए। एक ही शब्द के अलग अलग अर्थ होते हैं। उदाहरण के लिए Post शब्द का अर्थ डाक ऐसा होता है तो दूसरा अर्थ प्रविष्ट या पद होता है। विषय के अनुसार शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं, इसलिए उचित अनुवाद के लिए विषय का ज्ञान उत्तम गुण माना जाता है। यदि कोई अनुवादक राजनीतिक उपन्यास का अनुवाद कर रहा है तो उसे राजनीति का सामान्य ज्ञान होना चाहिए।

2) स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा पर अधिकार :

अनुवादक का स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार होना चाहिए। भाषा पर अधिकार न होने से अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। अनुवादक को स्रोत एवं लक्ष्य भाषा की प्रकृति, व्याकरण, शैली, मुहावरें– कहावतें का ज्ञान होना महत्वपूर्ण होता है। दो भाषाओं का सम्यक ज्ञान न होने से अनुवाद असहज होता है।

3) मूल के प्रति निष्ठा :

इसे मूलनिष्ठता भी कहा जाता है। 'न कुछ छोडो, न कुछ जोडो की स्थिति अनुवाद में अनिवार्य होती है। अनुवाद जोखीम तथा परिश्रम भरा कर्म है। अनुदित पाठ में मूल पाठ को अपनी सभी विशेषताओं के साथ उतारना होता है। मूल के प्रति सदैव निष्ठावान रहना पडता है। मूल पाठ का आशय तथा उसकी शैली में बदलाव करने का अधिकार अनुवादक को नहीं होता है।

4) निरंतर अभ्यास :

अनुवाद प्रशिक्षण प्राप्त करने पर ही कोई अनुवादक सफल अनुवाद कर सकता है। प्रशिक्षण से कौशल को बनाए रखने और उसमें वृध्दी के लिए अनुवादक को अभ्यास की जरूरत होती है। अनुवाद अंशत: कला, विज्ञान और शिल्प भी है। कला, विज्ञान और शिल्प को जीवित रखने और उसमें सुधार लाने के लिए अभ्यास की निरंतर आवश्यकता होती है।

5) विवेकशीलता :

अनुवादक को अनुवाद करते समय विवेकशील और चतुर होना चाहिए। निर्णय की क्षमता किसी हद तक छोडना या जोडना है इसके निर्धारण हेतु विवेक की आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता है। स्रोत भाषा की सामग्री लक्ष्य भाषा में ढ़ालते समय जिम्मेदारी से काम लेना चाहिए। अनुवाद करते समय प्रेम घृणा और क्रोध से काम नहीं लेना चाहिए। तटस्थ रहकर अनुवादक को अनुवाद कर्म करना चाहिए। अनुवाद सफल करने हेतु अनुवादक ने अपनी प्रतिभा का प्रयोग करना चाहिए। डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में ''आदर्श अनुवाद सीरींज की वह सुई है जो सीरींज की दवा को ज्यों का त्यो मरीज के शरीर में पहुँचा देती है।'' अनुवादक सर्जक होता हैं किंतू मूल रचनाकार के विचारों पर उसे हावी नहीं होना है।

6) परिश्रमशीलता :

अनुवाद करना एक जोखिम तथा परिश्रम भरा कार्य है। निर्दोष अनुवाद करने के लिए अनुवादक को कडी साधना करती पड़ती है। अनुवाद करते समय विभिन्न संदर्भों की पहचान करना, परीक्षण करना, संशोधन करना, आनेवाली समस्याओं पर उपाय खोजना, विषयज्ञाता के साथ विर्मश करना और अनुवाद करना पड़ता है। अनुवादक की थोडी सी ढिलाई भी विधि और विज्ञान जैसी सामग्री के अनुवाद में नुकसान होता है।

7) परकाया प्रवेश :

अनुवाद को परकाया प्रवेश में निपुण होना, चाहिए। डॉ. जी गोपीनाथन ने अनुवाद को 'परकाया प्रवेश' की संज्ञा दी है। 'परकाया प्रवेश' यह असामान्य कार्य है। अनुवादक अपनी प्रतिभा के बलबुते पर सिर्फ भाषातंरण नही करता वह पुन:सृजन करता है। अनुवादक के पास भावयित्री और कारयित्री प्रतिभा होने के कारण ही स्रोत भाषा में लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप समायोजित कर व्यक्त करता है। अनुवादक एक साथ पाठक, आस्वादक, अध्येता और सृजक होता है।

8) बहुश्रुतता एवं बहुज्ञता :

बहुज्ञानी और बहुश्रुत अनुवादक के द्वारा ही सही अनुवाद हो सकता है। बहुश्रुतता और बहुज्ञता आज विशेषता नहीं अपितु अनिर्वायता बन गयी है। मनुष्य कितना भी ज्ञानी हो तो वह सभी ज्ञान शाखाओं का ज्ञाता नहीं होता है। सामाजिक शास्त्र और विज्ञान की विविध शाखाएँ एक दूसरे के क्षेत्र में दखल अंदाजी कर रही हैं। साहित्यिक अनुवाद में देश, काल, शास्त्र, लोकव्यवहार साथ ही साथ राजनैतिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक परिवेश की गहरी समझ महत्वपूर्ण है। विषय की गहरी समझ न हो तो वह शब्दानुवाद अनुवाद प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण सीढी है और बहुश्रुत-बहुज्ञानी उसकी अनिर्वायता है आज के युग में तो बहुश्रुत, एंव बहुज्ञानी होना लाभदायी हो सकता है।

9) सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भो का ज्ञान :

किसी साहित्यिक विधा का अनुवाद करना हो तो अनुवादक को सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भो का ज्ञान होना जरूरी है। प्रत्येक भाषा-भाषियों में सामाजिक त्यौहार, खान-पान, विरासत, वेशभूषा, संस्कृति, रूढी-परंपराऐं आदि बातें सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भो के साथ जुडी हुई, होती है। इस संदर्भ का ज्ञान अनुवादक को हो तो बेहतरीन अनुवाद हो सकता है। इस ज्ञान के अभाव में अनुवाद गलत होगा और वही अनुवाद गलत सूचना देने से बडी हानी हो सकती है।

10) भाषा वैज्ञानिक ज्ञान :

अच्छे अनुवादक को स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के साथ ही भाषाविज्ञान का ज्ञान होना चाहिए। अनुवादक को भाषा की प्रकृति ध्वनि-विज्ञान, अर्थ-विज्ञान, रूप-विज्ञान वाक्य-विज्ञान और कोशविज्ञान आदि का ज्ञान भाषाओं के संदर्भ में होना आवश्यक है।

11) श्रद्‌धा एवं निष्ठा :

अनुवाद कर्म में श्रद्‌धा और निष्ठा का स्थान सर्वोपरी है। श्रध्दा और निष्ठा के बिना बेहतरीन अनुवाद नहीं हो सकता है। बोझ समझकर किया हुआ अनुवाद निर्जीव अनुवाद होगा। डॉ. आलोककुमार रस्तोगी के शब्दों में, ''अनुवाद के प्रति लोगों की श्रद्‌धा बहुत कम है। अनुवादक के मन में इस कार्य के प्रति श्रद्‌धा होनी आवश्यक है। कोरे ज्ञान से किया अनुवाद अधुरा लगेगा। श्रद्‌धा के कारण मूल सामग्री की समानता सुरक्षित रहती है।'' यह सत्य है कि कोई भी कार्य निष्ठा से करने से उसमें सफलाता मिलाती है। अनुवाद कार्म में जितनी निष्ठा होगी उतना अनुवाद श्रेष्ठ होगा।

12) तटस्थता :

तटस्थता अनुवादक का आवश्यक गुण है। किसी रचना का सही अनुवाद करना हो तो अनुवादक को तटस्थ रहना चाहिए। अनुवाद मूल के समान तथा विश्‍वसनीय बनने में मदद मिलती है। वस्तु स्थिति का ज्ञान कराने के लिए तटस्थता आवश्यक होती है।

13) लोक कल्याण की भावना :

सच्चे अर्थो में अनुवादक में लोककल्याणकारी सकारात्मक भावना होना नितांत जरूरी है। दो भाषाओं को जोडने का कार्य अनुवादक करता है। अनुवादक का सही कार्य जोडने का होता है। अनुवादक समष्टी के हित में अपना कार्य करता है। अनुवाद कार्य को सुचारू ढंग से सफलतापूर्णक पूर्ण करने के लिए अनुवादक को स्त्रोत भाषा का ज्ञान, लक्ष्यभाषा पर अधिकार होता है। अनुवादक अनुदित रचना लक्ष्य भाषा-भाषी पाठकों के लिए उपलब्ध करा देता है। प्रशासकीय कार्यालयों में अनुवादक राष्ट्रीय एकता तथा देश की राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार का कार्य करता रहता है।

14) विश्लेषण क्षमता :

अनुवादक स्त्रोत सामग्री का सुचारू रूप से विश्लेषण करता है। मूलत: अनुवाद की सारी प्रक्रिया विश्लेषणात्मक होती है। विषय और शैली के आधार पर यह विश्लेषण होता है। उचित शब्दों का चयन कर विषय के अनुसार शैली का प्रयोग किया जाता है। अनुवादक विश्लेषण के द्वारा मूल सामग्री की जाँच परख कर उसका पुनसृर्जक करने का कार्य करता है।

15) कोश एवं पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान :

स्पष्ट है कि अनुवाद करते समय कोश एंव पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करना पडना है। अनुवादक को कोश तथा पारिभाषिक शब्दावली में शब्द शीघ्रता से ढूंढने में सफलता मिलती है। तब समाधान मिलता है। असल में पारिभाषिक शब्द का ज्ञान न होने से बेहतरीन अनुवाद नहीं हो सकता। अच्छा अनुवाद होने के लिए मुहावरें-कहावतें कोश, शब्दकोश, ज्ञानकोश, विश्वकोश, चरित्रकोश और संस्कृतिकोश का ज्ञान आवश्यक होता है। संगणक, विज्ञान एवं तकनीकी, बैंकं और प्रशासकीय कार्यालय आदि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली भिन्न होती है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कत: कहा जा सकता है कि अनुवादक के गुणों पर अनुवाद कार्य की सफलता अवलंबित होती है।

4.3.4. प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार :

अनुवाद की उपयोगिता बहुआयामी है। अनुवाद आज सारे जगत में एक बहुत बडा उद्योग बन चुका है। अनुवाद के कारण भाषा समृध्द होती है। विश्व का ज्ञान प्राप्त करना है तो अनुवाद के सिवा कोई चारा नहीं है। अनुवाद के कारण दुनिया की संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता रहता है। अनुवाद की प्रकृति अनुवाद के वर्गीकरण का महत्वपूर्ण आधार है। अनुवाद के मुख्य आधार चार हैं- क) अनुवाद के गद्य-पद्य होने के आधार पर ख) विषय ग) साहित्यिक विधा घ) अनुवाद प्रकृति। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने गद्य-पद्य, साहित्य विधा, अनुवाद विषय तथा अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के लगभग अठारह भेद किये हैं।

अध्ययन के लिए दिए गए प्रकार निम्नलिखित हैं -

1) शब्दानुवाद

2) भावानुवाद

3) व्याख्यानुवाद

4) आदर्श अनुवाद

1) शब्दानुवाद :

इसमें अनुवादक का ध्यान मूल कृति के प्रत्येक शब्द के अनुवाद पर केंद्रीत होता है। शब्दानुवाद यह शब्द 'शब्द + अनुवाद' से बना है। एक से अधिक प्रकार के अनुवादों के लिए शब्दानुवाद का प्रयोग किया जाता है। प्रकृति के अनुसार शब्दानुवाद के मुख्य उपभेद चार किए गए हैं–

क) शब्द – प्रतिशब्द अनुवाद

ख) शब्दक्रम मुक्त शब्दानुवाद

ग) शाब्दिक शब्दानुवाद

घ) वाक्य प्रतिवाक्य अनुवाद

क) शब्द–प्रतिशब्द अनुवाद :

इसमें स्त्रोत भाषा के वाक्यों में शब्द का जो क्रम होता है उसी क्रम में अनुवाद किया जाता है। जैसे –

He is going to Home

वह है जा रहा घर

ख) शब्दक्रम मुक्त शब्दानुवाद –

प्रत्येक भाषा के शब्दक्रम का ढाँचा अलग अलग होता है। शब्दक्रम मुक्त शब्दानुवाद में मूलपाठ के प्रत्येक शब्द पर ध्यान दिया जाता है। स्त्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द का अनुवाद लक्ष्य भाषा की शब्द क्रम व्यवस्था के अनुसार किया जाता है। जैसे –

It is an Interesting Point

यह एक रोचक बिंदू है।

ग) शाब्दिक अनुवाद :

इस अनुवाद में स्त्रोत भाषा के शब्द, उपवाक्य, वाक्य, मुहावरें और कहावतो के पर्याय दिए जाते हैं। पर्याय देते समय भाषा की व्यवस्था पर ध्यान दिया जाता है। विज्ञान के साथ साथ गणित, संगीत, विधि और ज्योतिष जैसे तथ्यात्मक एवं सूचना परक विषयों के अनुवाद प्रायः शाब्दिक अनुवाद होते हैं। इस अनुवाद में संक्षेप, विस्तार हेरफेर और व्याख्या के लिए कोई योग नहीं होता है।

घ) वाक्य प्रतिवाक्य अनुवाद :

स्रोत भाषा के प्रत्येक वाक्य के लिए लक्ष्य भाषा में वाक्य रखना याने वाक्य प्रतिवाक्य अनुवाद कहा जाता है। यह अनुवाद सहज रूप से नहीं होता है।

2) भावानुवाद :

भावानुवाद में मूल रचना के भाव को पूर्णत: अनुदित रचना में अभिव्यक्त किया जाता है। इस अनुवाद में मूल के शब्द, वाक्य और वाक्यांश आदि पर ध्यान न देकर भाव, अर्थ और विचार पर संचार ही भावानुवाद की मुख्य विशेषता है। सच्चे अर्थों में अनुवादक के व्यक्तित्व की संपन्नता का परिचय होता है। भावानुवाद एकाधिक प्रकार का हो सकता है। मौलिक रचना बन जाती है। आमतौर पर साहित्यिक अनुवाद भावानुवाद होते हैं। स्रोत सामग्री सूक्ष्म भावों वाली हो तो उसका भावानुवाद करते हैं।

भावानुवाद की महत्वपूर्ण खासियत यह है कि मूल रचनाकार के द्वारा लाए गए सौंदर्य की अनुवाद में पूर्ण रक्षा की जा सकती है। कारयित्री प्रतिभावाले लेखक भावानुवाद करते है। अनुवाद की यह मान्यता है'' सामान्यत: मूल सामग्री यदि सूक्ष्म भावों वाली है तो उसका भावानुवाद करते हैं और यदि वह तथ्यात्मक, वैज्ञानिक या प्रधान है तो उसका शब्दानुवाद करते हैं। भावानुवाद को पुन:सृजन कहा जाता है। रचनात्क योग्यता का अनुवादक ही इस प्रकार का अनुवाद कर सकता है।

व्याख्यानुवाद :

व्याख्यानुवाद को भाषानुवाद या टीकानुवाद भी कहा जा सकता है। इसमें मूल सामग्री की व्याख्या की जाती है। व्याख्यानुवाद में अनुवादक को मूल पाठ के स्पष्टीकरण के साथ अनुवाद करना पडता है। कतिपय अनुवदाक मूल बात का अनुवाद करते समय उसके प्रत्येक शब्द तथा पद के सिवा व्याख्या भी कर देते हैं। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का 'गीता रहस्य' इसी प्रकार के अनुवाद का उदाहरण है।

व्याख्यानुवाद अनुवाद के अध्ययन चिंतन मनन से संपन्न होने के कारण कृति में मौलिकता आ जाती है। यह भी सच है कि मूल पाठ की व्याख्या के लिए अनुवादक को विषय का ज्ञाता, चिंतक और भाषाकार होना ही पडता है। यह अनुवादक व्याख्याकार होने के कारण वह मूल रचना की बातें स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से उद्धरण, प्रमाण या उदाहरण भी जोड सकता।

4) आदर्श अनुवाद :

आदर्श अनुवाद को सहजानुवाद भी कहा जाता हैं। इसका कोई प्रकार न होकर बेहतरीन अनुवाद के स्वरूप का प्रतिबिंब है। मूल भाषा और लक्ष्य भाषा के विषय वस्तु में अधिकतम साम्य हो जिससे कि लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ती, स्रोतभाषा की ही अभिव्यक्ती लगे इस तरह दोनों के विषयवस्तु में नजदिक का संबंध होना अनुवाद कहलाता है। पाठक को मूल रचना के समान आनंद लेने के लिए अनुवादक अनुवाद में सरलता प्रवाहमयता इतर सौंदर्य का प्रयोग करता है। आदर्श अनुवाद में स्रोत सामग्री के भाव, अर्थ, विचार, कथा, शिल्प की समतुल्यता निकटता की रक्षा और सामाजिक संदर्भ की रक्षा करते हुए अनुवादक मूल पाठ के गुण-दोषों को समान रूप से संप्रेषित करता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, ''आदर्श अनुवादक की वह सुई है, 'जो सिरींज की दवा को ज्यों का त्यों मरीज' के शरीर में पहुंचा देती है।'' जिस प्रकार

बोतल से इंजेंक्शन की दवा लेकर रोगी के शरीर में ज्यों की त्यों पहुंचा देती है, उसी प्रकार स्रोतभाषा के मूल विषयवस्तु को लक्ष्य भाषा में ज्यों का त्यों पहुँचाने वाला अनुवादक ही आदर्श अनुवादक होता है।

इस अनुवाद में रचनाकार का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप में झलकता है। इस अनुवाद में अनुवादक की भूमिका तटस्थ दर्शक की तरह होती है। अनुवाद करते समय अनुवादक लक्ष्य भाषा की सामग्री में न कुछ जोडता है, और न ही कुछ छोडता है।

4.4 सारांश :

1) इक्कीसवीं सदी को अनुवाद युग कहा जाता है। अनुवाद के माध्यम से कोई भी किसी भी कोने में बैठकर देश-विदेश में उपलब्ध ज्ञान और सूचनाओं का बडी सरलता से आदान-प्रदान कर सकता है।
2) अनुवाद में स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा और अनुवादक का महत्व होता है।
3) बहुभाषी समाज में अनुवाद की नितांत आवश्यकता होती है। अनुवाद के बारे में विद्वानों मे भिन्न भिन्न मत हैं।
4) वर्तमान युग में मानव विकास में अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान है। अनुवादक सतर्कता बरतकर अनुवाद करता है तो बढिया अनुवाद हो सकता है।
5) स्रोत भाषा के चिह्नों को लक्ष्य भाषा के नजदिक के चिह्नों में रखकर उस भाषा से अपरिचित व्यक्ति को भी उस भाषा के ज्ञाता के समान आनंदानुभूति कराना ही अनुवाद का प्रयोजन है।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

खाई - खंदक

चुनौती - हिम्मत करना

रूपांतरित - परिवर्तित

अनुवादक - जो अनुवाद का काम करता है।

अविष्कार - खोज

बलबूता - सहयोग

प्रार्थी - याचक

प्रयोजन - मकसद

उत्पत्ति - आविर्भाव, जन्म

सर्वेक्षण - दृष्टिपात

विश्व - जगत

अनुसंधान - शोध

समष्टी - समाज

प्रविधि - तरीका

चिहन -प्रतीक

अन्तरण - एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में ले जाना।

अनुवाद - पुन:कथता एक भाषा की सामग्री दूसरी भाषा में तो जाना।

दुभाषिया - दो भिन्न भाषियों के बीच सम्प्रेषण कर्म

लक्ष्य भाषा - जिस भाषा में अनुवाद किया जाना है।

स्त्रोत भाषा - जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है।

4.6 स्वाध्याय :

दीर्घोत्तरी प्रश्न –

1) अनुवाद की परिभाषा देकर अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
2) अनुवाद क्षेत्र को विषद कीजिए।
3) प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों का संक्षेप में परिचय दीजिए।
4) सफल अनुवाद के लिए आवश्यक अनुवादक के गुण स्पष्ट कीजिए।

4.7 क्षेत्रीय कार्य :

1) अनुवाद की विभिन्न परिभाषाओं को संग्रहीत कीजिए।
2) अनुवाद की प्रक्रिया को समझकर अपनी मन चाहे रचना का अनुवाद कीजिए।
3) अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के पाठों का संकलन कर उनकी विशेषताएँ निश्चित कीजिए।
4) किसी अनुवादक से साक्षात्कार द्वारा अनुवाद प्रक्रिया को समझने का प्रयास कीजिए।
5) किसी अनुवादित पाठ को लेकर उसकी स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा और पाठ के आधार पर उसका प्रकार निर्धारण कीजिए।

4.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए –

1) अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2) अनुवाद की अपधारणा – प्रा. निशिकांत ठकार
3) अनुवाद चिंतन – डॉ. अर्जुन चव्हाण
4) अनुवाद कला – डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
5) अनुवाद अपधारणा और अनुप्रयोग – डॉ. चंद्रभान रावत / डॉ. दिलीप सिंह
6) अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा – डॉ. सुरेश कुमार
7) अनुवाद स्वरूप एवं सिद्धांत – डॉ. के. पी. शाह
8) अनुवाद मीडिया – डॉ कृष्णकुमार रत्तू
9) अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. जी गोपनाथन
10) अनुवाद संवेदना और सरोकार – डॉ. सुरेश सिहल

❑❑❑